www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 11 ■ 1-15 अप्रैल, 2011

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❒ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❒ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

❒ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

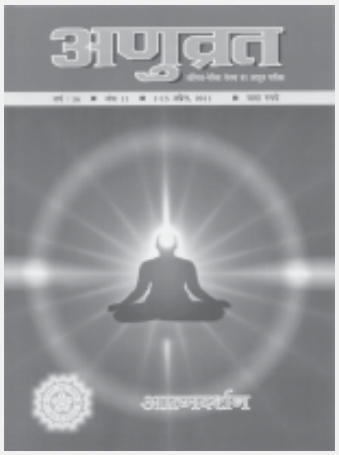

◆ आंतरिक पर्यावरण का समाधान	*आचार्य तुलसी*	3
◆ प्रश्न है सीख देने वालों का	*आचार्य महाप्रज्ञ*	5
◆ आत्मदर्शन	*आचार्य महाश्रमण*	7
◆ बनते बिगड़ते विवाह सम्बन्ध	*बिरदीचन्द पोखरना*	9
◆ महावीर जयंती का सारतत्त्व	*हुकमचंद सोगानी*	11
◆ महंगाई का दैत्य	*डॉ. हीरालाल छाजेड़*	12
◆ सन्तान के प्रति हमारा दायित्व	*गिरिजा 'सुधा'*	13
◆ गांवों की दयनीय दशा	*मुनि जयंतकुमार*	15
◆ कमजोर करती है व्यर्थ की तुलना	*सत्यनारायण भटनागर*	16
◆ सहिष्णुता अहिंसा की जननी	*रूपनारायण काबरा*	18
◆ स्लम बनते शहर	*आशीष वशिष्ठ*	20
◆ कमर दर्द और प्रेक्षा चिकित्सा :1:	*मुनि किशनलाल*	22
◆ मृत्युदंड के औचित्य पर प्रश्न चिह्न	*प्रो. योगेशचन्द्र शर्मा*	24
◆ अणुव्रत का अनुमोदन	*मुनि राकेशकुमार*	26
◆ कहां गयी हमारी आत्मीयता	*सुरेश 'आनन्द'*	28
◆ सियाराम कबहूँ सुध लैहो?	*द्वारकेश भारद्वाज*	29
◆ बेहतर मूल्यों की तलाश है साहित्य	*जसविंदर शर्मा*	30

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ राष्ट्र चिंतन	8
◆ पाठक दृष्टि	10
◆ झांकी है हिन्दुस्तान की	19
◆ कविता	27
◆ दोहे	31
◆ अणुव्रत आंदोलन	32-40

www.terapanthinfo.com

खिसकती धरती का खौफ

11 मार्च 2011 को दोपहर 2.45 पर 24.4 किमी. नीचे प्रशांत महासागर में धरती खिसकी और दस सैकेंड में जापान देश को इसका खौफ झेलना पड़ा जिसका एक भाग बिखर गया। 8.9 की तीव्रता से उठे भूकंप से समुद्र में 13 मीटर ऊंची सुनामी लहरें उठीं और इस जलजले में कागज की तरह घर, वाहन, रेत, जहाज, जिन्दगी सभी बह गये। भारी तबाही और प्राकृतिक आपदा का यह ऐसा विकराल दृश्य था जिसके सामने विकास के सभी अस्थि-पंजर ढह गये।

विकास एवं सुख-सुविधा के नाम पर बीसवीं सदी में मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों का जिस तेजी से दोहन किया, उसी का परिणाम है बढ़ते भूकम्प के घटनाक्रम, सुनामी की विनाशक लहरें और जलजला। प्रकृति ने एक बार नहीं सैकड़ों बार कहर ढाहकर हमारे विकास कार्यों की गति को न सिर्फ मंद किया है वरन् प्राणी जगत को झकझोरा भी है। तबाही के ऐसे खौफनाक मंजर को देखने और भोगने के बाद भी हम वनों को काटे जा रहे हैं, पहाड़ों को खोदे जा रहे हैं, भू-संपदा का अत्यधिक दोहन कर रहे हैं अर्थात् पर्यावरण के साथ जी भर खिलवाड़ कर रहे हैं। इस पर्यावरणीय छेड़छाड़ और असंतुलन के कारण धरती माँ का तापमान बढ़ रहा है, ग्लेशियर पिंघल रहे हैं, मौसम बदल रहा है और प्राकृतिक आपदाएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। पहले सुनामी 100 से 150 वर्षों में एक बार आती थी, लेकिन अब जल्दी आ रही हैं। धरती की यह बदलती चाल क्या महाविनाश की आहट है?

इसी संदर्भ में आचार्य महाप्रज्ञ की एक कथा है ''एक कुम्हार था। उसकी दो पुत्रियां थीं। एक का विवाह किसान के घर में हुआ और दूसरी का विवाह कुम्हार के घर में। दोनों पुत्रियां अपनी-अपनी ससुराल में प्रसन्न थीं। एक बार कुम्हार पुत्रियों से मिलने गया। दोनों एक ही गांव में थीं। पहले वह किसान के घर ब्याही पुत्री के पास पहुंचा। कुशल-क्षेम पूछी, बेटी को उदास देखकर बोला, 'बेटी! उदास क्यों है? बेटी ने कहा, पिताजी! खेती का समय आ गया है। वर्षा हो नहीं रही है। आकाश में बादल कहीं नजर नहीं आते। वर्षा नहीं होगी तो सूखा पड़ जाएगा। यही चिंता हमें सता रही है। आप प्रभु से वर्षा की प्रार्थना करें।

कुम्हार वहां से चला और दूसरी बेटी के घर पहुंचा। कुशल-क्षेम पूछी। बेटी बोली पिताजी! और तो सब ठीक है। वर्षा का मौसम है। आवा अभी पक रहा है। सारे बर्तन आवे में डाले हुए हैं। आमदनी का केवल यही जरिया है। यदि वर्षा हो गई तो आवा गुड़-गोबर हो जाएगा। आप प्रभु से प्रार्थना करें कि जब तक हमारा आवा पक न जाए, तब तक वर्षा न हो।' कुम्हार अब दुविधा में पड़ गया। उसने सोचा वर्षा होने की प्रार्थना करूं या न होने की प्रार्थना करूं? दोनों लड़कियों के दो विरोधी हित हैं। एक का हित है वर्षा के होने में, जबकि दूसरी का हित है वर्षा के न होने में। आखिर में, कुम्हार ने दोनों पुत्रियों को समझाकर सामंजस्य स्थापित किया।

विकास की पगडंडियां भरते हुए मनुष्य को प्रकृति के साथ भी सामंजस्य स्थापित करना होगा कि पृथ्वी सुरक्षित रहे। यदि पृथ्वी ही नहीं बची तो विकास के मायने क्या रह जायेंगे? भूगर्भीय वैज्ञानिकों एवं सभी सरकारों को पर्यावरण चक्र में आये बदलाव को गंभीरता से लेकर ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते प्रभाव को रोकना होगा, ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना होगा, ताकि ग्लेशियर न पिघले और पृथ्वी का तापमान न बढ़े।

जापान के विनाशकारी भूकंप से धरती अपनी धुरी से 4 इंच खिसक गयी है जो चेतावनी है कि खिसकती धरती के संदेश को हम सुनें, उसे अनदेखा न करें और धरती को बचाने का हर संभव प्रयास करें। इसी के साथ द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भूकंप, सुनामी, आग और परमाणु विकिरण का कहर झेल रहे जापान के साथ हम (पूरी दुनिया) खड़े होकर मानवता को बचाने का संकल्प करें।

● डॉ. महेन्द्र कर्णावट

www.terapanthinfo.com

आंतरिक पर्यावरण का समाधान

आचार्य तुलसी

पर्यावरण इस युग का बहुचर्चित शब्द है। पर्यावरण का अर्थ है परिवेश या वातवरण। इसके दो रूप बनते हैं बाह्य और आन्तरिक। पर्यावरण जितना शुद्ध होता है, मनुष्य उतना ही सुखी रहता है। पर्यावरण का प्रदूषण सुख के लिए खतरा है। प्रकृति के असंतुलन से बाह्य वातावरण बिगड़ता है। जीवन-मूल्यों के असंतुलन से आंतरिक पर्यावरण दूषित होता है। बाह्य पर्यावरण की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों एवं सेमिनारों का आयोजन हो रहा है। आन्तरिक पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए भी सोचना आवश्यक है। इस विषय को अनदेखा करने से अनेक प्रकार की समस्याएं बढ़ रही हैं। इसलिए आन्तरिक पर्यावरण की सुरक्षा के उपायों पर चर्चा की जा रही है।

अद्भुत है यह पर्यावरण। पहले इसका क्षेत्र सीमित था। हमने इसको विस्तार दिया और प्रदूषण से बचाने का प्रयास किया। यह प्रयास हमें निरंतर चालू रखना है। अन्यथा इसके प्रदूषण से होने वाले दुष्परिणामों को झेलने के लिए तैयार रहना होगा। इस पर्यावरण को बचाने वाला पहला सुरक्षा-कवच है वैराग्य। आचार्य सोमप्रभ ने सिन्दूरप्रकर नामक काव्य में लिखा है ''अर्हतों की वंदना, सच्चे गुरु की सेवा, कष्टसाध्य तपस्या, गुणवान लोगों की उपासना, अरण्यवास और इन्द्रिय-विजय की विद्या तभी फलवान या कल्याणकारी हो सकती है, जब क्रूर अपराधों को क्षय करने में निफण वैराग्य की अन्तःकरण में स्फुरणा हो। वैराग्य के अभाव में ये तत्त्व वैसे ही निष्फल हो जाते हैं, जैसे ऊसर धरती में पानी का सिंचन।

हमारे पर्यावरण की सुरक्षा का दूसरा कवच है संयम। संयम का अर्थ है निरोध और शोधन। असत् में प्रवृत्त इन्द्रियों और मन को रोकना निरोध है। उसको सत् में प्रवृत्त करना शोधन है। संयम खाने-पीने का होता है तो वाणी और चिंतन का भी होता है। वाणी का संयम न रहने से ध्वनि-प्रदूषण बढ़ता है। चिंतन का असंयम तनाव को जन्म देता है। तनाव व्यक्ति को असंतुलित बनाता है। असंतुलन की स्थिति में न तो वह स्वयं शांत रह सकता है और न दूसरों को शांत रहने देता है। इसीलिए जीवन में संयम की मूल्यवत्ता स्वीकार कर मैंने एक पद्य कहा है

हाथ संयम पांव संयम खाद्य संयम आद्य हो,
दृष्टि संयम वचन संयम आत्म संयम साध्य हो।
सब तरह सोचें विचारें संयमः खलु जीवनम्,
प्रेम से बोले कि प्यारे! संयमः खलु जीवनम्।।

पर्यावरण के लिए सबसे बड़ा खतरा है अनुशासनहीनता और मर्यादाहीनता। इस खतरे से बचने के लिए सबको सावधान रहना है। सावधानी हटी और दुर्घटना घटी, यह बात केवल सड़क पथ पार करने पर ही लागू नहीं है। जीवन के राजपथ पर भी सजगता नहीं रही तो पर्यावरणीय क्षति को कोई रोक नहीं पायेगा। वह हो गई तो फिर बचेगा ही क्या? इस बिन्दु पर पहुंच कर मनुष्य पर्यावरण के साथ जीना सीखें।

संगठन आन्तरिक पर्यावरण की सुरक्षा का तीसरा कवच है। साधना के क्षेत्र में व्यक्ति का महत्त्व होता है, पर संगठन का महत्त्व भी कम नहीं है। संगठन से साधना में सुविधा रहती है। उसमें परिष्कार और निखार की संभावना रहती है। 'संघो महाणुभावो एत्थ वसंताण निज्जरा विउला' संघ का प्रभाव अनिर्वचनीय होता है। संघ में रहने वाले साधक विफल निर्जरा के भागी होते हैं। संघ में साधना की कसौटियां होती रहती हैं। इससे साधक स्वयं को परख सकता है। पर यह सब तभी संभव है, जब संगठन सुदृढ़ हो। फष्ट संगठन के अभाव में सामूहिक साधना करने वाले नयी-नयी समस्या उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए संगठन पक्ष को भी गौण नहीं किया जा सकता।

अनुशासन या मर्यादा सुरक्षा का चौथा कवच है। मर्यादा का अर्थ है सीमा। सीमा का अतिक्रमण किसी भी स्थिति में वांछनीय नहीं है। जो सीमा को तोड़ता है, उसे उसका फल भी भोगना पड़ता है। जो सीमा में रहता है, वह संघ के पर्यावरण को शुद्ध रखता है। जो व्यक्ति संघ की मर्यादाओं का सम्मान नहीं करता, वह संघ का सम्मान नहीं करता। जो व्यक्ति संघ के एक व्यक्ति की प्रशंसा या निन्दा करता है, वह पूरे संघ की प्रशंसा या निन्दा का जिम्मेदार बन जाता है। संघ को तेजस्वी और यशस्वी बनाने के लिए संघ से जुड़े हुए व्यक्तियों को तेजस्वी और यशस्वी बनाना जरूरी है। संघ की प्रभावना में साधु-साध्वियों का योग रहता है और प्रभावशाली संघ की शरण में आने से साधना में सहयोग मिलता है। यह सब तभी संभव है, जब संघीय अनुशासन प्राणवान हो।

आन्तरिक पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सर्वाधिक उपयोगी कवच है जागरूकता। जागरूकता के अभाव में सुरक्षा की चिन्ता असुरक्षा ही निष्पन्न करेगी। मनुष्य खतरों के बीच में जीता है। साधक के जीवन में भी खतरों की संभावना समाप्त नहीं हो जाती। उसके सामने सबसे बड़ा खतरा है प्रमाद। प्रमाद की उपस्थिति में श्रामण्य की सुरक्षा नहीं हो सकती। श्रामण्य को सुरक्षित रखना है तो हर क्षण जागरूक रहना होगा। समणोऽहं मैं समण हूं, इस वाक्य की सतत स्मृति से प्रमाद के दरवाजों को बन्द किया जा सकता है। जिस साधक को अपने साधक होने का भी भान न हो, वह साधना के क्षेत्र में जागरूक कैसे रहेगा? जागरूकता का अर्थ है संभावित खतरों से बचाव के लिए उपायों की खोज। इस खोज में संलग्न

www.terapanthinfo.com

साधक अप्रमाद रूप प्रहरी को कभी सोने का अवसर नहीं देता।

विश्वविद्यालय की परीक्षा में उत्तीर्ण एक युवक कबीर के पास पहुंचा। उसका अध्ययन पूरा हो चुका था। उसे नये जीवन में प्रवेश पाना था, किन्तु उसके सामने दिशा स्पष्ट नहीं थी। इसलिए वह किसी अनुभवी व्यक्ति से परामर्श लेना चाहता था। अनुभवी व्यक्ति की खोज करते-करते उसकी मुलाकात कबीर से हो गयी। कबीर ने उसका परिचय और आने का प्रयोजन पूछा। वह बोला 'बाबा। पढ़ाई पूरी हो गयी। अब क्या करूं? कुछ लोग नौकरी करने का सुझाव दे रहे हैं। कुछ मित्र मुझे शादी करने के लिए बाध्य कर रहे हैं। और कुछ लोगों का कहना है कि अपने पैरों पर खड़ा होने से पहले मैं इस झंझट में नहीं जाऊं। समाजसेवा का आकर्षण भी मेरे सामने है। कभी-कभी आपकी तरह संत बनने का सपना भी देखता हूं। मैं अब तक तय नहीं कर पाया हूं मुझे क्या करना चाहिए। इसलिए आपका मार्गदर्शन लेने यहां आया हूं।'

कबीर उस युवक को एक कुएं पर ले गया। वहां महिलाओं की भीड़ थी। कुछ महिलाएं कुएं से पानी निकाल रही थीं। कुछ आपस में बतिया रही थीं। कुछ महिलाएं पानी से भरे दो-दो घड़े सिर पर रखकर बड़ी मस्ती से चल रही थीं। युवक को जाने की जल्दी थी। उसने कबीर से कहा 'बाबा मेरे लिए आपका क्या निर्देश है?' कबीर बोला 'तुम इन पनिहारिनों को देख रहे हो। ये कुछ भी करें हैं, पर इनका ध्यान अपने सिर पर रखे हुए घड़ों पर है। ये बात करें, चलें या हंसे, इनके मन-मस्तिष्क से घड़े नहीं निकल पाते। तुम घड़ों के स्थान पर अपने भीतर विराजित आत्मा या 'परमात्मा' ईश्वर को स्थापित कर लो। तुम कुछ भी करो, ईश्वर को मत भूलना। ईश्वर की स्मृति रहेगी तो जीवन में निश्चित रूप से सफल बनोगे।' युवक को दिशा मिल गयी। वह आश्वस्त होकर चला गया।

साधु बनना कठिन काम है। संसार के सारे आकर्षण छूटते हैं, तब व्यक्ति साधु बनता है। साधु बनने से भी कठिन काम है साधुत्व की सतत स्मृति। मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह कठिन काम के नाम से भय खाता है, विचलित हो जाता है। मेरा यह विश्वास है कि व्यक्ति के पास दृढ़ संकल्प-शक्ति हो तो वह कठिन से कठिन काम भी आसानी से कर सकता है। हमारे संघ की विकास-यात्रा हमारे सामने है। केवल छह दशकों के इतिहास का लेखा-जोखा किया जाये तो लगता है कि संघ कहां से कहां पहुंच गया। इस यात्रा में कितने उतार-चढ़ाव और कितने बदलाव आए है। एक के बाद एक कितने पड़ाव पार किए। हर नये पड़ाव की ओर प्रस्थान के समय हमारा उद्देश्य बहुत अच्छा था। उद्देश्य के अनुरूप हमने विकास किया है, पर उसके साथ कुछ कमजोरियां भी बढ़ी हैं। मेघ से पानी बरसता है तो बिजलियां भी कड़कती हैं। दीये से प्रकाश मिलता है तो कालिमा भी आती है। विकास होता है तो उसके साथ कुछ खतरे भी बढ़ते हैं। बिजली की कड़कड़ाहट के लिए मेघ नहीं बरसता। कालिमा के लिए दीया नहीं जलता। इसी प्रकार खतरों या कमजोरियों के लिए विकास नहीं किया जाता बिजली के भय से मेघ को बरसने से नहीं रोका जा सकता। कालिमा के भय से दीये को बुझाया नहीं जाता। यही बात विकास पर लागू है। कमजोरियों की संभावना से विकास के नये आयामों को बंद नहीं किया जा सकता। किन्तु उसके साथ कमजोरियों का प्रवेश न हो, इसके लिए सावधानी की अपेक्षा है। ऐसा होने से ही पर्यावरण शुद्ध रह पायेगा।

विधाता ने सृष्टि का निर्माण किया। उसके मन में अपने द्वारा निर्मित सृष्टि को देखने का संकल्प जागा। वह धरती पर आया। गांव के बाहर एक पहाड़ के पास वह घूम रहा था। उसने देखा कि वहां एक किसान हाथ में कुल्हाड़ी लिये पहाड़ को तोड़ने में लगा है। पूरे जोश-खरोश के साथ उसे पहाड़ तोड़ते देख विधाता ने पूछा 'क्या कर रहे हो?' किसान ने विधाता की ओर नजर उठाये बिना ही उत्तर दिया 'दीखता नहीं है क्या, पहाड़ तोड़ रहा हूं।' विधाता का अगला प्रश्न था 'भाई इस बेचारे पहाड़ ने तेरा क्या बिगाड़ा है? इसे क्यों तोड़ रहे हो?' किसान थोड़ा उत्तेजित होकर बोला 'इसने मेरा क्या नहीं बिगाड़ा? तन कर खड़ा हो गया। बादल आते हैं, इससे टकरा कर लौट जाते हैं। मेरे खेत में पानी नहीं बरसता। यह धूप को भी रोक देता है। मैंने दृढ़ निश्चय किया है कि इसे तोड़कर ही सांस लूंगा?'

विधाता आगे बढ़ा। उसने देखा कि पहाड़ रो रहा है। विधाता को देखते ही वह गिड़गिड़ाकर बोला 'मुझे इस किसान से बचाओ।' मैं किसी से नहीं डरता, पर इसने मेरे छक्के छुड़ा दिए।' विधाता ने कहा 'यह अकेला अदना-सा किसान तुम्हारे विशालकाय शरीर को कैसे गिरा पायेगा?' पहाड़ बोला 'मालिक! पूछो मत, इसकी संकल्पशक्ति गजब की है। यह अपना पूरा जीवन मुझे तोड़ने में लगा देगा। यह नहीं तोड़ पाया तो इसके बेटे-पोते मुझे खत्म करके रहेंगे। इसके मन में जो लौ लगी है, यह कभी थकेगा नहीं। इसका संकल्प पीढ़ी दर पीढ़ी-संक्रान्त होता रहेगा।' विधाता मौन था और पहाड़ खड़ा कांप रहा था। यह एक पौराणिक कहानी है। इसका सार-संक्षेप इतना ही है कि संकल्पशक्ति असंभव को भी संभव बना देती है। क्या हमारे साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं में भी ऐसी संकल्प-शक्ति जाग सकती है? संघ के संतुलित विकास और दृढ़ता के लिए इस प्रकार का संकल्प जाग जाए तो हम इस युग के हर खतरे का मुकाबला कर सकते हैं।

पर्यावरण के लिए सबसे बड़ा खतरा है अनुशासनहीनता और मर्यादाहीनता। इस खतरे से बचने के लिए सबको सावधान रहना है। सावधानी हटी और दुर्घटना घटी, यह बात केवल सड़क पथ पार करने पर ही लागू नहीं है। जीवन के राजपथ पर भी सजगता नहीं रही तो पर्यावरणीय क्षति को कोई रोक नहीं पायेगा। वह हो गई तो फिर बचेगा ही क्या? इस बिन्दु पर पहुंच कर मनुष्य पर्यावरण के साथ जीना सीखें। उसके चारों ओर भौतिक, रासायनिक, जैविक और सामाजिक तत्त्वों का एक घेरा है। उस परिवेश में जीने का अभ्यास करने वाला मनुष्य ही पर्यावरण के साथ जी सकता है।

www.terapanthinfo.com

प्रश्न है सीख देने वालों का

आचार्य महाप्रज्ञ

आचार्य दीप-तुल्य होते हैं और उनसे सैकड़ों दीप जल उठते हैं। इसीलिए जल उठते हैं कि ज्योतिष्ठान् रहना होता है। कोई दूसरा व्यक्ति तो अपनी ज्योति को थोड़ा बुझा भी ले तो कोई बहुत बड़ा खतरा नहीं होता किन्तु आचार्य यदि ज्योतिष्मान् नहीं रहता है तो बहुत बड़ा खतरा हो जाता है। इसीलिए मैंने कहा कि आचार्य को अधिक संयमी रहना होता है, बहुत प्रज्वलित रहना होता है और अधिक जागरूक रहना होता है। उस व्यक्ति को भी, जिसने गुरु के चरणों में बैठकर सुश्रुषा की है, पर्युपासना की है, विनय को प्राप्त किया है, जागरूक रहना होता है।

आदमी मनवाना ज्यादा चाहता है, मानना कम चाहता है। दूसरे को सिखाने की बात तो अच्छी है, स्वयं सीखने की बात अच्छी नहीं लगती। सृष्टि का नियम उल्टा है कि जो स्वयं नहीं मानता, उसकी बात कोई दूसरा नहीं मानता। स्वयं नहीं सीखता, उसकी सीख दूसरा कोई लेता नहीं है। हर आदमी देखता है कि वह क्या कहता है और क्या करता है। कहने वाले को उतना नहीं सुनना चाहता, करने वाले को सुनना चाहता है। इसलिए एक सूत्र दिया गया कि गुरु के पास बैठो और सुनो। साधर्मिक के पास बैठो, सुनो और उपासना करो। सुश्रुषा को जगाओ और सुश्रुषु बनो। तुम्हारी उपासना परिपक्व होगी, तुम्हारी सुश्रुषा जागेगी। सुश्रुषा के बिना विनय की उत्पत्ति नहीं होती, आचार सीखा नहीं जा सकता। दो व्यक्ति के बीच में एक दीवार होती है। मकान की दीवार बहुत छोटी होती है। हम उसे लांघ जाते हैं। सीढ़िया बना लेते हैं और ऊपर चढ़ जाते हैं। किन्तु व्यक्ति-व्यक्ति के बीच में जो दीवार होती है दुर्लंघ्य ही नहीं, अलंघ्य हो जाती है। हर व्यक्ति के बीच में दीवार होती है और वह है अहं की दीवार। हर व्यक्ति अपना घेरा बनाए हुए है, अहं का दीवार बनाए हुए है। इतनी बड़ी दीवार कि जिसे कभी तोड़ा नहीं जा सकता, लांघा नहीं जा सकता। सुश्रुषा उसी व्यक्ति में आती है जो अहं की दीवार को तोड़ देता है। जब तक अहं की दीवार है, आप पास में बैठे रहें, पर किसी की बात को सुन नहीं सकते। दूर-दूर रहेंगे, पास में नहीं आ सकते। दीवार बीच में बनी रहेगी।

साधना का बहुत बड़ा सूत्र है अहं की दीवार को तोड़ देना। जीवन की सफलता का बहुत बड़ा सूत्र है अहं की दीवार को तोड़ देना। दो के मिलन का बहुत बड़ा सूत्र है अहं की दीवार को तोड़ देना। अन्यथा दो व्यक्ति मिल नहीं सकते। पास में बैठे भी इतने दूर होते हैं कि जैसे तीन का और छह का अंक। पास रहते हैं किन्तु दोनों इतने दूर कि कभी मुंह मिलते ही नहीं। दूर रहने वाले पास हो जाते हैं, जिनके अहं की दीवार टूट जाती है। बहुत निकट रहने वाले दूर हो जाते हैं, जिनके निकट अहंकार की दीवार खड़ी रहती है। वही व्यक्ति सीख सकता है जो अहंकार की दीवार को तोड़ देता है। उसी को विनय उपलब्ध होता है, उसी की सद्गति होती है। महावीर की वाणी है जो स्वयं सुश्रुषा के द्वारा विनय को प्राप्त हो जाता है, वह अपने आचरण और व्यवहार से बहुत सारे प्राणियों को विनय के मार्ग पर अनायास ले जाता है। जो स्वयं विनय को अप्राप्त है। वह दूसरे को विनय की ओर नहीं ले जा सकता।

एक परिवार नियोजन अधिकारी गांव में घूम रहा था। वह लोगों से कह रहा था कि परिवार नियोजन कराना है। लोगों को उसके इतिहास का पता चल गया। एक मुंहफट आदमी ने कहा क्या बात करते हो परिवार नियोजन की? तुम्हारे तो दस बच्चे हैं और परिवार नियोजन की बात करते हो? क्या बोले? उसे कहना पड़ा भाई! पहले मैं विकास विभाग में था, विकास अधिकारी था और अब परिवार नियोजन का अधिकारी बना हूं। विकास विभाग में मैंने विकास किया और अब नियोजन विभाग में स्वयं भी नियोजन करूंगा।'

कौन कैसे माने? जिसके दस बच्चे और वह कहे कि परिवार का नियोजन करना है, उसकी बात का कोई भरोसा नहीं करता। बड़ी मुसीबत होती है। जिस व्यक्ति ने अपने व्यवहार और आचरण से पढ़ाना शुरू किया, सिखाना शुरू किया, वह वास्तव में शिक्षक होता है, उसकी बात बिना कहे मानी जाती है, स्वीकृत होती है। वहां शब्द नहीं बोला जाता, प्रयोग नहीं किया जाता, कहता है उसी बात को मान लेते हैं। जहां शब्द का प्रयोग होता है किन्तु शब्द के पीछे अर्थ नहीं होता वहां के लोगों के मन में संदेह पैदा होता है, अनास्था का भी भाव पैदा होता हैं। और ज्यादा कहूं तो घृणा का भाव, अवज्ञा का भाव पैदा होता है। कैसा जमाना आ गया कि ऐसे लोग सीख देने वाले और उपदेश देने वाले हैं जो स्वयं तो करते नहीं है और दूसरों को कहते फिरते हैं। दूसरों को वही व्यक्ति विनय के मार्ग पर ले जा सकता है जो स्वयं विनय के मार्ग पर चल चुका है।

जिन लोगों ने गुरु के चरण में बैठकर सुश्रुषा की है, उपासना की है और विनय की प्रतिपत्ति को पाया है, वे लोग ही वास्तव में दूसरों के लिए एक मॉडल बन सकते हैं, प्रारूप बन सकते हैं, हमारे सामने एक प्रारूप चाहिए, एक चित्र चाहिए कि हम वैसे बन सकें। आजकल मकान बनाया जाता है तो पहले उसके रेखाचित्र बनाया जाता है। उसके आधार पर सारी निर्माण की प्रक्रिया चलती है। व्यक्ति को भी अपना जीवन बनाना है। बच्चा है उसे तो अपना जीवन बनाना ही

www.terapanthinfo.com

है। दस वर्ष के बच्चे को भी अपना जीवन बनाना है। बहुत सारे ऐसे लोग हैं कि पचास वर्ष के हो जाते हैं किन्तु निर्माण नहीं कर पाते, उन्हें भी अपना जीवन बनाना है। मैं तो सोचता हूं कि मृत्यु के क्षण तक जीवन निर्माण की प्रक्रिया चलनी चाहिए। यदि जीवन निर्माण की प्रक्रिया बंद हो जाएगी तो आदमी बूढ़ा हो जाएगा। जो बराबर जीवन-निर्माण की बात को लेकर चलता है वह बूढ़ा नहीं होता। मरते दम तक बूढ़ा नहीं बनता, चाहे अस्सी वर्ष का हो जाए, चाहे नब्बे वर्ष का हो जाए। जिसने जीवन-निर्माण की प्रक्रिया को बंद कर दिया, वह तीस वर्ष का भी बूढ़ा बन जाएगा। न ही सुधार कर पाएगा और न ही परिष्कार कर पाएगा। कुछ भी नहीं कर पाएगा। हमारे जीवन-निर्माण की प्रक्रिया बराबर चले और उसके लिए एक प्रारूप चाहिए, आदर्श चाहिए, आदर्श कौन बन सकता है? वही व्यक्ति आदर्श बन सकता है कि जो विनय को प्राप्त है, जिसने अपने जीवन के व्यवहार और आचरण में विनय प्रयोग किया है, नियोजन किया है, सद्गति को प्राप्त किया है और दूसरों के लिए प्रेरक बना है एक प्रारूप बनता है, हजार बार आप श्रम की शिक्षा दें, शायद बात समझ में नहीं आएगी किन्तु एक घटना प्रेरणा बन जाएगी।

काम चल रहा था। मजदूर एक खंभा उठा रहे थे। वह काफी भारी था। मुसीबत हो रही थी। कई बार प्रयत्न करने पर भी उठाया नहीं जा रहा था। ठेकेदार पास खड़ा था। नेपोलियन उधर से निकला, देखा और उसे बड़ा अजीब लगा। पास में जाकर बोला भाई तुम ऐसे खड़े हो और बेचारे मजदूर इतना श्रम कर रहे हैं। खंभा उठाया नहीं जा रहा है, तुम थोड़ा-सा सहारा दो, इनका काम बन जाएगा। बोला, कौन होते हो तुम सलाह देने वाले! जानते नहीं मैं कौन हूं! मैं ठेकेदार हूं! क्या इन मजदूरों के साथ खंभा उठाऊंगा? ठेकेदारी कौन करेगा? जा, चला जा। अच्छी बात है, नेपोलियन ने स्वयं मजदूरों का साथ दिया और खंभा उठ गया। ठेकेदार ने देखा कि बड़ा अजीब आदमी है। राह चलते मजदूरों का साथ दिया। उसने पूछा अरे, तू कौन है? उसने कहा कि मुझे नेपोलियन कहते हैं। अब क्या बोले। शरमा गया और सिर जमीन में गड़ गया। नेपोलियन ने जाते-जाते कहा कि देखो मेरा यह पता है, यदि फिर काम पड़े तो मुझे फिर बुला लेना। अब हजार बार आप उपदेश दें कि श्रम करें, प्रेरणा नहीं जाग सकती और एक घटना मन में प्रेरणा भर देती है। जितने महान पुरुष हैं उनकी जीवनियां पढ़ी जाती हैं क्योंकि उन्होंने जो जीया था वह कहा था, वह अधिक मूल्यवान है।

जैनों का एक सूत्र है आचारांग सूत्र। इतना अद्भुत सूत्र मुझे लगा कि कुछ वर्ष पहले आचार्यश्री बम्बई में चातुर्मास बिता रहे थे और उस वक्त एक-दो पुस्तकें देखने को मिली पाश्चात्य दार्शनिकों की। उनका दर्शन और साथ में उनकी संक्षिप्त जीवनी। उस समय हमारी दृष्टि इतनी विकसित नहीं थी। बाद में जब आचारांग को ध्यान से पढ़ा तो लगा कि ये पुस्तकें तो इस शताब्दी में लिखी गई हैं और आचारांग तो दो-ढाई हजार वर्ष पूर्व लिखा गया था। कितनी सुन्दर नियोजना है उसमें! आठ अध्यायों में महावीर के दर्शन का प्रतिपादन किया और नवें अध्याय में महावीर के जीवन का प्रतिपादन किया। दोनों की संगति मिलाएं। बिलकुल स्पष्ट समझ में आएगा कि जो बात आठ अध्यायों में कहीं गई वही बात कही गई है जो महावीर ने नौवे अध्याय में जीया है। जो जीया था और जो जीवन बताया गया, आठ अध्यायों में उसके सिवाय और कुछ भी नहीं। जो जीवन था, उसका दर्शन था आठ अध्यायों में। नौंवे अध्याय को पढ़ लो और एक-एक सूत्र को पीछे मिलाते चले जाओ, ऐसी संगति होगी कि महावीर ने यह जीया था, कहा नहीं था केवल ऐसा जीया था। वह दर्शन बिलकुल व्यर्थ का दर्शन होता है जो जीया नहीं जाता। वही दर्शन सार्थक दर्शन होता है जो जीया जाता है, जो व्यवहार में उतरता है। इतना अद्भुत सूत्र है कि सिखाने की बात मत बोलो, पहले जीने की बात को बोलो। स्वयं जीओ और दुनिया सीखे। तुम करो, दुनिया सीखे। तुम कहो, विरोध खड़ा हो जाता है, दूसरे का अहंकार खड़ा हो जाता है कि मुझे समझाने आया है, पहले खुद तो समझ ले। बहुत बार ऐसा होता है। आदमी किसी भी बात को सहना नहीं चाहता, क्योंकि अहंकार की दीवार जो खड़ी है। तुरंत जवाब देगा कि आया है सीख देने वाला। पहले अपने घर को तो संभाल ले, अपने आपको को तो देख ले, यह बात न जाने कितनी बार सुनी, अपनी भूल की ओर नहीं देखते।

एक बार ऐसा प्रसंग आया कि एक लड़का मेरे पास आया, साथ में बाप भी था। बाप ने कहा कि इसको तम्बाकू पीने की आदत है, रोज सिगरेट पीता है, छोड़ता नहीं है। तत्काल बेटा बोल उठा कि महाराज! ये स्वयं तो पीते हैं और मुझसे छुड़वाना चाहते हैं। यह बड़ी समस्या है। वही व्यक्ति दूसरे को सीख दे सकता है, बिना शब्दों की सीख दे सकता है जो स्वयं विनय को प्राप्त है।

हमारी एक ऐसी परम्परा रही है जिसमें आचार्य को अधिक संयमी रहना होता है। दूसरे को संयम की पालना करनी होती है तो आचार्य को महासंयम की पालना करनी होती है। यह आचार्य भिक्षु से लेकर आज तक बराबर चलती रही है। आचार्य को अपने पर अधिक अंकुश लगाना होता है। एक बार आचार्य भिक्षु से कहा गया कि आप बहुत वृद्ध हो गए हैं। पचहत्तर वर्ष की अवस्था है, अब तो आप बैठे-बैठे प्रतिक्रमण किया करें। आचार्य भिक्षु ने कहा कि मैं खड़े-खड़े करता हूं। मेरे पीछे वाले बैठे-बैठे तो करेंगे और मैं बैठा-बैठा करूंगा तो पीछे वाले लेटे-लेटे करेंगे। सीख देने का सबसे सुन्दर तरीका और उपाय यह है कि स्वयं विनय करे, अपने जीवन में आचरण और व्यवहार करे, अपने आप दूसरे को सीख मिल जाएगी। जब यह सूत्र पढ़ा तो मन पुलकित हो गया। एक रहस्य उत्तराध्ययन सूत्र में उद्घाटित किया है कि 'अण्णे जीवे विणइता भवई' दूसरों को विनय के मार्ग पर, आचार के मार्ग पर वही व्यक्ति ले जा सकता है जो स्वयं विनीत हो गया,

शेष पृष्ठ 8 पर...

www.terapanthinfo.com

आत्मदर्शन

आचार्य महाश्रमण

आदमी अनासक्ति के साथ उपयोग करे, ज्ञाता-द्रष्टा भाव का विकास करे, मन को पवित्र बनाए और राग-द्वेषमुक्त जीवन जीने का प्रयास करे तो अपने आप को देखने की बात निष्पन्न हो सकती है।

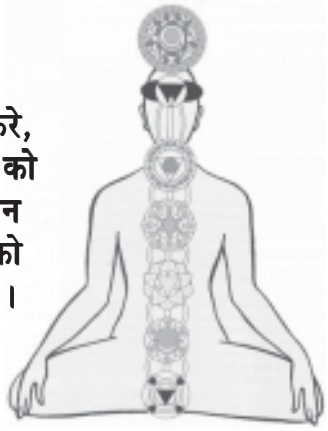

आर्हतवाङ्मय का एक सुन्दर सूक्त है संपिक्खई अप्पगमप्पएणं। स्वयं, स्वयं को देखें प्रेक्षाध्यान का यह एक आधारसूत्र है कि अपने आप को देखें। आदमी की आँखें बाहर देखती हैं। वह भीतर में भी देखने का अभ्यास करें। भीतर की ओर देखने का मतलब है स्वयं को देखना, आत्मा-साक्षात्कार करने की दिशा में आगे बढ़ना। जो व्यक्ति स्वयं का विश्लेषण करता है, स्वयं की अच्छाइयों और कमियों को देखता है और फिर अच्छाइयों को बढ़ाने का और कमियों को दूर करने का प्रयास करता है, वह व्यक्ति आध्यात्मिक दृष्टि से भी आगे बढ़ सकता है प्रगति कर सकता है। स्वयं को देखते-देखते व्यक्ति आत्मा तक पहुँच सके, वह अध्यात्मिक आकांक्षा होती है। अनेक धार्मिक लोगों में आत्मदर्शन की भावना होती है।

प्रश्न हो सकता है कि आत्मा को कौन देख सकता है?जिस आदमी का मनरूपी जल राग-द्वेष रूपी तरंगों से तरंगित नहीं होता है, वही व्यक्ति आत्मतत्त्व को देख सकता है। एक व्यक्ति पानी के भरे तलाब के भीतर भाग-अन्तस्तल को देखना चाहता है। परन्तु तालाब का पानी यदि तरंगित है तो तालाब का भीतरी भाग देखना कठिन और असम्भव-सा हो जाता है। तालाब में लहरें ना भी उठें, किन्तु पानी गन्दा हो तो भी तालाब का भीतरी भाग नहीं देखा जा सकता। तालाब का अन्तस्तल तभी देखा जा सकता है जब पानी अतरंगित हो और साथ में स्वच्छ भी हो।

एक आदमी दर्पण में अपना चेहरा देखना चाहता है, परन्तु दर्पण हिल रहा है तो चेहरा देखने में कठिनाई हो सकती है। यदि दर्पण स्थिर है, किन्तु गन्दा है, दर्पण के ऊपर मैल का आवरण है अथवा देखने वाला अचक्षु हो तो भी चेहरा नहीं देखा जा सकता। दर्पण में अपना चेहरा देखने के लिए जरूरी है कि आदमी चक्षुष्मान् हो, दर्पण स्थिर हो, स्वच्छ हो और अनावृत हो। आदमी का मन भी अनेक अवस्थाओं वाला है। उस में विभिन्न भाव उभरते रहते हैं। वह कभी व्यग्र बन जाता है। तो कभी एकाग्र भी बन जाता है। मुख्यतया मन की तीन अवस्थाएँ हैं व्यग्र मन, एकाग्र मन और मनोतीत। व्यग्र मन वह होता है, जो विभिन्न आलम्बनों पर घूमता रहता है और एकाग्र मन वह होता है, जो एक बिन्दु पर अथवा एक आलम्बन पर स्थिर हो जाता है। इस के बाद तीसरी अवस्था है मनोतीत। इसमें आदमी मन से भी आगे चला जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में जैसा कहा गया है इन्द्रियाँ हैं, इन्द्रियों से आगे मन है, मन से आगे बुद्धि है और बुद्धि से भी आगे आत्मा हैं, परमतत्त्व है। आदमी में उस परमतत्त्व के साक्षात्कार की आकांक्षा रहती है। किन्तु जब तक राग-द्वेष के भाव विघटित नहीं होते हैं, आत्मा का दर्शन नहीं किया जा सकता।

आत्म-दर्शन करना एक सरल मार्ग भी है और कठिन मार्ग भी है। सरल मार्ग इसलिए है कि राग-द्वेष के छूटते ही आत्मा-साक्षाकार हो जाता है और कठिन मार्ग इसलिए है कि राग-द्वेष को छोडना आसान काम नहीं है। आत्मा को पाने के लिए बहुत तपना-खपना होता है, साधना करनी होती है और मन को इतना पवित्र बनाना होता है, कि अमन की अवस्था प्राप्त हो जाए।

आत्मा को देखना बहुत ऊँची बात है। आत्म-दर्शन से पहले आदमी इतना-सा प्रयास करे कि पहले अपनी कमियों को देखना शुरू करें। जो आरोपण दूसरों पर किया जाता है वह यदि स्वयं पर किया जाए तो समाधान का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। आदमी को विकास करना तो स्वयं की कमियों को देखना होगा और उन्हें अनुभव दूर करने का प्रयास करना होगा। यह भी एक प्रकार का स्वयं का दर्शन है। गुरुदेव तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ में आत्मा दर्शन के लिए एक ध्यान की विधि निदर्शित की, वह है प्रेक्षाध्यान। ध्यान के द्वारा आदमी चंचलता से स्थिरता की ओर आगे बढ़ता है। बाहर से भीतर की ओर बढ़ता है। प्रवृत्ति से निवृत्ति में आता है। भोग से योग की ओर अग्रसर होता है। अन्धकार से प्रकाश की ओर प्रस्थान करता है। अनेक लोग ध्यान के द्वारा अपनी समस्याओं से मुक्ति पाते हैं और अध्यात्म की दिशा में प्रवर्द्धमान बनते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ का एक सूक्त है रहो भीतर, जीओ बाहर, आदमी बाहर जीता है क्योंकि व्यवहार को निभाना है, किन्तु बाहर के व्यवहार को निभाते हुए भी आदमी भीतर में रहना सीखे। जो कुछ हो रहा है उसे देखना सीखे, ज्ञाता-द्रष्टा भाव विकसित करे। दो प्रकार के आदमी होते हैं एक व्यक्ति, जो बाहर रहने वाला है, आसक्ति के साथ पदार्थों का भोग करता है और दूसरा व्यक्ति, जो भीतर रहने वाला है, आवश्यकता की पूर्ति के लिए पदार्थों का उपयोग करता है। आदमी अनासक्ति के साथ उपयोग करे, ज्ञाता-द्रष्टा भाव का विकास करे, मन को पवित्र बनाए और राग-द्वेष मुक्त जीवन जीने का प्रयास करे तो अपने आप को देखने की बात निष्पन्न हो सकती है।

www.terapanthinfo.com

.... पृष्ठ 6 का शेष

प्रश्न है सीख देने वालों का

अनाशंसी हो गया, आचार में चला गया, सद्व्यवहार में चला गया। इसी को कहा जाता है कि दीए से दीया जलता है। लौ से लौ जलती है। दीया कभी कहता नहीं, उपदेश देता ही नहीं, पर दीए से दीया जल उठता है।

आचार्य दीप-तुल्य होते हैं और उनसे सैकड़ों दीप जल उठते हैं। इसीलिए जल उठते हैं कि ज्योतिष्ठान् रहना होता है। कोई दूसरा व्यक्ति तो अपनी ज्योति को थोड़ा बुझा भी ले तो कोई बहुत बड़ा खतरा नहीं होता किन्तु आचार्य यदि ज्योतिष्मान् नहीं रहता है तो बहुत बड़ा खतरा हो जाता है। इसीलिए मैंने कहा कि आचार्य को अधिक संयमी रहना होता है, बहुत प्रज्वलित रहना होता है और अधिक जागरूक रहना होता है। उस व्यक्ति को भी, जिसने गुरु के चरणों में बैठकर सुश्रुषा की है, पर्युपासना की है, विनय को प्राप्त किया है, जागरूक रहना होता है। वर्तमान के वातावरण में यह बात समझ में आ जाए कि सिखाना शब्दों के साथ नहीं, व्यवहार के साथ सिखाना चाहिए। प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करने वाले व्यक्ति वही काम कर रहे हैं कि वैसा जीवन बन पाए। जीवन में वह कहा न जाए, बन जाए। बन जाता है तो वह अपनी अनुभूति हो जाती है और वह कसुम्बा गलता है, दूसरे को भी रंग देता है।

एक बार टोकरसी बता रहे थे कि प्रेक्षाध्यान का अभ्यास शुरू किया और इन चार वर्षों में उस भूमिका का अनुभव किया है कि शायद शेष जीवन में नहीं किया था। यह कोई शब्दों से नहीं मिला, किसी ने उपदेश नहीं दिया, उपदेश से नहीं मिला, यह मिला व्यवहार से और आचरण से।

हमारे साधु-साध्वी हजारों मील की यात्रा करते हैं। प्रतिवर्ष आचार्य द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर एकत्रित होते हैं और पुनः वहां से आचार्य के आदेशानुसार भारत के विभिन्न भागों में चले जाते हैं। आने-जाने में हजारों मील की दूरी तय करनी होती है पर यह पूर्ण उत्साह के साथ होता है। चलने वाले सारे युवक ही नहीं होते। उनमें वयःप्राप्त भी होते हैं। आचार्य का आदेश उनके लिए सर्वोपरि होता है। नेपाल से आए और पुनः नेपाल या कलकत्ता जाना होता है तो भी कुछ अनुभव नहीं होता। इसका मूल कारण है स्वयं आचार्यश्री इतना श्रम करते हैं कि दूसरों को अपना श्रम आचार्य के श्रम की तुलना में नगण्य लगता है। एक बार राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली ने आचार्यश्री से कहा आचार्यश्री! एक प्रार्थना करता हूं कि जैन विश्व भारती का विकास हो, अपेक्षित है, पर आप कहीं बैठ मत जाना। आप यदि बैठ गए तो दूसरों को खड़ा नहीं रख सकेंगे, अर्थात् फिर दूसरों को चलाया नहीं जा सकेगा।

आचरण से जो पाठ पढ़ाया जा सकता है, वह शब्दों से नहीं पढ़ाया जा सकता। इस रहस्य को उत्तराध्ययन सूत्र में जो अभिव्यक्ति दी गई है, वह समझ में आ जाए तो 'प्रश्न है सीख देने वालों का' यह स्वयं समझ में आ जाएगा।

राष्ट्र चिन्तन

◆ देश में वैधानिक प्रावधानों के बावजूद महिलाओं के खिलाफ सामाजिक पूर्वाग्रह अब भी कायम हैं। राष्ट्रपति ने छात्राओं को स्वरक्षा के लिए जूडो-कराटे में दक्षता लेनी चाहिए ताकि वे अपनी रक्षा खुद कर सकें।

समाज में कायम सामाजिक पूर्वाग्रहों और बुराइयों के कारण महिलाओं को अब भी कई प्रकार की चुनौतियों और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। ये सामाजिक बुराइयां देश की प्रगति में बाधा डाल रही हैं और कई कानूनों के बावजूद ये बुराइयों कायम हैं।

देश के पहले महिला अर्द्धसैनिक (सीआरपीएफ) दस्ते ने राष्ट्रपति को सलामी दी। दस्ते की लगभग 800 महिलाओं ने मृत्यु के बाद अपनी आंखें और अंग दान करने की प्रतिबद्धता जाहिर की। इन बहादुर लड़कियों को एक साथ देखकर मेरी आंखें गर्व और खुशी से नम हो गई हैं। ज्यादा से ज्यादा लड़कियों को सुरक्षा और पुलिस बलों में शामिल होना चाहिए।

प्रतिभा पाटिल, *राष्ट्रपति*

◆ भारत आज गर्व से दुनिया में एक बड़ी ताकत बनकर उभर रहा है, पिछली सदी जहां प्रगति के साथ-साथ विरोधाभासों और अभावों की सदी थी, वहीं यह सदी महान संभावनाओं की सदी है।

इसमें गरीबी से निजात मिलेगी, साक्षरता होगी, सभी के तन ढंके होंगे, धर्म के मायने शांतिपूर्ण सह अस्तित्व की भावना होगी और जियो और जीने दो के साथ-साथ मानवाधिकारों का सम्मान होगा।

डॉ. मनमोहनसिंह, *प्रधानमंत्री*

www.terapanthinfo.com

बनते बिगड़ते विवाह सम्बन्ध

बिरदीचन्द पोखरना

मानवीय दृष्टिकोण से सामाजिक प्राणियों को इस पर चिंतन करना होगा कि वर्तमान में वैवाहिक जीवन पारिवारिक जनों के लिए अभिशाप क्यों बनता जा रहा है। प्राच्य युग में सगाई का होना ही विवाह सम्बन्ध की लोहे की लकीर थी। उस युग में सौहार्द, परस्पर मैत्री भाव, सहिष्णुता के कारण तोरण द्वार पर नगरों की गूंज से ग्राम एवं नगर में प्रसन्नता की लहर व्याप्त हो जाती थी। भावी पति-पत्नी के हृदयतंत्री के तार भी कमल की भांति खिल उठते थे। दाम्पत्य जीवन देदीप्यमान होकर स्वर्गिक आनन्द का अनुभव करता था। वैवाहिक बंधन में आबद्ध नवयुवतियों का मुखमंडल द्वितीया के चन्द्रमा के समान विकसित होता रहता था।

जिस युवक की सगाई या शादी हो जाती वह ससुराल-पक्ष के सम्पूर्ण गांव का दामाद माना जाता था। अतिथि की तरह उसका सम्मान होता था। वर्तमान समय में विवाह से पूर्व सगाई हेतु कन्या को बार-बार आगंतुकों को दिखाने में प्रथम तो हजारों रुपयों पर पानी फिर जाता है। परिणाम ढाक के तीन पात। कन्या को आसन पर बैठाकर प्रश्नों की झड़ी लगायी जाती है। कलेवा भोजनादि के पश्चात् उत्सुक होकर माता-पिता जानना चाहते हैं हमारी लाडली आपको पसन्द आयी कि नहीं वे भी अपनी कन्या के अनेक गुणों का व्याख्यान करते हैं।

इस पर आगंतुकों के उत्तर देखिये बाई मांगलिक है, गुण, जन्मपत्री नहीं मिली। एक साख अड़ गयी, यह तो मात्र एम.बी.ए. है। हमें डॉक्टर लड़की चाहिए, इसकी ऊंचाई कम है, हमारा आत्मज अधिक रूपवान है, आयु में तीन वर्ष का अंतर चाहिए, अभी लड़की सर्विस में भी नहीं है। लड़की के भाई नहीं है। परिवार भी बहुत बड़ा है। यह सुनते-सुनते लड़की वालों के नाक में दम आ जाता है। ऐसी स्थिति लड़के वालों के साथ भी हो रही है। देखते-देखते दोनों तरफ आयु 30-35 वर्ष तक हो जाती है। यह दशा आज सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज की है।

आज अनेक कुंवारियां ऐसी भी हैं जो माता-पिता के आँखों पर पर्दा डालकर अपना भविष्य मन पसन्द युवक के साथ विवाह कर, निकाह कर उज्जवल करने पर तत्पर हैं। उनके सम्मुख सामाजिक परम्पराएं, मर्यादाएं, माता-पिता, भाई-बहन गुरुजनों की इच्छाएं गौण होती जा रही हैं। ऐसी ही स्थिति आज समाज के भावी कर्णधार युवकों की भी होती जा रही है जो सामाजिक कलंक एवं चिंतनीय विषय है।

आधुनिक युग में शैक्षिक जगत में कम्प्यूटर शिक्षण प्रणाली ने विश्व में अपनी धाक जमा ली है। इस प्रतिस्पर्धा युग में माता-पिता भी अपेक्षा करते हैं कि हमारी संतान इंजीनियर, चिकित्सक, बैरिस्टर, जज, प्रोफेसर, प्रिंसिपल, सचिव आदि विशिष्ट सेवाओं में उच्चतम पदों पर पहुंच कर हमारा नाम भी रोशन करें।

अपनी संतान को प्रगति-पथ पर अग्रसर करने हेतु अभिभावक अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देते हैं। शिक्षा के साथ-साथ वैवाहिक सम्बन्ध किस प्रकार बनते जा रहे हैं। इस पर भी एक विहंगम दृष्टि डाले तो ज्ञात होगा

1. कॉलेज में अधिकांश युवक-युवतियां साथ-साथ शिक्षण प्राप्त करते हैं। शनैः-शनैः संस्कारों के अभाव में जातिप्रथा के बंधनों को तोड़कर, सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन कर, शाकाहारी, मांसाहारी तथा दुर्व्यसनों का ध्यान न रखकर माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध शादी करने को तत्पर हो जाते हैं। यदि उन पर विवाह न करने का अधिक प्रेशर डाला जाय तो वे आत्महत्या कर लेते हैं।

2. युवक एवं युवतियां घंटों पंच सितारा होटलों में गुफ्तगू करके घनघोर आच्छादित तिमिर रात्रि में अपने-अपने घरों में लौटते हैं।

3. बड़े-बड़े महानगरों में अविवाहित जोड़े अर्द्ध-रात्रि तक निर्वस्त्रों में पकड़े गए हैं, जिनका पर्दाफाश समय-समय पर अखबारों ने कर महिलाओं को प्रताड़ना देकर घर भेजा और युवकों को कृष्ण मंदिर में।

4. कॉलेजों की पिकनिक भी मनोरंजन का उत्तम साधन है।

5. आज प्रत्येक घर में मोबाइल फोन है। किसका फोन आ रहा है? क्या बातें हो रही हैं? माता-पिता अपने कक्ष में और होनहार युवक-युवतियां प्रणय-बंधन के

www.terapanthinfo.com

वचनों में सदैव के लिए हो रहे हैं तत्पर। कैसी विडम्बना है।

6. विवाह सम्बन्ध कराने में बुजुर्गों की महत्ती भूमिका रहती है। वैसे इन्टरनेट एवं पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी विवाह सम्बन्ध स्थापित हो रहे हैं।

10. अनेक संस्थाएं भी अविवाहित युवक युवतियों के सामूहिक विवाह कराने में अपनी महत्ती भूमिका अदा कर रहे हैं।

निर्माण सबको अच्छा लगता है विध्वंस से होता है हाहाकार। इसी प्रकार वैवाहिक सम्बन्ध जब टूटते हैं तो परिवार में व्याप्त होती है अशान्ति और समाज में होती है कानाफूसी। जैन समाज में कभी तलाक नहीं होता था, विधवा विवाह भी नहीं होता था। युवतियां पाश्चात्य प्रभाव एवं धन लोलुपता के कारण तीन-तीन, चार-चार बार तक शादियां करती हैं। ऐसी हो रही है सभ्य समाज की मनोदशा।

आइये! हम सब मिलकर विचार करें और सुधारात्मक कार्य की ओर बढ़ाएं अपने कदम। वैवाहिक सम्बन्ध-विच्छेद एवं तलाक के मुख्य कारण हैं

1. पति-पत्नी के परस्पर विचारों में भिन्नता।

2. पत्नी का अन्य पुरुष से मेल-जोल होना।

3. पति का शराबी, जुआरी, मांसाहारी एवं व्यभिचारी होना।

4. पति का अन्य महिला से अनुचित संबंध होना।

5. दहेज में मनवांछित प्राप्ति न होना।

6. पति-पत्नी में शैक्षिक असमानता।

7. बेमेल विवाह एवं नपुंसकता।

8. पत्नी सास-ससुर के साथ रहना नहीं चाहती।

9. प्रत्येक युवती ऐशो-आराम, कार और बंगले में रहना चाहती है। गृहकार्य से दूर भागती है।

10. कई परिवारों में बहू पर सास-ससुर का होता है कठोर नियंत्रण।

11. नवयुवतियां अपने पीहर की बुराई सुनना ही नहीं चाहती।

12. पत्नियां जब जॉब करने लगती है तो उनका दिमाग आसमान पर चढ़ जाता है। वे शनैः-शनैः सास-ससुर और पति पर भी हुकम चलाने लग जाती हैं। पति माता-पिता की सेवा करना चाहता है। परन्तु घर में पत्ता तक हिलता नहीं पत्नी की इच्छा के विरुद्ध। ऐसी परिस्थिति में पारिवारिक सम्बन्ध बिगड़ने लग जाते हैं। परिवार एवं समाज की इस पीड़ा का उन्मूलन करने के लिए निम्नांकित बिन्दुओं पर ध्यान देना होगाः

1. माताएं बचपन से ही बच्चों को सु-संस्कारित करने में अपनी महत्ती भूमिका का निर्वहन करें।

2. मोबाइल एवं टेलीविजन का उपयोग कब और कैसे हो? कौन-कौन से सीरियल देखें जिनसे ज्ञान वृद्धि हो तथा तनावमुक्त हो। इस पर विचार करें।

3. संयुक्त परिवार कैसे सुखी परिवार होता है (1) बेरोजगारी में सहायक (2) बहू कार्य पर चली जाए तो सास अपना उत्तरदायित्व सहर्ष निभायें। बहू को बेटी समान समझ कर मृदु व्यवहार करें।

4. बचपन से ही बालिकाओं में सास-ससुर की सेवा करने का भाव जागृत करें।

5. आध्यात्मिक एवं शैक्षिक गुरुओं का सम्मान करने का गुण अथवा संस्कार बालकों में भरें।

6. अपने अग्रजों को प्रतिदिन नमन करना सिखाएं।

7. सत्संग ही जीवन का अमूल्य उपहार है। माता-पिता स्वयं भी सत्संग में जाएं एवं बच्चों को भी अपने साथ ले जाएं।

इस प्रकार वैवाहिक सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने का परिवारजन प्रयास करेंगे तो सफलता उनके चरण चूमेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

धानमण्डी, किशनगढ़ शहर (राज.)

पाठक दृष्टि

◆ प्रिय डॉ. महेन्द्र कर्णावट, आप द्वारा प्रकाशित की जा रही 'अणुव्रत' पाक्षिक पत्रिका का अंक 16-31 जनवरी 2011 में प्रकाशित लेख मुझे बहुत सारगर्भित लगे, अणुव्रत का वार्षिक सदस्यता शुल्क भिजवा रहा हूं। इससे पूर्व भी अंक प्राप्त होते रहे हैं।

● ज्ञानदेव आहूजा : विधायक - रामगढ़, अलवर

'दीक्षित पैलेस', महताब सिंह का नौहरा, अलवर (राज.) 2331253

◆ अणुव्रत संयुक्तांक 1-31 मार्च कुछ देर से मिला। मेरी तबीयत पिछले दिनों बहुत खराब रही.... अब कुछ ठीक हूं। भ्रष्टाचार पर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी चिंता व्यक्त की है कि हमें उच्च पदों पर फैले भ्रष्टाचार से कड़ाई से निपटना होगा। डॉ. बी.एन. पांडेय का लेख 'ऐसे रुकेगा भ्रष्टाचार' में सुझाए गये उपायों पर भी अगर अमल होता है, तो जरूर उसके अच्छे परिणाम सामने आयेंगे।

● भगवानदास ऐजाज, ***टी-451, बलजीत नगर, नई दिल्ली-110008***

www.terapanthinfo.com

महावीर जयंती का सारतत्त्व

हुकमचंद सोगानी

यदि इस बात पर यकीन कर लें कि हमारे चरित्र में बुराइयां हैं तो इन्हें त्यागने का धर्म-सम्मत मार्ग भी सूझ सकता है। हम अंदर और बाहर एक रूप कहां हैं? हमारे अंदर राग-द्वेष, ईर्ष्या, स्वार्थ, लोभ तथा परनिंदा के नाग फन फैलाये बैठे हैं। हम मुस्कराकर मीठे शब्दों या मुखौटों से दूसरों को ठगने से बाज नहीं आते। यदि हम अपने दोषों पर सुविचारों के साथ दृष्टिपात करें तो महामानव अर्थात महावीर बन सकते हैं। भगवान महावीर ने अपने दोषों को तिलांजलि देकर क्षमा के गुणों को चरित्र में विकसित किया। दुष्टों ने उन पर उपसर्ग किये। महावीर ने उन्हें क्षमा कर दिया।

लौकिक शिक्षा से हम हर बात को समझने का दावा करते हैं। जबकि आध्यात्मिक ज्ञान के बिना हमारी समझ कितनी अधूरी है। अन्तर्ज्ञान को हाशिये पर करते हुए हमने विज्ञान को अपनाया तो उसने हमारे जीवन को मशीन का पुर्जा बना दिया। जबकि विज्ञान और धर्म के समन्वय से जो राहें मिल सकती हैं। मंजिल पाने के लिए उनपर कदम रखकर आगे बढ़ सकते हैं।

परिग्रह और भौतिकवाद ने हमें हर ओर से जकड़ लिया है। संग्रह वृत्ति और वासना की दासता हमने स्वीकार कर ली है। असत्य हमारी वाणी में मिश्री की तरह घुल रहा है। दिखावे ने असलियत को ढक लिया है। रिश्ते-नाते स्वार्थ की चादर में लिपटे हुए हैं। मानवता के गुणों का ह्रास तनाव दे रहा है। हम 'मेटेरियल' के साथ जीने के आदि होने की वजह से जीवंतता से चूक रहे हैं। हमें अपनी अल्पज्ञता दिखाई क्यों नहीं देती?

भगवान महावीर ने तो अपने सारगर्भित उपदेशों से सचेत करने का भरसक प्रयास किया। उन्होंने किसी बात को अमल में लाने से पेश्तर चरित्र के द्वारा प्रकट किया। जगवासियों को शिक्षा देने की उनकी यह अप्रतिम शैली है। फिर भी हम मोह निद्रा से कहां जागे? भगवान महावीर स्वामी ने अपरिग्रह का पाठ पढ़ाया। हमने परिग्रह को और बढ़ाया। प्रचलित शिक्षा पद्यति यदि आध्यात्मिक गुणों के साथ नहीं होगी तो कागज के नोटों की ओर दौड़ाएगी/थकाएगी। आधुनिक होने से एतराज नहीं है। परिवर्तन से भी गुरेज नहीं है। बात इतनी भर है कि शिक्षा के इस माध्यम से जिंदगी में बुराइयां दाखिल न हों। अच्छाइयों का उजास फैले। आज व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का संतुलन चरित्र की तुला के पलड़ों से मेंढकों की तरह उछल कर बाहर हो रहा है। राजनेता हों या समाज सुधारक, धर्म के प्रचारकों हों अथवा आराधक, व्यापारी हों या फिर कर्मचारी। सबके लिए अपने गिरेबान में झांकने का यह वक्त है। राष्ट्र की खुशहाली, स्वतंत्रता और जीवन की शांति के जानिब सद्भावना, न्याय, नैतिकता, अहिंसा और परस्पर प्रेम अनिवार्य गुण हैं। यदि हम गुणों का कवच धारण कर लेते हैं तो अवगुण मन मसोस कर रह जाते हैं। जिंदगी में वह रद्दोबदल करें जो हमारे हक में है।

यद्यपि कई महापुरुष संसार से सदियों पूर्व विदा हो गए। लेकिन उनके पदचिह्न आज भी हमारे गन्तव्य को दिशा दे रहे हैं। उनके बताये हुए पथ पर अग्रसर होने के लिए किसी से सलाह-मशविरे की जरूरत महसूस नहीं होती। उनका जीवन इतना महान और आदर्श था कि आज भी शंकाओं के दायरे से परे है। हम निशंक होकर उनके सिद्धांतों को अंगीकार कर सकते हैं। हर मनुष्य के कल्याण के प्रति महावीर स्वामी के विचारों में पर्याप्त गुंजाइश है।

भगवान महावीर की वाणी जिंदगी के लिए अमृत तुल्य है। क्रोध को त्याग कर हम क्षमा को चैतन्य कर सकते हैं। हिंसा के कारणों को जानने से अहिंसा का पथ आलोकित हो उठता है। विवेक से काम लें तो अनहोनी को टाल सकते हैं। हमारे कृत्य बाह्य आचरण पर टिके न होकर अंतरमन की चेतना के द्योतक होने चाहिएं। भगवान महावीर के सिद्धांतों की प्रासंगिकता हर युग में रही है और रहेगी। महावीर स्वामी के अलौकिक बिम्ब की आराधना से कामना और तृष्णा गौण प्रतीत होती है। महावीर जयंती के प्रति हमारी सार्थकता और श्रद्धा ''जियो और जीने दो'' की उत्कृष्ट भावना के साथ उजागर होनी चाहिए।

यद्यपि कई महापुरुष संसार से सदियों पूर्व विदा हो गए। लेकिन उनके पदचिह्न आज भी हमारे गन्तव्य को दिशा दे रहे हैं। उनके बताये हुए पथ पर अग्रसर होने के लिए किसी से सलाह-मशविरे की जरूरत महसूस नहीं होती। उनका जीवन इतना महान और आदर्श था कि आज भी शंकाओं के दायरे से परे है। हम निशंक होकर उनके सिद्धांतों को अंगीकार कर सकते हैं। हर मनुष्य के कल्याण के प्रति महावीर स्वामी के विचारों में पर्याप्त गुंजाइश है। अपने उत्कृष्ट कथनों से महावीर शाश्वत हैं। यही महावीर जयंती का अपार सारतत्त्व है।

श्रीपाल प्लाजा, द्वितीय माला
फ्लेट नं. 201, महावीर मार्केट,
नई पेठ, उज्जैन (म.प्र.)

www.terapanthinfo.com

महंगाई का दैत्य

डॉ. हीरालाल छाजेड़

आजकल महंगाई और घोटालों की खबर अखबारों में प्रमुख रूप से देखने को मिलती है। समाचार-पत्रों की सबसे बड़ी खबर यही रहती है। आम आदमी खाद्य-पदार्थों के साथ-साथ अनेक दैनिक व्यवहार में आने वाली वस्तुओं व यातायात के महंगे साधनों के त्रस्त है। महीने के पंद्रह दिन समाप्त होते-होते उसकी जेब खाली हो जाती है, सारा बजट गृहणी का लड़खड़ा जाता है। दिसंबर महीने में ही महंगाई दर 9.46 से बढ़कर 18.32 फीसदी हो गयी। यानि खाने-पीने की सभी चीजें महंगी हो गयी। यह स्थिति तो तब है जब केन्द्र सरकार लगातार यह दावा करती रही है कि मार्च तक महंगाई 5-6 फीसदी रह जाएगी। पहले यह दावा दिसंबर तक था। आम आदमी के लिए बस-मेट्रो, बिजली, पैट्रोल, स्कूल की फीस, रसोई गैस आदि सबकुछ तो महंगा हो गया है। सरकार का तर्क है कि विश्व में सब जगह महंगाई भारत से ज्यादा है, लेकिन यह भी सत्य है कि वहां आदमी की इनकम भी तो ज्यादा है।

पिछले चार दशकों में हरित क्रांति की बदौलत अन्न समस्या का अंत मानकर दुनिया खुशफहमी में जी रही थी, किन्तु मिट्टी में बढ़ती लवणीयता और क्षारीयता के कारण खेती योग्य भूमि के क्षेत्रफल में कमी आने लगी। सिर्फ भारत में ही नहीं पूरी दुनिया में यह भयावह समस्या देखने को मिली है। इससे फसलों का चक्र बुरी तरह से गड़बड़ाया है, गेहूं और चावल की उत्पादकता में भी 8 से 10 प्रतिशत तक की कमी आयी है। जिस कारण खेती एक घाटे का सौदा बनी है। वहीं दूसरी ओर गांवों से शहरों की तरफ पलायन में बेहद तेजी देखी जा रही है।

इस जलवायु परिर्तन के चलते भारत सहित दुनिया के तमाम देशों में खाद्यान्न का संकट साफ-साफ नजर आने लगा है। वर्ष 2008 और 2009 में चीनी के उत्पादन में 4.7 से 5.8 प्रतिशत तक की कमी आयी है। दूसरी तरफ मांग और आपूर्ति का फासला भयानक रूप से बढ़ा है। हालांकि वर्ष 2009-10 की रबी की फसल के कारण फिलहाल हमारे गेहूं के बफर स्टॉक में कमी नहीं आयेगी लेकर दुनियां के संदर्भ में देखें तो खाद्यान्न के बफर स्टॉक खतरे में पड़ते जा रहे हैं। भारत में खाद्यान्न के दामों में 20 से 38 प्रतिशत तक की वृद्धि हो चुकी है जिस कारण 18 से 25 प्रतिशत तक निम्न और मध्यम वर्ग के लोगों की क्रयक्षमता पर बेहद नकारात्मक असर पड़ा है। विशेषकर दालें और खाद्य तेल स्थायी रूप से कम पड़ने लगे हैं।

अब जरूरी है हमारे महत्वपूर्ण संस्थानों को राजनीतिक नियंत्रण से बाहर कर सरकार वर्ष 2011 को एक यादगार वर्ष के रूप में जनता के सामने रखे ताकि आम आदमी की जीवन शैली में खुशी का संचार हो। देश भ्रष्टाचारियों के चंगुल से बाहर निकल सके और महंगाई की मार से त्रस्त जनता को सुख व चैन की सांस लेने का मौका मिल सके।

कुल मिलाकर कहीं हमने अपनी होशियारी से तो कहीं नादानी से इस तरह की स्थितियां पैदा कर दी हैं और करते जा रहे हैं कि भुखमरी की अतीत गाथाएं इतिहास के भूतलों से निकलकर हमारी दहलीज तक आ पहुंची है और दरवाजों तक दस्तक दे रही है। अगर हम अब भी बहरे बने रहे तो आने वाले सालों में करोड़ों लोग भयावह बीमारियों से नहीं भूख से मर जायेंगे और इसका एकमात्र कारण होगा महंगाई का दैत्य।

यह स्थिति केवल हमारे देश में ही नहीं, दुनियां के हर हिस्से में ऐसा दुर्भिक्ष का भय है, जिसमें लाखों लोग भूख से तड़प-तड़प कर दम तोड़ देंगे। आशा-निराशा के बीच वर्ष 2011 आया है। आशा है इस वर्ष स्थिति सुधरेगी। सरकार की गलत नीतियों के चलते सरकारी गोदामों में अनाज सड़े, किसानों ने आत्म-हत्यायें की, कृषि क्षेत्र में सुधार न होने से उत्पादन मांग के अनुपात में न बढ़ा और नयी तकनीकी का प्रयोग भी न हुआ। आशा करनी चाहिए कि इस वर्ष सरकार की चेतना जागृत होगी और इस भयावह स्थिति को रोकने का प्रयत्न होगा।

आर्थिक उदारीकरण के लगभग दो दशक गुजर गये। जब तक राजनीतिक सुधार नहीं होगा तब तक आर्थिक उदारीकरण का लाभ गरीब व मध्यम वर्ग के लोगों तक नहीं पहुंच पायेगा। राजनीतिक और व्यापारिक सांठ-गांठ तथा दलालों ने लाभ सोख लिए हैं।

भारत में गरीबी का कारण है आर्थिक सुशासन पर राजनीतिक कुशासन। जब तक आर्थिक सुशासन को सियासी समर्थन नहीं हासिल होगा तब तक गरीबी और अमीरी की खाई बढ़ती जायेगी। वास्तव में शीर्ष सियासी नेतृत्व शासन का मापदंड तय करता है और यदि यह मापदंड छोटा है तो भ्रष्टाचार शासन को भ्रष्ट कर देगा।

पिछला वर्ष सरकार की इसी लाचारी का प्रमाण है। चारों तरफ भ्रष्टाचार व घोटालों की गूंज रही। अब जरूरी है हमारे महत्वपूर्ण संस्थानों को राजनीतिक नियंत्रण से बाहर कर सरकार वर्ष 2011 को एक यादगार वर्ष के रूप में जनता के सामने रखे ताकि आम आदमी की जीवन शैली में खुशी का संचार हो। देश भ्रष्टाचारियों के चंगुल से बाहर निकल सके और महंगाई की मार से त्रस्त जनता को सुख व चैन की सांस लेने का मौका मिल सके।

जयश्री टी. कंपनी, चौधरी बाजार,
नन्दीशाही, कटक-1 (उड़ीसा)

www.terapanthinfo.com

सन्तान के प्रति हमारा दायित्व

गिरिजा 'सुधा'

सन्त तिरुवल्लूवर चेन्नई के समीप एक पाण्डाल में प्रवचन करते थे। वे बहुत ही सरल भाषा में अपनी बात श्रोताओं को उदाहरणों सहित कहते, जिससे कि श्रोता उस बात को अच्छी तरह समझ लें। प्रवचन के बाद वे अपने ठहरने के स्थान पर श्रद्धालुओं को जीवन के लिए सुंदर सलाह देते रहते थे। वह सीख बहुत व्यावहारिक तथा सरल होती थी।

एक दिन प्रवचन के बाद वार्तालाप के समय एक बहुत बड़े उद्योग का मालिक वहां आया। वह बहुत परेशान-सा लग रहा था। उसने संत के चरण-स्पर्श कर हाथ जोड़कर कहा ''गुरुदेव! मैं आपसे [illegible] करना चाह[illegible] कृपा कर[illegible] घंटे का [illegible] मेरी [illegible] को [illegible]

अपने पुत्र को बात-बात पर झिड़किये मत। वह नुकसान करे तो भी कुछ मत कहिये। समय की नजाकत समझकर वह अपने आप संभलता जाएगा। यह अनुभव ही उसे कारोबार को ठीक से चलाने के [illegible]र देगा। वह आपके प्यार का, दुलार [illegible] स्वागत करेगा। आपको उसे [illegible] कर जीवनोपयोगी संस्कार, [illegible]ाह देना चाहिए।

[illegible] संत[illegible] [illegible]ष्य [illegible]वन में [illegible] हैं और दुःखों के [illegible] हम अपने प्रयत्नों से उन्हें धराशायी कर डालते हैं।''

''आपकी बात ठीक है, संतजी। पर मैं अपनी समस्या एकान्त में ही बताना चाहता हूं।'' उन्होंने फिर कहा।

संतजी ने मुस्कराकर कहा ''आप परेशानी का टोकरा सिर पर से उतार कर यहां रख जाइये। रही बात एकांत की तो एकांत है कहां जीवन में। हम जहां भी बात करेंगे आप, मैं, सूरज [illegible], हवा होगी, प्रकाश [illegible]ाधु का कोई एकांत [illegible] एकांत की कोई [illegible] है। फिर आपकी स[illegible]स्या दूसरों की भी हो[illegible] भी आपको बताया स[illegible]र अपनी परेशानी दूर क[illegible] इसलिए आप यहीं पर [illegible] बताइए। मैं धैर्यपूर्वक सु[illegible]भव होगा उन्हें निवारण क[illegible]गा।''

[illegible]माते हुए करुण स्वरों में अपनी बात कहने लगे ''गुरुदेव! मेरा एक ही पुत्र है। पढ़ा-लिखा है। मैंने उसके लिए दिन-रात खटखट कर अपार दौलत, कई छोटे-बड़े उद्योग स्थापित किये। पर वह पढ़ा-लिखा नालायक, निगुरा निकला। खुद तो कुछ करता नहीं। दिन-रात आवारा दोस्तों से घिरा रहता है। तरह-तरह से मेरी अर्जित पूंजी को आग लगा रहा है। हर तरह के दुर्व्यसन करने में वह आगे रहता है। यही चलता रहा तो वह मेरी खरी कमाई को मेरी आंखों के सामने ही फूंककर हम

www.terapanthinfo.com

मिया-बीबी को भीख मांगने को विवश कर देगा। स्वामीजी कुछ कीजिए ताकि मैं अपने ही खून के हाथों लुट नहीं जाऊँ।'' कहते-कहते वे सिसक-सिसक कर रो उठे। संतजी के चरणों में सिर रखकर आंसू टपकाने लगे।

तिरुवल्लूवरजी ने उनकी पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा ''अरे सेठ रमाकांतजी, उठो! मेरी बात का उत्तर दो। बात अभी बिगड़ी नहीं है। सबकुछ आपके हमारे पास ही है। सब ठीक हो जाएगा।''

सेठ आश्वस्त हो आंसू पौंछकर उठे। तभी संतजी ने पूछा ''आपके स्वर्गवासी पिताजी ने आपके लिए कितना धन छोड़ा था?''

रमाकान्त बोले ''स्वामीजी! सच-सच कहता हूं। उन्होंने तो मुझे घर बार के अलावा कुछ नहीं दिया। हां रोजी-रोटी कमाने के साधन दिये थे। मैंने उनसे ही यह सारा अर्जित किया है जिसे मेरा बेटा घर फूंक तमाशा दिखलाने पर उतर आया है।''

संतजी ने कहा ''अरे भाई रमाकांतजी। आपकी समस्या तो पहाड़ नहीं, पहाड़ी भी नहीं। छोटी-सी है। इसका उत्तर भी, समाधान भी आपके उत्तर में ही छिपा रखा है आपने।''

''वह कैसे स्वामीजी।'' पूछा।

''रमाकान्तजी बुरा मत मानना। मैं खरी-खरी कहने को मजबूर हूं। इसलिए सुनिए। गलती आपके पुत्र की नहीं बल्कि आपकी है। आपके पिता तथा आपमें एक मूलभूत अन्तर है। आपके पिताजी चतुर थे। उन्होंने आपको दौलत के नाम पर प्रत्यक्षतः कुछ भी नहीं दिया, किन्तु कमाने के गुर सिखाये। जो भी संभव हुआ वे साधन दिये। आपको अच्छे संस्कार देकर क्षमतावान बनाया, जिससे आपने इतनी बड़ी सम्पदा जुटायी। पर जुटाने के चक्कर में आप चूक गये। अपनी संतान को अच्छे संस्कारों की सम्पदा प्रदान नहीं की। सोना, चांदी, बड़े-बड़े उद्योग, धन, दौलत तो जुटायी पर उसकी संगत किन लोगों की है, यह ध्यान नहीं दिया। यही आपकी परेशानियों का मूलभूत कारण है। है कि नहीं।''

रमाकांतजी ने 'हां' कहने की बजाय सिर हिलाकर सहमति जतायी। बोले ''तो अब क्या करूं गुरुदेव।''

''आप उसे मेरे पास ले आइयेगा। वह अभी भी इतना गिरा नहीं है। अच्छा-बुरा समझता है। वह आपका नाम रोशन करेगा।''

''ठीक है गुरुदेव।'' वे बोले।

तभी स्वामीजी बोले ''रमाकांतजी। बच्चे प्यार चाहते हैं, पैसा नहीं। अच्छे संस्कार, योग्यता, क्षमता तथा सात्विक परिवेश से व्यक्ति अच्छे गुणों का मालिक बनता है। वह स्वावलम्बन से, निर्धनता से सम्पन्नता की तरफ बढ़ता जाता है। कुछ ठोकरें खाकर वह सीखता भी है। यदि ऐसा नहीं होता है तो वह दूसरी राह पर चलकर अराजक तत्वों के हाथों का खिलौना बन जाता है। आप उसे मेरे पास भेजिये।''

''ठीक है गुरुदेव।'' कहकर वे प्रणाम कर चल दिये। तभी कुछ मित्रों के साथ उनका पुत्र भी गुरुजी के दर्शन करने आया। गुरुजी ने उनको स्वावलम्बन, स्वदेशी भावना, आत्म-विकास, संतान के गुणों की चर्चा की। धीरे-धीरे वह उद्योगों का काम संभालने लगा। परिवार वालों की उससे जो भी शिकायतें थीं। वे अब नहीं रहीं।

एक दिन रमाकान्तजी कई तरह के उपहार लेकर संतजी के पास पहुंचे और सामान तथा पर्याप्त धनराशि चरणों में अर्पित कर बोले ''गुरुदेव! आपके श्रीचरणों के प्रताप से मेरा खोया हीरा वापिस मिल गया। आपकी कृपा बनी रहनी चाहिए।''

संतजी बोले ''यह दौलत, यह उपहारों का पुलन्दा हमारे काम का नहीं है। इसे जरूरतमंदों में बंटवा दीजिए और अपने पुत्र को बात-बात पर झिड़किये मत। वह नुकसान करे तो भी कुछ मत कहिये। समय की नजाकत समझकर वह अपने आप संभलता जाएगा। यह अनुभव ही उसे उद्योगों को ठीक से चलाने के संस्कार देगा। वह आपके प्यार का, दुलार का सदा स्वागत करेगा। आपको उसे प्रोत्साहित कर औद्योगिक तथा जीवनोपयोगी संस्कार, सलाह देना चाहिए।''

अनन्तरामजी प्रणाम कर उपहार बांटने चल दिये। उन्हें संतजी ने जीवन में उन्नति का पाठ जो पढ़ाया था, उसे हम भी समझें। अच्छी बातें पढ़ें, सुनें, समझें जीवन में काम में लें।

कविता मिष्ठान भंडर के पीछे, बोयतावाला
पो. : नीदड़-बैनाड़, व्हाया झोटवाड़ा
जयपुर - 302012 (राजस्थान)

केवल पुस्तक पढ़ाने वाला अध्यापक अपने बच्चों को साक्षर तो बना सकता है, शिक्षित नहीं बना सकता।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-**कोलकाता**-700019

● दूरभाष : 22809695

गांवों की दयनीय दशा

मुनि जयंतकुमार

पदयात्रा मुनिचर्या का महत्त्वपूर्ण अंग है। मैं वर्ष के अर्धांश दिनों में पदयात्रा पर रहता हूं। पिछले दिनों राजलदेसर में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में सम्पन्न हुए मर्यादा महोत्सव का साक्षी बनकर लाडनूं पहुंचा। लाडनूं तहसील कार्यालय है। यह भूमि जैन विश्व भारती के रूप में विश्वविख्यात और लोहपुरुष आचार्य तुलसी के कारण चर्चित है। जैन विश्व भारती में त्रिदिवसीय प्रवास के दौरान महामहिम राज्यपाल शिवराज पाटिल एवं साहित्यकार राजेश व्यास जैसी विभूतियों से मिलने का, बातचीत करने का अवसर मिला। वहीं कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी के सुपुत्र अभिनव सिंघवी से भी परिचय हुआ। युवा खून, जोश से सराबोर, विनम्र स्वभाव देखने को कम मिलता है। अभिनव से बातचीत करने के बाद लगा आज भी भारत की संस्कृति, शालीन परंपरा युवाओं को प्रभावित करती है और यही प्रभाव देश को फिर विश्व गुरु का दर्जा दिला सकता है। इस संदर्भ में लेखनी में प्राण फूंकने में माहिर जयपुर निवासी राजेश व्यास से भी चर्चा हुई। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों को युवाओं की दिशा बदलने में बहुत महत्वपूर्ण बताया। मैंने भी इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए आचार्य महाप्रज्ञ की एक कृति जो सहता है वही रहता है तैयार की। जो पाठकों को बहुत आकर्षित कर रही है, प्रिंट मीडिया में उसकी समीक्षाएं प्रकाशित हो रही है। व्यासजी युवाओं को देश की अनमोल धरोहरों, पर्यटन स्थलों से लेखनी के द्वारा रूबरू कराने का प्रयास करते रहते हैं।

हम ऐसे ही बहुमूल्य विचारों को लेकर लाडनूं से रवाना हुए। छोटी खाटू में आचार्य महाश्रमण से विदा लेकर श्रद्धा के केन्द्र आचार्य भिक्षु समाधि स्थल सिरियारी जाने के लिए विहार किया। हम मंजिल दर मंजिल प्रतिदिन बढ़ रहे थे। हमने ऐसे गांवों, ढाणियों में भी प्रवास किया जहां लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उनके फटे-पुराने कपड़ों को देख ऐसा लगा देश कहां जा रहा है। क्या इन्हें देखकर कहा जा सकता है कि देश विकास कर रहा है? क्या इनकी दयनीय स्थिति का पता उन सत्ता का सुख भोगने वालों को ज्ञात होता है? क्या देश का संचालन करने वाले राजनीतिज्ञों, अर्थनीति के निर्धारण में अहम् भूमिका निभाने वाले पूंजीपतियों को जैन मुनियों की तरह पदयात्रा करते हुए गांव-गांव का भ्रमण नहीं करना चाहिए। जब इन लोगों के द्वारा गांवों की जीवनशैली का अहसास किया जायेगा तभी गांवों में बसती देश की आत्मा को पहचाना जायेगा। और गरीबी-अमीरी के बीच बढ़ती खाई को पाटने का प्रयास होगा। जहां तक मेरे ध्यान में है सरकार के द्वारा गांवों की स्थितियों का जायजा नहीं लिया जाता। इसका प्रमाण है यहां के सरकारी विद्यालय। इन विद्यालयों में बच्चे आते हैं पर ऐसा देखने को नहीं मिलता कि वे गंभीरता के साथ पढ़ाई करते हों। बच्चे आते हैं, प्रार्थना होती है, कक्षाओं में बच्चे आपस में मस्ती करते रहते हैं। अध्यापक अपने कक्ष में गप्पे मारते रहते हैं। पोषाहार का समय होता है तो बच्चे खा लेते हैं। उसके बाद या तो घर के लिए रवाना हो जाते हैं या स्कूल में इधर-उधर घूमते रहते हैं। सबसे पहले यह अपेक्षित है कि इस पर नियंत्रण किया जाये, जो बच्चे स्कूल में आते हैं उनको ढंग से शिक्षित किया जाये। उसके बाद उन पर ध्यान जाना चाहिये जो स्कूल में नहीं आते, स्कूल की उम्र पार कर चुके हैं एवं दो जून की रोटी के लिए तरसते रहते हैं। जब इन पर ध्यान जायेगा तभी भारत विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होगा।

समस्या सामने हैं पर समाधान क्या हो? यह एक ज्वलंत प्रश्न है। मेरे अनुसार इसके समाधान के लिये एक ऐसा अर्थशास्त्र तैयार किया जाये जो केवल पूंजीपतियों का ही ख्याल न रखे बल्कि गांवों में वास करने वाली आम जनता का भी ध्यान रखे। अभी वित्तमंत्री प्रणव मुखर्जी ने बजट प्रस्तुत किया। वह लोक-लुभावना था पर उसमें केवल बड़े व्यापारिक जनों का ही ध्यान रखा गया है। अगर वित्तमंत्री एक वर्ष पूर्व आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा देश के शीर्षक नेताओं को भेजे गये पत्र पर ध्यान देते तो शायद यह बजट कुछ अलग होता। आचार्य महाप्रज्ञ ने तीन सुझाव दिये थे, उसमें एक था क्या उपभोग पर कर का प्रयोग हो सकता है? क्योंकि आज उपभोगवाद ज्यादा बढ़ गया है। उसके अनुपात में उत्पादन 35 प्रतिशत ही होता है। इसलिये पदार्थों की आपूर्ति सबके लिये नहीं हो पाती और महंगाई बढ़ती जा रही है। **महंगाई पर नियंत्रण करने के लिये उपभोग का संयम आवश्यक है। यह संयम का सूत्र लेकर ही आचार्य महाप्रज्ञ ने सापेक्ष अर्थशास्त्र के रूप में एक नई अवधारणा प्रस्तुत की है। इस अवधारणा में उन्होंने केवल अर्थ के दृष्टिकोण पर ही दृष्टिपात नहीं किया है अपितु इसके साथ-साथ मानवीय मूल्यों, पर्यावरण की चेतना एवं आध्यात्मिक मूल्यों को जोड़कर मानव केन्द्रित दृष्टि प्रदान की है। वित्तमंत्री को इस पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये और समाधायक सूत्रों को अपनाकर देश की अर्थनीति को नई राह देनी चाहिये।**

कमजोर करती है व्यर्थ की तुलना

सत्यनारायण भटनागर

परमेश्वर ने इस सृष्टि का निर्माण किया है। इस निर्माण में एक अनूठापन है। इस सृष्टि के सृजन में प्रकृति और प्राणी मात्र की चेतना सम्मिलित है। प्रकृति और चेतना में सृजन इस तरह हुआ है कि इसकी हर निर्मित लगती भले ही एक जैसी हो पर उसमें भिन्नता भी है। किसी वृक्ष के पुष्प, पत्र और फल एक जैसे दिखते हों पर उनमें भिन्नता भी है। इसी तरह प्रत्येक मनुष्य की बनावट, स्वर, स्वभाव, क्षमता, गुणधर्म और योग्यता अलग-अलग होता है। ऋग्वेद में कहा गया है "मनुष्य के दोनों हाथ एक से हैं परन्तु उनकी कार्यशक्ति एक सी नहीं होती। एक ही मां की संतान दो गाय, एक जैसी होने पर भी एक जैसा दूध नहीं देती। एक साथ उत्पन्न दो भाई भी समान बल वाले नहीं होते। एक वंश की संतान होने पर भी दो व्यक्ति एक जैसे दाता नहीं होते।" उपरोक्त भिन्नता होते हुए भी हम देखते हैं कि इस संसार में एक-दूसरे से तुलना की जाती है। यह तुलना किसी को बड़ा, महान और किसी को अपने से तुच्छ समझती है। यह तुलना ही प्रतियोगिता का रूप ग्रहण करती है। वास्तव में देखा जाए तो भगवान के सृजन में प्रत्येक मनुष्य अनूठा है। किसी की किसी से तुलना हो ही नहीं सकती। सब अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार इस संसार सागर में अपना रोल निभाते हैं। इसमें छोटे-बड़े का प्रश्न ही नहीं है।

तुलना से हानि : लेकिन हम देखते हैं कि वास्तविक जीवन में प्रत्येक क्षण हम अपने आसपास स्थित प्राणी मात्र से अपनी तुलना करते हैं और हर व्यक्ति अपने बडप्पन को स्थापित करने में लगा रहता है। इसी के फलस्वरूप गला काट प्रतियोगिता चलती रहती हैं। आज हम समझते हैं कि यह प्रतियोगिता आधुनिकता का आवश्यक तत्व है और यह प्रगति और विकास का सूचक है किन्तु वास्तव में प्रतियोगिता के फलस्वरूप हम या तो अपने को किसी से आगे मानते हैं या किसी के पीछे समझते हैं। यदि हम किसी से आगे हैं तो उसका अहंकार हमारे अंदर पनपता है और यदि पीछे है तो इर्ष्या-द्वेष पनपता है। जबकि वास्तविकता में न कोई आगे होता है न पीछे। यह प्रकृति का खेल होता है जो हमें खिलाती रहती है इसमें हमारे मन का प्रमुख भाग रहता है।

प्रतियोगिता की इस रस्साकशी में हमारा ध्यान सदा दूसरे पर होता है वह हमारे आगे है या पीछे, जहां भी है, उससे आगे जाना है। फलस्वरूप हम अपने आप पर ध्यान नहीं देते। सदा दूसरे के मापदण्ड से अपने को नापते हैं, इससे हमारी शक्ति का अपव्यय होता है। हम अपने आपको कड़ी प्रतियोगिता में लगाए रखते हैं। फलस्वरूप जल्दी थकते हैं। कर्म का जो संतोष और आनन्द हमें मिल सकता था, उससे हम वंचित रह जाते हैं।

प्रतियोगिता की इस गलाकाट दौड़ में हम सदा अपने पीछे किसी को पाते हैं। हमेशा भयभीत रहते हैं कि वह हमसे आगे न निकल जाए। हम अपने पीछे वाले को खतरा समझते हैं। फलस्वरूप उसके साथ हम सहकार की कल्पना भी नहीं करते। जो आनन्द सहयोग-सहकार से मिल सकता है। उससे हम वंचित रह जाते हैं। हम हमेशा खतरा अनुभव करते हैं।

इस आगे बढ़ने के लिए हम किसी को धोखा दे सकते हैं। किसी को गिरा सकते हैं, किसी को धक्का दे सकते हैं अर्थात् जीवन में जो सुख आनन्द के लिए नैतिक तत्व आवश्यक है, उन्हें तिलांजलि दे देते हैं। हम स्वयं महत्वाकांक्षा की आग में जलते रहते हैं। इन तथ्यों का बड़ा विषद विवरण श्रीमद् भगवद् गीता के अध्याय 16 में आसुरी सम्पत्ति के रूप में भगवान श्रीकृष्ण ने किया है। भगवान कहते हैं "कभी पूरी न होने वाली कामनाओं का आश्रय लेकर दम्भ, अभिमान और मद में चूर रहने वाले तथा अपवित्र व्रत धारण करने वाले मनुष्य मोह के कारण दुराग्रहों को धारण करके संसार में विचरते रहते हैं। वे मृत्युपर्यंत रहने वाली अपार चिंता का आश्रय लेने वाले पदार्थों का संग्रह और उसका भोग करने में ही लगे रहने वाले और जो कुछ है वह इतना ही है ऐसा निश्चय करने वाले होते हैं।" भगवद् गीता में आगे असुरी वृत्ति के पुरुषों की भौतिक जगत पर विजय प्राप्त करने के लिए मन ही मन योजनाएं बनाने तक का वर्णन है। इस वर्णन से यह स्पष्ट है कि तुलना करने, प्रतियोगिता करने की यह प्रवृत्ति मानव में हजारों वर्ष पूर्व से विद्यमान थी।

इस प्रकार प्रतियोगिता और आपसी तुलना में मग्न रहने वाले भागते-दौड़ते अंत में थक हार कर बैठ जाते हैं। उनके हाथ खाली के खाली रह जाते हैं। वे दोष दृष्टि, झूठ, पाखण्ड के शिकार हो, असंतोष, तनाव, विवादों के कारण डिप्रेशन के शिकार हो जाते हैं। वे कभी-कभी असफल होने पर हताश हो आत्महत्या भी कर बैठते हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि कर्मों को कामनाओं, इच्छाओं और स्वार्थवश करने वाले अन्त में आनन्द को प्राप्त नहीं होते।

तुलना न करने के लाभ : आज के इस युग में जहां सफलता के मापदण्ड भौतिक प्राप्तियां हैं वहां यदि प्रतियोगिता न की जाए, दूसरों से तुलना न की जाए तो क्या सफल जीवन यापन किया जा सकता है? यह एक प्रश्न है?

हमने प्रारंभ में ही विवेचन किया कि इस सृष्टि में ईश्वर ने हर सृजन अनूठा किया है। प्रत्येक व्यक्ति को एक स्वभाव, योग्यता गुणधर्म दिए हैं जिसके अनुसार उसे संसार की स्टेज पर अपना अभिनय करना है। व्यक्ति यदि उसे दी गई भूमिका अदा करने को तत्पर हो तो प्रतियोगिता का प्रश्न ही नहीं है। हर व्यक्ति के कर्त्तव्य निश्चित हैं। अपने कर्त्तव्य को सम्पूर्ण निष्ठा से सम्पन्न करने पर संतोष-आनन्द तो अपने आप प्राप्त होगा। श्रीमद् भगवद् गीता में इसे स्वधर्म कहा है। भगवान कृष्ण कहते हैं कि "अच्छी तरह अनुष्ठान किए हुए परधर्म से गुण रहित अपना धर्म श्रेष्ठ है। कारण कि स्वभाव से नियत किए हुए स्वधर्म को करता हुआ मनुष्य पाप को प्राप्त नहीं होता।" वे आगे कहते हैं, "हे कुन्तीनंदन! दोषयुक्त होने पर भी

सहज कर्म का त्याग नहीं करना चाहिए क्योंकि सम्पूर्ण कर्म धुएं से अग्नि की तरह दोषयुक्त हैं।'' जब हम प्रकृति द्वारा प्रदत्त अपने स्वभाव के अनुसार कार्य करते हैं तो उसमें हमारा मन लगता है। हममें लगन होती है। हमें कार्य से संतोष मिलता है ऐसे कार्य में थकान नहीं आती। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कहते हैं, ''काम करने पर भी उसका बोझ न लगे यह अनासक्ति का रूप है।'' इस प्रकार कार्य करना भगवान को पूजना है। हमारे कर्म पुष्पों के रूप में भगवान के चरणों में अर्पित किए जाते हैं। भागवत में कहा गया है ''यह संसार भगवान का पहला अवतार है।'' इस संसार का कामना रहित स्वार्थ रहित पूजन ही हमारे कल्याण का कारक है।

क्या इस प्रकार कर्म करने से हम संसार की प्रतियोगिता में पिछड़ तो नहीं जाएंगे? यह डर हमें सताता रहता है। इस संबंध में अनुभव यह है कि प्रारंभ में धीमी गति का भान हो सकता है पर अपने में मग्न निरंतर ईश्वर के लिए कामना रहित होकर किए गए कार्य की गति तीव्र से तीव्रतर होती चली जाती है। इसमें प्रतियोगिता न होने से हम सहयोग और सहकार में सहभागी बनते हैं। हम पर विश्वास किया जाता है। हम अकेले नहीं होते। हमारा कारवां बढ़ता जाता है। इसमें अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष का प्रश्न ही नहीं रहता। इसमें विनम्रता, प्रेम, अपनत्व, त्याग जैसे गुण पनपते हैं।

वास्तव में यह कर्म कौशल ऐसा है जैसे मछली पानी में तैरे। बच्चे आनन्द में किलकारी मार कर खेलें। जैसे पक्षी हवा में झूले या किसी वृक्ष पर चुपचाप एक पुष्प खिले। जैसे सूरज आकाश में निकले और हम कर्मरत हों। अपने स्वभाव के अनुसार कर्म किए नहीं जाते वरन अपने आप होते हैं। हम अहंकार पाले रहते हैं इसलिए हम सोच ही नहीं सकते कि ऐसा हो भी सकता है।

क्या यह व्यवहारिक जगत में संभव है? : यह एक ऐसा प्रश्न है जो पूछा जा सकता है। इसके उत्तर में निसन्देह कहा जा सकता है कि हां यही संभव है। इस संसार में जो भी श्रेष्ठतम हुआ है वह इसी मार्ग से हुआ है। आज तक सफलता के शिखर पर जो भी पहुंचा है वह इसी मार्ग से पहुंचा है। चाहे वह हिलेरी हो जो हिमालय पर विजय पताका फहरा सका या स्वामी विवेकानन्द हो जो भारतीय संस्कृति का परचम दुनिया में फैला सके। महात्मा गांधी का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

इन उदाहरणों का यदि सूक्ष्म अध्ययन किया जाए तो पता चलेगा कि इनका मार्ग भी निर्विघ्न नहीं रहा। स्वामी विवेकानंद के विरुद्ध विदेशों में भारतीय विद्वानों ने ही द्वेषवश कुप्रचार किया किन्तु उस प्रचार का न तब कोई प्रभाव हुआ और न आज वह कहीं दिखाई देता है। **महात्मा गांधी के विरुद्ध तो पूरा ब्रिटिश शासन और निहित स्वार्थी तत्व थे पर उनका मार्ग प्रतियोगिताविहीन था। प्रेम अपनत्व भरा था, कामना अैर स्वार्थ रहित था। इसलिए सहयोग-सहकार का कारवां बढ़ता गया। हम उन्हें आज ससम्मान याद करते हैं। हमारे समय में ही त्याग-प्रेम और सहयोग की प्रतिमूर्ति मां टेरेसा हुई है। उन्होंने अकेले ही अपना कार्य प्रारंभ किया और निरंतर कामना रहित वे प्रेम लुटाती चली गयी।** वे संत हो गईं। उनका स्वाभिमान विराट रूप लेता गया। ऐसा नहीं है कि उनका विरोध न हुआ हो, उनके भी आलोचक थे पर वे निरंतर कर्मरत रही। हिलेरी हिमालय पर सहज नहीं चढ़ पाए पर वे निरंतर कर्मरत रहे और विजयश्री प्राप्त की। उपरोक्त समस्त उदाहरणों से ऐसा लग सकता है कि साधु-संतों के लिए यह मार्ग है किन्तु ऐसा नहीं है। दुनिया में जितने भी शीर्षस्थ उद्योगपति आज सुने जाते हैं, उनका सूक्ष्म अध्ययन यह बताता है कि उन्हें यह स्थान प्रतियोगिता से नहीं, प्रेम अपनत्व और सहयोग से मिला। कुछ नाम हम याद करें। अमेरिका के कार निर्माता फोर्ड हो या आज के बिल गेट्स या वारेन बूफेट इन सबके अपने सहयोगियों को प्रोत्साहित किया कि वे निर्माण के क्षेत्र में आगे आए। इन सहयोगियों ने इनके कारखानों में कार्य किया, शिक्षण लिया, अनुभव प्राप्त किया और अपना नया कारोबार प्रारम्भ किया। इन उद्योगपतियों ने इस कारोबार में भी सहयोग दिया। प्रतियोगिता, ईर्ष्या-द्वेष और अहंकार से आज तक कोई महान नहीं हुआ है। श्रेष्ठतम जो कुछ उपलब्ध है। वह सहयोग, त्याग और अपनत्व के कारण ही प्राप्त हुआ है।

भारत में भी उद्योगपति इस मार्ग को अपनाया। भारत में अम्बानी समूह इसका ताजा उदाहरण है। अजीत प्रेमजी का नाम तो परोपकारी कार्यों के लिए उल्लेखित किया गया है। सफलता का एक ही मार्ग है प्रेम, अपनत्व और त्याग का मार्ग।

प्रतियोगिता से क्या हो सकता है? : हम सबका अनुभव तो प्रतियोगिता का है। हम एक-दूसरे से तुलना कर रोज दुःखी होते हैं कि उसकी कमीज मेरी कमीज से सफेद कैसे? ऐसे में यह विचारणीय है कि हम सोचें कि प्रतियोगिता से क्या मिल सकता है?

हम सबका अनुभव है कि प्रतियोगिता से एक छोटी-बड़ी परचून की दुकान, होटल या कारखाना प्रारंभ कर जीविका अर्जित तो की जा सकती है पर उल्लेखनीय कुछ नहीं हो सकता।

प्रश्न उद्देश्य का है : किसी भी कार्य का उद्देश्य क्या है? यह मूल प्रश्न है। जीविका अर्जन तो सभी करते हैं किन्तु महानता को वह प्राप्त होता है जो परोपकार की आधारशिला पर अपने को तौलते हैं। उदाहरण के लिए वे ही उद्योगपति सफलता के शीर्ष पर पहुंचे जिन्होंने सोचा 1. कम मूल्य पर सर्वश्रेष्ठ उत्पादन समाज को कैसे दिया जाए। 2. अधिक से अधिक रोजगार कैसे सृजित हो। 3. अपना लाभांश सहयोगियों में वितरण हो। 4. जो सहयोगी योग्य और दक्ष है उनको कैसे आगे बढ़ाया जाए। 5. राष्ट्र के लिए क्या योगदान दिया जाए। हम देखते हैं कि पश्चिम के पूंजीपतियों ने अपने अर्जन का अधिकतम दान विश्व की परियोजनाओं के लिए किया है। भारत में भी दानवीर कर्ण प्रसिद्ध है। भामाशाह आज भी सम्मान से याद किए जाते हैं।

अहंकार का प्रश्न नहीं : भगवान के राज्य में अहंकार के लिए स्थान नहीं है। हाथी विशाल है इसमें उसका योगदान नहीं है और चींटी छोटी-सी है इसलिए शर्म का कोई कारण नहीं है। हम सब प्रकृति के रंगमंच पर नाटक के पात्र हैं और हमें चाहिए कि जो भी पात्र का रोल हमें मिला है उसका निर्वाह उत्तम ढंग से परमपिता परमेश्वर को प्रसन्न करें।

2, एम.आई.जी. देवरादेव नारायण नगर, रतलाम (म.प्र.) 457001

सहिष्णुता अहिंसा की जननी

रूपनारायण काबरा

सुख, शान्ति, जीवन और विकास का मूलमंत्र है मनसा-वाचा-कर्मणा-अहिंसा। हिंसा से समस्या का समाधान नहीं होता है और शान्ति स्थापना का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। हिंसा विनाश का, कष्ट और विद्रोह का मार्ग है, हिंसा से दबाई गई समस्या अन्दर ही अन्दर सुलगती रहती है और समय पाकर भयंकर विस्फोट के साथ भड़कती है।

महावीर, ईसा मसीह, गौतम, गांधी सभी महापुरुषों ने अहिंसा के महत्व एवं जीवन में इसकी अपरिहार्यता को जीव मात्र के लिए स्वीकारा है। विश्व में शान्ति, बन्धुत्व एवं विकास को समर्पित विश्व संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ भी शान्ति, सहिष्णुता और अहिंसा की समर्थक, पोषक, पक्षधर एवं संरक्षक है। सहिष्णुता के बिना अहिंसा की कल्पना सारहीन है। वस्तुतः सहिष्णुता बीज है और अहिंसा उत्पाद, सहिष्णुता अहिंसा का पर्याय ही तो है। असहिष्णुता अस्वीकृति को जन्म देती है और यह अस्वीकृति ही राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक, जातीय एवं रंगभेद इत्यादि विभिन्न विवादों का कारण बनती है और परिणाम होता है हिंसा। इसी सत्य को स्वीकारते हुए यूनेस्को द्वारा पहल किये जाने पर विश्व संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 1995 को 'अंतर्राष्ट्रीय सहिष्णुता वर्ष' घोषित किया था विश्व संचेतना हेतु और यूनेस्को ने संसार के सभी स्कूलों में पढ़ाये जाने हेतु (थ्रेशोल्ड ऑफ पीस) अर्थात् ''शान्ति का प्रवेश द्वार'' पुस्तक भी प्रकाशित की थी। इसके अतिरिक्त विश्व के छह सुविख्यात कलाकारों ने सहिष्णुता के प्रतीक छह झंडे भी बनाये थे। और 16 नवम्बर 1995 को 'सहिष्णुता के सिद्धांतों की घोषणा पूरी गंभीरता एवं निष्ठा के साथ यूनेस्को द्वारा स्वीकारी गई और 1996 में संयुक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा के सामने इसे प्रस्तुत किया गया एवं स्वीकारा गया।

सहिष्णुता के सिद्धांतों की विषय वस्तु कुछ इस प्रकार है

● **सहिष्णुता से तात्पर्य है विश्व की सांस्कृतिक विविधता हमारी अभिव्यक्ति के विभिन्न रूप और इन्सानी तौर-तरीकों के प्रति समादर, स्वीकृति एवं गुण-ग्रहण भाव। सहिष्णुता प्रवृत्ति/भाव ज्ञान, खुलापन, संवाद, विचार-स्वातंत्र्य तथा विवेक एवं आस्था से पोषित होते हैं। सहिष्णुता ही वह विशेषता है जो युद्ध की संस्कृति को शान्ति की संस्कृति से प्रतिस्थापित करती हैं।**

● सहिष्णुता कोई रियायत, कृपा, एहसान अथवा स्वार्थ नहीं है। यह तो एक सचेष्ट, सकारात्मक दृष्टिकोण है जो मानव अधिकारों एवं मूलभूत मूल्यों में आस्था से निर्देशित होता है। सहिष्णुता व्यक्ति, समुदाय एवं राज्य सभी के लिये पालनीय है।

● सहिष्णुता मानव अधिकारों, विविधताओं, प्रजातंत्र एवं कानून के पालन के प्रति एक दायित्व भाव है। यह कट्टरता एवं निरंकुशता को नकारती है और अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकारों के दस्तावेज को स्वीकारती है।

● मानव अधिकारों के प्रति समादरभाव रखते हुए भी सहिष्णुता सामाजिक अन्याय अथवा दूसरों की मान्यताओं पर प्रहार को नहीं स्वीकारती है। इसका तात्पर्य है कि सभी को अपनी-अपनी आस्थाओं को मानने का पूरा हक है। सहिष्णुता यह मानकर चलती है कि मानव समाज में रूप, रंग, व्यवहार, मूल्य, रीति-रिवाज, धर्म इत्यादि के संदर्भ में विभिन्नताओं सहित शान्ति के साथ रहने का अधिकार है। किसी को भी अपने विचार और मान्यता को दूसरे पर थोपने का कोई अधिकार नहीं है।

● राज्य/सरकार के स्तर पर सहिष्णुता से अपेक्षा है न्यायोचित एवं पक्षपात रहित विधान/संविधान एवं कानून के क्रियान्वयन तथा न्यायिक एवं प्रशासनिक प्रक्रिया की। प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के आर्थिक एवं सामाजिक समान अवसर प्रदान किया जाना भी इसी प्रक्रिया एवं व्यवस्था के अंतर्गत है। किसी पर ज्यादा और किसी पर कम ध्यान देना हताशा, कुंठा, शत्रुता एवं कट्टरता को जन्म देती है।

● एक सहिष्णु समाज की संरचना हेतु सरकार/प्रशासन को चाहिये कि परम्परा से चले आ रहे विधान में अपेक्षित परिवर्तन करें, जिससे सभी समुदायों एवं व्यक्तियों के प्रति व्यवहार एवं अवसर में समानता हो। इस सत्य को सरकार को पूरी तरह समझना है और सभी को पूरी तरह स्पष्ट भी कर देना है, जागरूक कर देना है कि सहिष्णुता के बिना शान्ति संभव नहीं और शांति के बिना लोकतंत्र का विकास संभव नहीं है।

● अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक समुदायों में पारस्परिक मेल-जोल हो और यह तभी संभव है जब प्रशासन की निगाह में सब समान हों।

● यह भी समझना और समझा देना आवश्यक है कि हिंसा से समस्या का समाधान नहीं होता है बल्कि केवल प्रतिशोध

का दुष्चक्र प्रारंभ हो जाता है जिसे अन्ततः सहिष्णुता एवं अहिंसक तरीके से समाप्त किया जा सकता है।

● सामाजिक स्तर पर सहिष्णुता की जितनी आवश्यकता आज है उतनी पहले कभी नहीं रही। आज हम वैश्वीकरण की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं, बदलती अर्थव्यवस्था और द्रुतगति से विकसित हो रही संचार व्यवस्था से पारस्परिक निर्भरता, आवागमन, सामाजिक व्यवस्थायें, स्वरूप एवं संरचना प्रभावित हो रहे हैं।

● सहिष्णुता व्यक्ति, परिवार एवं समुदाय सभी स्तर पर आवश्यक है। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में पारस्परिक सहिष्णुता, दृष्टिकोण की विशालता की शिक्षा और वातावरण प्रदान किया जाना है, घर और कार्यस्थल पर भी सहिष्णुता की भावना विकसित की जानी है। मीडिया की भूमिका अत्यन्त प्रभावी होती है, उसे भी इस दायित्व के प्रति सजग होना है।

● सही शिक्षा असहिष्णुता को रोकने का सबसे प्रभावी साधन है। पहला कदम तो यही है कि स्वयं के और दूसरों के अधिकारों के बीच सामंजस्य, समझ एवं स्वीकृति हो। दूसरे के अधिकारों का सम्मान करना और संरक्षण दिया जाना आवश्यक है। सहिष्णुता की शिक्षा की अपरिहार्यता को स्वीकारना होगा। निर्भयता के वातावरण का सृजन और पृथकतावाद को अस्वीकारना होगा, युवाओं में स्वनिर्णय, नैतिक-तर्क एवं विचार-विमर्श को प्रोत्साहित करना होगा।

● अहिंसात्मक दृष्टिकोण विकसित किये जाने हेतु शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम को तदनुसार प्रभावी एवं सार्थक बनाना होगा। पाठ्यक्रम, पाठ्य-पुस्तकों एवं समग्र शैक्षिक संरचना को विशाल-व्यापक दृष्टिकोणयुक्त तथा अहिंसोन्मुखी बनाना होगा। ऐसे नागरिकों का निर्माण करना होगा जो दूसरे के अधिकारों का ध्यान रखें, दूसरे की संस्कृति, स्वतंत्रता एवं मानवीय अस्मिता का सम्मान करे और विवादों को अहिंसक तरीके से निपटा सकें। प्रत्येक वर्ष 16 नवम्बर को हमें मूल्यांकन करना है कि सहिष्णुता की दिशा में हम कितना आगे बढ़े हैं तथा और बढ़ने तथा बढ़ते रहने हेतु कृतसंकल्प होना होगा।

● अहिंसा जीवन को शान्तिपूर्वक जीने की वास्तविक सच्चाई है। अहिंसा सबका सहारा है। यदि हमें एक स्वच्छ, स्वस्थ, सुखी एवं विकासमान संसार का निर्माण करना है तो अहिंसा भाव अर्थात् सहिष्णुता को स्वीकारना और अपनाना होगा, आचरण में लाना होगा और तब ही समाप्त होगा अत्याचार, आतंक, क्रूरता और युद्ध और तभी बहेगी सबको सुखदेती शान्ति की सरिता।

ए-438, किशोर कुटीर, वैशालीनगर, जयपुर-302021

झाँकी है हिन्दुस्तान की

■ इनके बिना दुनिया अधूरी है....

इस दुनिया में इंसानों की आबादी छह अरब से ज्यादा है। यह दुनिया के अनगिनत जीवों की असंख्य प्रजातियों में से महज एक जीव की आबादी है। जिस तेजी और बेतरतीबी से इंसान ने धरती पर कब्जा जमाया है, बाकी पशु, पक्षियों, पेड़, पौधों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। एक अंदाजे के मुताबिक दुनिया में लगभग हजार प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। रेड डेटा बुक के हिसाब से भारत में भी 153 जानवरों की प्रजातियां खतरे में हैं। पहली नजर में भले ही लगे कि इनके होने न होने से हमें क्या, पर फर्क पड़ता है:

भारतीय गिद्ध : हमें यह पक्षी भले ही घिनौना लगे लेकिन पर्यावरण की सफाई का जिम्मा प्रकृति ने इसे सौंपा है। पिछले एक दशक में इनकी तादाद में 99 पर्सेंट तक की कमी आई। जिम्मेदार है जानवरों को दिए जाने वाले पेनकिलर डिक्लोफिनेक।

फ्रूट बैट : फल खाने वाला यह चमगादड़ पश्चिमी घाटों के जंगल में रहता है। इसका मुख्य आहार है रुद्राक्ष के फल और अंजीर, बदले में यह फलों के बीज बिखेरता है। जंगल कटे तो इसकी तादाद खतरनाक तरीके से कम हुई।

बंगाल टाइगर और एशियाटिक लायन : बाघ और बब्बर शेर का नाता भारत से सदियों पुराना है। पर भारत में महज 1400 बाघ और 411 बब्बर शेर रह गए हैं। ये जंगली जानवरों की तादाद पर कंट्रोल रखते हैं लेकिन आज अवैध शिकार के चलते अस्तित्व बनाए रखने को जूझ रहे हैं।

गंगा की डॉल्फिन : मीठे पानी की डॉल्फिन शर्मिले जीव हैं। अक्सर गंगा की तली में रहने वाले ये जीव छोटी मदलियां खाकर गुजारा करते हैं। इनकी मौजूदगी किसी नदी के साफ-सुथरे होने का सबूत है। औद्योगिक प्रदूषण इनके खात्मे की वजह बन रहा है।

घड़ियाल : गिद्धों की तरह ये पानी की सफाई करते हैं। पिछले साढ़े आठ करोड़ बरस से धरती पर रहने वाले ये जीव अब भयानक प्रदूषण के सामने लाचार हैं। हाल ही में सैकड़ों की तादाद में इनके शव चंबल नदी में मिले।

स्लम बनते शहर

आशीष वशिष्ठ

'शहरीकरण एक अपरिहार्य घटना है और शहरों का विकास 21 वीं सदी के विकास में एकमात्र सबसे बड़ा प्रभाव होगा।' यह वाक्य यूएनएफ रिपोर्ट में विश्व जनसंख्या की स्थिति 1996 का पहला वाक्य था।

बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण व शहरीकरण चार ऐसे अहम बिंदु है जिन्होंने पर्यावरण की प्राकृतिक रूप रेखा को छिन्न-भिन्न करने में प्रभावकारी भूमिका निभाई है। सरकार की लाख कोशिशों के उपरांत भी जनसंख्या प्रत्येक मिनट बढ़ती चली जा रही है। औद्योगीकरण को सरकार स्वयं बढ़ावा दे रही है और आधुनिकीकरण को तो हम नब्बे के दशक में स्वयं ही न्योता दे चुके हैं। खान-पान, रहन-सहन, बोलचाल, वेश भूषा हमारी जिन्दगी के हर पहलू में परिवर्तन आ चुका है। बेसन के चिल्ले से चाउमीन तक, वीसीआर से डीवीडी प्लेयर तक, ईस्टमेन कलर से डिजिटल सिनेमा तक, टाइपराइटर से कम्प्यूटर तक व पुराने फोन से थर्ड जनरेशन के मोबाइल तक, कबूतर से ई मेल तक क्या नहीं बदला है। सुनने में चाहे अजीब लगे लेकिन सच्चाई यही है कि आजादी के 63 वर्षों में बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार जैसी बुनियादी जरूरतें शहरों व कस्बों तक ही सीमित है।

देखा जाय तो आजादी के बाद से देश के शहरी क्षेत्र में रहने वाले लोगों का प्रतिशत दो गुना हो गया है। आज देश की 30 प्रतिशत आबादी शहरों में रहती है। 1951 में दस लाख से ऊपर की आबादी वाले शहरों की संख्या सिर्फ पांच थी, वह वर्ष 2001 में बढ़कर 35 हो गई है। वर्तमान में यह संख्या 40 के आसपास बताई जाती है। पर शहरीकरण के वर्तमान रफ्तार से ऐसा अनुमान लगाया गया है कि वर्ष 2011 तक भारत में दस लाख से ऊपर आबादी वाले शहरों की संख्या 53 और 2021 तक 70 हो जाएगी।

2001 के सर्वेक्षण के मुताबिक भारत में शहरी आबादी की कुल संख्या 28.5 करोड़ थी यह आबादी सोवियत रूस एवं अमेरिका की आबादी से ज्यादा है। यह संख्या वर्ष 2011 तक बढ़कर 37 करोड़ और 2021 तक बढ़कर 46 करोड़ हो जाएगी। वर्ष 2001 के आंकड़ों के मुताबिक भारत में नगर पालिका प्रशासन से चालित शहरों की संख्या 5200 थी और एक लाख से ऊपर आबादी वाले शहरों की संख्या 423 थी। जनसंख्या का आकलन है कि 2030 तक संसार में पांच अरब से ज्यादा शहरी लोग होंगे यानी तब धरती खुद में एक बहुत बड़ा शहर बन चुकी होगी। इस आकलन पर हमें प्रसन्न होना चाहिए या दुखी। इस बारे में शहरों और गांवों के अभी के हालात देखकर कोई दावे के साथ कुछ नहीं कह सकता। गांवों में नागरिक सुविधाओं का अभाव होता है, जिन्दगी की रफ्तार धीमी होती है और लोगों को नफे-नुकसान में समभाव रखकर जीने आदी होना पड़ता है। इसके विपरीत आम धारणा के मुताबिक शहरों में सड़क, बिजली, पानी, सफाई आदि जैसी बुनियादी जरूरतें पूरी होती रहती है।

शहर गांव को लील गये और साथ में खत्म हो गये पुशतैनी काम-धंधे। अब कोई खेत में हाथ मैले नहीं करना चाहता है मेहनत के पसीने से अब खुशबू नहीं बदबू आती है। बढिया रोजगार के साधन, बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा की गांरटी से युक्त शहर हर एक को अपनी ओर आकर्षित करते हैं लेकिन शहरों की संरचना में कितनी बनावट व खोखलापन है ये पहली नजर में कोई भांप नहीं पाता है। शहरों में बढ़ती आबादी को बोझ अब सरकार के साथ-साथ स्वयं जनता के लिए भी परेशानी का सबब बनता चला जा रहा है। अनियोजित व गैर कानूनी कालोनियां की संख्या दिनों दिन बढ़ती चली जा रही है। चमक-दमक से भरपूर शहर के बाहरी व नई बसावट वाले क्षेत्र शहर कम स्लम अधिक प्रतीत होते हैं लेकिन सरकारी नीतियों के चलते हर सुविधा या योजना शहरों तक ही सिमट गई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में गरीबी तेजी से बढ़ रही है। दुनिया में लगभग एक अरब लोग झुग्गी बस्तियों में रहते हैं। इनमें से नब्बे फीसदी विकासशील देशों में हैं। इस नब्बे फीसदी स्लम आबादी के सैंतीस फीसद लोग चीन व भारत में रहते हैं।

गांवों में आज भी भुखमरी, अनपढ़ता व पिछड़ापन दिखाई देता है। वहां न तो शिक्षा के बेहतर साधन हैं और न ही स्वास्थ्य सेवाएं। सरकारी डॉक्टर और टीचर मजबूरी के चलते ही गांव की दहलीज को छूते हैं वो भी केवल हाजिरी दर्ज करवाने के लिए ताकि वेतन मिलता रहे। शहरों की बेहतर देखभाल व गांवों से सोतेले व्यवहार

की दोयम नीति ही एक तरह से शहरीकरण को बढ़ावा दे रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, रोजगार उपलब्ध करना तो शासन की नीति में शुमार होना चाहिए और प्रत्येक भारतवासी को इन्हें पाने का मौलिक नही तो नैतिक अधिकार तो है ही। हमारा जन्म शहर में हो या गांव में इस पर किसी का भी नियंत्रण नहीं है। शहर के बाशिंदे विकास व नयी दुनिया की हर मौज का लुत्फ उठाएं और गांव वाले गुलाम हिंदुस्तान के बाशिंदों की मानिंद भूख से तड़पे, रोजगार से विहिन हो, शिक्षा, स्वास्थ्य, साफ-स्वच्छ पेयजल की बुनियादी जरूरतों से दूर हो महिलाएं सुरक्षा की दृष्टि से घरों से बाहर न निकल पाती हों और शौचालय के अभाव में घर से बाहर ठिकाना ढूंढती हों, आखिरकर ये नाइंसाफी व दोगलापन नहीं है तो और क्या हैं? सरकारी एजेंसियां एक ओर ये चिल्लाती हैं कि शहरीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति पर्यावरण के लिए खतरे का संकेत है लेकिन दूसरी ओर यही मशीनरी समस्या की जड़ में न जाकर केवल पतों की झाड़-पौंछ में व्यस्त हैं। लेकिन इससे तो किसी का भला होने वाला नहीं है। जब उद्योग, शिक्षा के मन्दिर, व बुनियादी जरूरत की सारी सामग्री जब शहरों में ही बारम्बार उपलब्ध करवाई जाएगी तो जनता कहां जाएगी..... सीधा, सरल व सपाट जवाब है शहरों में।

केन्द्र व राज्य सरकारें पंचवर्षीय व अन्य योजनाओं के माध्यम से प्रतिवर्ष बजट में ग्रामीण क्षेत्रों के उत्थान हेतु लाखों-करोड़ों रूपये के आवंटन का ऐलान करती है लेकिन फिर भी शहरीकरण की गति तीव्र से तीव्रतम होती जा रही है। इस पर शायद ही कोई संगोष्ठी या चर्चा करने की जहमत नहीं उठाना चाहता है। बेहतर नागरिक सुवधिाओं का लाभ उठाना प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है और नागरिक स्वस्थ, शिक्षित व सुरक्षित रहे व उनके जीवकोपार्जन के साधन बने ये सरकार की जिम्मेदारी है। सभी नागरिकों को एक समान फलने-फूलने व आगे बढ़ने के अवसर सुनिश्चित करवाना सरकार व प्रशासन की अहम नैतिक जिम्मेदारी है पर लाख टके का सवाल है क्या ऐसा हो रहा है? और अगर किसी क्षेत्र विशेष में हो भी रहा है तो वह अधिकांश जनता के साथ धोखा ही है। अधिकतर गांवों में आज भी स्वतंत्रता पूर्व के ही हालात विद्यमान है गांव-गांव में डीटीएच कनेक्शन, मोबाइल फोन व पेप्सी कोला पहुंचाने से अगर गांव विकसित होते तो आज शहरीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति व मनोवृत्ति स्वयं रूक चुकी होती है लेकिन ये प्रवृत्ति तो बढ़ती ही जा रही है कोई भला अपनी पुश्तैनी घर, खेत-खलिहान, हरा-भरा वातावरण, स्वच्छ निर्मल जल, प्राकृतिक सौन्दर्य, पक्षियों का कलरव, शुद्ध खान-पान छोड़कर कंक्रीट के जंगल में क्यूं बसना चाहेगा आखिरकर कोई मजबूरी तो होगी ही और वो मजबूरी है बेहतर जीवन जीने की। और अगर बेहतर जिंदगी की तलाश में शहरीकरण बढ़ रहा है तो आखिरकर दोष किसका है हमें वक्त रहते ये बखूबी समझना होगा।

'युनाईटेड नेशंस फंड फॉर पापुलेशन एक्टिविटीज' की एक रिपोर्ट के अनुसार भी सूखा प्रभावित क्षेत्र में पड़ने के कारण दिल्ली की हालत खराब होने वाली है। यूएनएफपीए की रिपोर्ट के अनुसार गांवों के शहर का रूप लेने कारण संबंधित क्षेत्र में तापक्रम में 2 से 6 डिग्री सेंटीग्रेड की बढ़ोतरी हो रही है। ऐसे में आने वाले समय में पीला बुखार, मलेरिया, डेंगू और दूसरी जल जनित बीमारियां यहां के लोगों को अपनी चपेट में ले सकती हैं। ग्रीनपीस की एक चेतावनी के अनुसार सन 2040 तक करीब दो सौ मिलियन लोग ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव से विस्थापन का दर्द भोगने को विवश होंगे। ग्रीनपीस का यह आकलन जर्मनी के हैग्बर्ग विश्वविद्यालय के एक अध्ययन दल के निष्कर्षों पर आधारित है। अप्रत्याशित मौसमी बदलावों के कारण ये विस्थापन होंगे।

सरकारी मशीनरी ने योजनाएं तो बनाई कभी गांव, खेत-खलिहानों में झांककर नहीं देखा कि वहां हो क्या रहा है? उनका प्रशासन पुलिस किस तरह से शहरी व ग्रामीण के साथ दोगला व्यवहार व आचरण अपनाता है। कौन चाहेगा कि उसके बच्चे अनपढ़ रहें? कौन चाहेगा कि उसकी बहू-बेटियां असुरक्षा की भावना से भरपूर जीवन जीएं? कौन चाहेगा कि उसके घर की औरतें और बच्चे शौचालय के अभाव में घर से बाहर निकले ? कौन चाहेगा कि उनके घर की औरतें घर से मीलों दूर पानी के लिए भटके? आखिरकर हम एक देश के वासी है। हम सभी के वोटों से ही सरकार बनती है। फिर सरकार व प्रशासन शहरी सीमा तक ही सिकुड़ कर क्यों रह जाता है। क्यों हमारे नेताओं को पांच साल के बाद गांव की गलियां याद आती हैं। हर व्यक्ति जीवन में सुविधा व आराम चाहता है। हम और आप सारा दिन अपने शरीर को कष्ट इसलिए देते हैं ताकि हमारी आने वाली नस्ले सुख-आराम की जिन्दगी बसर कर सकें, और अगर उसी आराम व बेहतर जिंदगी की तलाश में ग्रामवासी शहरों की तरफ पलायन करते है तो ये हो हल्ला क्यों मचाया जाता है।

ग्राम भारत की आत्मा हैं। शहरों की सुख-सुविधा ग्रामों की उन्नति पर निर्भर करती है, इसलिए दोनों में ही उचित समन्वय की आवश्यकता है लेकिन यहां शहर गांवों से उजड़कर भागे चले जा रहे लाखों-लाख लोगों की अंतिम शरणस्थली बनते जा रहे हैं और जो थोड़ी बहुत नागरिक सुवधिाएं यहां पहले से मौजूद रही हैं उनका भी दीवाला निकलता जा रहा है। समय रहते सरकार व अन्य संगठनों को इस गंभीर समस्या के संबंध में कोई ठोस व कारगर कदम उठाने होंगे वरना बड़े-बड़े महानगर स्लम में तब्दील हो जाएंगे।

स्वतंत्र पत्रकार, बी-96, इंदिरा नगर, लखनऊ-226016 (उ.प्र.)

कमर दर्द और प्रेक्षा चिकित्सा :1:

मुनि किशनलाल

औद्योगीकरण और तकनीक से समृद्ध युग का मानव चिन्तनीय रूप में कमर दर्द से पीड़ित हो रहा है। वर्तमान में प्रत्येक पाँच व्यक्तियों में से एक व्यक्ति इससे पस्त एवं त्रस्त है। इसका सबसे बड़ा कारण विशेषज्ञों एवं योगियों के अनुसार अवैज्ञानिक एवं अनियमित दिनचर्या है। कमर दर्द एक लक्षण है न कि बीमारी।

मानव का मेरुदण्ड एक अभियांत्रिकी आश्चर्य है। यह हमें उठने, संतुलन साधने, झुकने, मुड़ने तथा कूदने में सामर्थ्य प्रदान करता है, किन्तु इन सब कामों के लिए मेरुदण्ड का प्राकृतिक रूप से लचीला होना अत्यन्त आवश्यक है। इसके साथ–साथ हमारी अस्थियों, मांसपेशियों तथा तन्त्रिकाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण है।

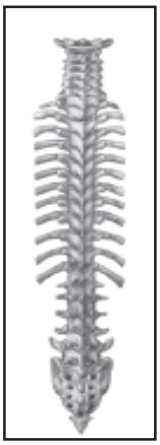

मेरुदण्ड

हमारा मेरुदण्ड छोटी–छोटी इकाई हड्डियों से निर्मित है, जिन्हें कशेरुका (वर्टेबरा) के नाम से जानते हैं। ये कशेरुकाएं एक–दूसरे के ऊपर शृंखलाबद्ध रूप से रखी होती हैं। जिनकी संख्या 33 होती हैं। ये ऊपर की ओर मस्तिष्क के निचले भाग से तथा नीचे की ओर अस्थि मेखला से जुड़ा होता है। इनके भीतर हमारी सुषुम्ना नाड़ी सुरक्षित रहती है। प्रत्येक कशेरुका फिसलन के गुण वाली एक चिकनी मांसल परत से ढकी हुई होती है। यह परत अस्थियों के घर्षण को कम कर उन्हें होने वाली संभावित क्षति से बचाती है। 'सायनोवियल द्रव' इस परत को चिकनाहट प्रदान करता है और जोड़ों में होने वाले घर्षण को कम करता है तथा हमारी रीढ़ को लचकदार बनाये रखने में सहायक सिद्ध होता है। जिस तरह कीमती कार के पार्ट, पुर्जे गाड़ी को अच्छी तरह चलाने में सहायक है उसी तरह मानवीय ढाँचे तथा मेरुदण्ड का निर्माण भी इस तरह किया गया है कि इसकी क्षमता को देखकर आश्चर्य होता है। फिर भी स्वयं आदमी की असावधानी से और लापरवाही से 80 प्रतिशत व्यक्तियों को प्रायः एक न एक दिन कमर दर्द महसूस करना ही पड़ता है।

कशेरुका

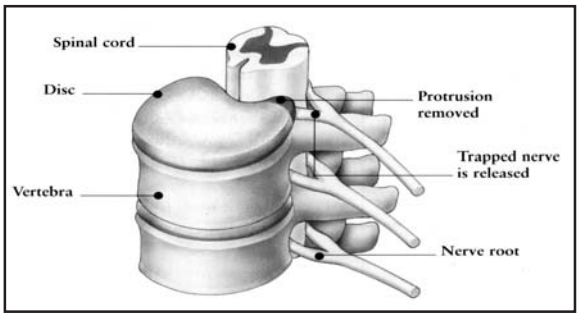

कशेरुकाओं के बीच सन्धि की स्थिति

कमर दर्द के कारण

ऐसे अनेक कारण हैं जो मेरुदण्ड की संरचना को क्षति पहुंचाते हैं। किसी घातक चोट के कारण हड्डियाँ टूट सकती है। व्यायाम करते समय असावधानीवश मांसपेशियों में खिंचाव आ सकता है। बैठने, सोने तथा चलने की गलत मुद्रा, अनियमित खान–पान, अधिक वजन वाली वस्तुओं को उठाने, लम्बे समय तक ड्राईविंग तथा वृद्धावस्था भी इसका कारण हो सकते हैं।

दोनों पैरों को कमर से जोड़ने वाली अस्थियाँ मेरुदण्ड के अन्तिम छोर से जुड़ी हुई होती है। जहां–जहां अस्थियों के जोड़ में सीधा करने और मोड़ने की क्षमता होती है वहां ऐसा चिकना रसायन भी पहुंचाया जाता है जो जोड़ के स्थान की अस्थियों को घिसने से बचाता है। इस रसायन की तुलना मशीनों या मोटर पार्ट्स में दिये जाने वाले ग्रीस (चिकना पदार्थ जो पुर्जों को घिसने से बचाता है।) से की जा सकती है। इस रसायन की कमी से जब अस्थियां घिसने लगती है तो कमर में स्वाभाविक रूप से दर्द होने लग जाता है।

दर्द का दूसरा कारण है सामने झुक कर ज्यादा भारी बोझ उठाने की चेष्टा करना। क्षमता से अधिक बोझ झुक कर उठाने से अस्थितन्त्र में दर्द हो जाता है।

कमर दर्द का तीसरा कारण है मेरुदण्ड को सीधा न रखकर झुकाकर बैठना। झुक कर बैठने या चलने की आदत ज्यादातर लोगों में होती है। इसी कारण उम्र बढ़ने के साथ ज्यादातर लोग झुक कर चलने को मजबूर हो जाते है। अतः शुरु से ही सावधानी रखी जाये तो व्यक्ति कमर दर्द से बच सकता है।

कमर दर्द का चौथा कारण चोट लगना भी है। किसी दुर्घटना में या मारपीट में जब कमर पर चोट लगती है तो उससे भी दर्द होने लगता है। मेरुदण्ड की बीमारियों को स्पाइनल कॉर्ड इंजरीज कहते हैं।

निवारण

कमर दर्द के मरीज होने पर इलाज पर भारी खर्च करना पड़ता है। अतः अगर हमको इस कठिनाई से बचना है तो शुरु से ही असावधानी, तनाव, अति भारी वजन आदि उठाने से बचना चाहिए। फिर भी अगर कमर में दर्द हो गया है तो प्रेक्षाध्यान के निम्न प्रयोगों से स्वस्थ हो सकते हैं या राहत पा सकते हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने 'तुम स्वस्थ रह सकते हो' में कमर दर्द के उपचार हेतु निम्न प्रेक्षा चिकित्सा का उल्लेख किया है –

1. **आसन**–मेरुदण्ड की आठ क्रियाएं, भुजंगासन, मत्स्यासन, मकरासन, उत्तानपादासन। (10 मिनट)
2. **प्राणायाम**–सूर्यभेदी प्राणायाम, दर्द के स्थान पर ध्यान केन्द्रित कर सूक्ष्म भस्त्रिका। (5 मिनट)
3. **अनुप्रेक्षा**–कमरदर्द की स्वस्थता का सुझाव। 'मेरी कमर का दर्द शान्त (ठीक) हो रहा है। (15 मिनट)
4. **जप**–'ह्रीं' (10 मिनट)
5. **तप**–भोजन में चीनी और चिकनाई का अल्पीकरण।
6. **विशेष**–अनामिका और अंगूठे को सटाकर दबाव दें।
7. **मुद्रा**–सहन शंख मुद्रा, वायु मुद्रा।

आगे इन विधियों की विस्तार से चर्चा की गई है।

आसन

मेरुदण्ड की आठ क्रियाएं –

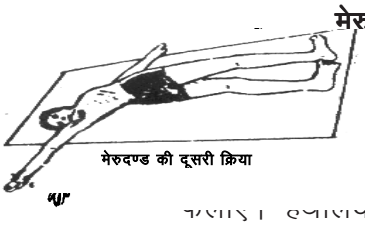

मेरुदण्ड की दूसरी क्रिया

प्रति :– भूमि पर दरी या कम्बल बिछाकर । दोनों पैर सीधे रखें। हाथों को कंधे के ो करें। हथेलियां भूमि को स्पर्श करें। दोनों पैरों के मध्य अपने पांवतल की लम्बाई जितनी दूरी रखें।

मेरुदण्ड की पहली क्रिया

1. पूरक करते हुए बाएं पैर के अंगूठे को दाएं पैर की एड़ी से स्पर्श करें। दायीं ओर करवट लें। गर्दन बायीं ओर घुमाएं, 10 बार श्वास का रेचन करते हुए पूर्व स्थिति में आ जाएं।

2. पूरक कर दाएं पैर के अंगूठे को बायीं एड़ी से स्पर्श करते हुए बायीं ओर करवट लें। गर्दन दायीं ओर घुमाएं। 10 बार श्वास का रेचन करते हुए मूल स्थिति में आ जाएं।

दूसरी क्रिया :

शरीर की स्थिति पूर्ववत् रहेगी। दूसरी क्रिया की स्थिति में दाहिने पैर को सीधा ऊपर उठाकर एड़ी को बाएं पैर के अंगूठे और पास वाली अंगुलियों के बीच स्थापित करें।

मेरुदण्ड की दूसरी क्रिया

1. पूरक कर दोनों पैरों के पंजों को दाहिनी ओर ले जाकर भूमि को स्पर्श करें। शरीर दाहिनी ओर करवट लेगा गर्दन बायीं ओर घुमाएं। 10 बार श्वास का रेचन करते हुए पूर्व स्थिति में आ जाएं।

2. पूरक कर दोनों पैर बायीं ओर ले जाकर भूमि को स्पर्श करें। शरीर बायीं ओर करवट लेगा। गर्दन को दाहिनी ओर धुमाएं, 10 बार श्वास का रेचन करते हुए मूल स्थिति में आ जाएं।

नोट– इस क्रिया को पैर बदलकर भी दोहरायें।

तीसरी क्रिया :

स्थिति : शरीर की स्थिति पूर्ववत् रहेगी। बाएं पैर के टखने पर दाएं पैर के टखने को स्थापित करें।

मेरुदण्ड की तीसरी क्रिया

1. पूरक कर दोनो पैरों को घुमाकर पैर को भूमि से स्पर्श करायें। शरीर बायीं ओर करवट लेगा। गर्दन को दाहिनी ओर घुमाएं। 10 बार श्वास का रेचन करते हुए पूर्व स्थिति में आ जाएं।

2. पूरक कर पैर को दाहिनी ओर भूमि से स्पर्श कराएं। पूरा शरीर दाहिनी ओर करवट लेगा। गर्दन बायीं ओर घुमाएं। 10 बार श्वास का रेचन करते हुए मूल स्थिति में आ जाएं।

नोट– इस क्रिया को पैर बदलकर भी दोहरायें।

चौथी क्रिया :

स्थिति : शरीर की स्थिति पूर्ववत् रहेगी।

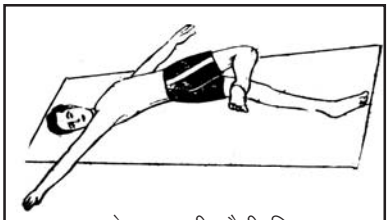

मेरुदण्ड की चौथी क्रिया

1. बाएं पैर को सीधा रखें दाहिने पैर को मोड़कर पांव तल को घुटने के पास स्थापित करें।

2. पूरक कर बाएं पैर के ऊपर से दाएं घुटने को बायीं ओर भूमि से स्पर्श कराएं। दाहिना कंधा बाईं ओर करवट लेगा। गर्दन को दायीं ओर घुमाएं। 10 बार श्वास का रेचन करते हुए पूर्व स्थिति में आ जाएं। दायें पैर को सीधा रखें। बाएं पैर को पूरक करते हुए दाहिने पैर के ऊपर से बाएं पैर के घुटने को भूमि से स्पर्श कराएं। 10 बार श्वास का रेचन करते हुए मूल स्थिति में आ जाएं।

(अगले अंक में लगातार.....)

मृत्युदंड के औचित्य पर प्रश्न चिह्न

प्रो. योगेशचन्द्र शर्मा

सभ्यता की प्रगति के साथ-साथ मृत्युदंड के औचित्य और इसके विधि-विधान में काफी परिवर्तन आया है। इस समय विश्व के 40 देशों में मृत्युदंड की सजा समाप्त हो चुकी है, जिनमें इंग्लैंड भी शामिल है। भारत में यद्यपि यह सजा अभी कायम है, लेकिन इसे अपवाद स्वरूप मामलों में ही काम में लिया जाता है। इसीलिए 1947 से अब तक केवल 55 व्यक्तियों को मृत्युदंड दिया गया है, जिसमें अंतिम 2004 में धनंजय चटर्जी को इस आधार पर मृत्युदंड दिया गया था कि उसने मार्च 1990 में 14 वर्ष की एक बच्ची की दुष्कर्म के बाद हत्या कर दी थी। वर्ष 2004 के बाद अभी तक हमारे यहां किसी को मृत्युदंड नहीं दिया गया। 28 अपराधियों को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अंतिम रूप में मृत्युदंड की सजा अवश्य सुनाई जा चुकी है, लेकिन उनके मामले, क्षमा-याचना के आवेदन-पत्र के साथ केन्द्र सरकार के पास विचाराधीन हैं। इनमें से 26 मामलों को अपनी रिपोर्ट के साथ केन्द्र सरकार स्वीकृति के लिए राष्ट्रपति के पास भेज चुकी है, जबकि दो अब भी उसके पास विचाराधीन हैं। इन्हीं में एक अफजल गुरु का है, जो संसद पर किये गये हमले का मुख्य अपराधी है। इसका मामला अब कानून से अधिक राजनीति का बनता जा रहा है। इसके लिए एक तरफ लोग उसे शीघ्रातिशीघ्र मृत्युदंड दिये जाने के समर्थक हैं, वहां दूसरी ओर सरकार को इससे अपने वोट-बैंक खिसकने का डर सता रहा है। इसीलिए इन दिनों भारतीय राजनीति में मृत्युदंड के औचित्य पर पुनः प्रश्नचिह्न लगाये जाने लगे हैं। भारत के विधिमंत्री वीरप्पा मोइली ने स्पष्ट कहा है कि मृत्युदंड को समाप्त करने की दिशा में हमें आगे बढ़ना चाहिए। उनके अनुसार लोकतांत्रिक राज्य में इस चरम दंड का कोई औचित्य नहीं है। देश के विधिमंत्री का यह कथन अफजल गुरु की क्षमा-याचना पर परोक्ष रूप में सहमति का ही संकेत देता प्रतीत होता है। अब तो मुंबई हत्याकांड के अपराधी कसाब का मामला भी इसके साथ जुड़ गया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में सर्वप्रथम 1949 में मृत्युदंड समाप्त करने की मांग उठी थी, मगर उस समय तत्कालीन गृहमंत्री तथा उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने पूरी तरह उसे अस्वीकार कर दिया। उसके बाद तत्कालीन गृहमंत्री पं. गोविन्द वल्लभ पन्त ने भी इस मांग को समयानुकूल नहीं मानकर अस्वीकार कर दिया। 1962 में यह मांग पुनः संसद में प्रस्तुत की गयी। तब सरकार ने इस पर विचार करने के लिए एक कमीशन की नियुक्ति की, जिसने इस विषय पर विस्तार से विचार करके भारतीय परिस्थितियों में मृत्युदंड-उन्मूलन को उचित नहीं बतलाया। कमीशन ने अपनी सिफारिशों में यह अवश्य कहा

(1) 18 वर्ष से कम आयु के व्यक्तियों को मृत्युदंड न दिया जाए।

(2) यह खुले रूप में नहीं होना चाहिए।

(3) महिलाओं को मृत्युदंड में कुछ रियायतें दी जा सकती हैं मगर उन्हें इससे सर्वथा मुक्त नहीं रखा जा सकता। तथा

(4) मृत्युदंड निश्चित, दयालु, शीघ्र और सभ्य रूप में होना चाहिए।

हमारे सर्वोच्च न्यायालय ने 1983 में अपने एक फैसले में केवल दुर्लभ से दुर्लभतम मामलों में ही मृत्युदंड की व्यवस्था को बनाये रखने की बात कही। यही व्यवस्था अब भी लागू है। भारतीय कानूनों में हत्या, राज्य के खिलाफ युद्ध तथा सैनिकों द्वारा विद्रोह भड़काने की कार्यवाही जैसे मामलों में ही मृत्युदंड का प्रावधान है। परन्तु यहां भी साधारण हत्याओं के मामले में मृत्युदंड की सजा लगभग समाप्त हो चुकी है। अब तो जघन्य अपराधों में ही यह सजा दी जाती है, जैसे किसी लड़की की बलात्कार के बाद हत्या करने वाला या आतंकी कार्यवाही में शामिल होने वाला व्यक्ति आदि।

मृत्युदंड के विरोधियों के अनुसार इस प्रकार के दंड के पीछे

(1) बदले की भावना झलकती है, सुधार की नहीं।

(2) उनके अनुसार मृत्युदंड हमारी आदिम भावना का सूचक है।

(3) मृत्युदंड पाने वाले व्यक्तियों के परिजनों को समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त नहीं होता, जबकि उनका उस अपराध में हाथ होना आवश्यक नहीं है।

(4) यह एक वैधानिक हत्या है। इस संदर्भ में महात्मा गांधी ने एक बार कहा था "मैं एक आदमी द्वारा किसी की हत्या किये जाने और सरकार द्वारा किसी को फांसी पर लटकाये जाने में कोई अन्तर नहीं मानता।"

(5) मृत्युदंड के विरोधियों का सबसे प्रबल तर्क यह है कि न्यायालयों के निर्णय सदैव सही नहीं होते। उनसे भी गलती हो सकती है। कुछ ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं, जिनमें निरपराधियों को सजा दे दी जाती है और फिर वर्षों के बाद पुनः जांच पड़ताल करने पर वे निरपराध साबित होते हैं।

(6) न्यायाधीश भी अपने उस सामाजिक वातावरण से प्रभावित रहते हैं, जिसमें वे पले बढ़े हैं। केवल न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठने से वे उस प्रभाव से मुक्त नहीं हो सकते। इससे उनके न्यायिक निर्णयों में उस प्रभाव की छाया दृष्टिगत होना अस्वाभाविक नहीं है। इससे निर्णयों में एक पक्ष विशेष का समर्थन संभव हो सकता है।

(7) इन दिनों भ्रष्टाचार की दुर्गन्ध को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

(8) मृत्युदंड के विरोधी अपने पक्ष में यह तथ्य भी देते हैं कि जिन देशों में मृत्युदंड समाप्त हो गया, वहां अपराधों में कोई उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हुई है और जिन देशों में मृत्युदंड की व्यवस्था बनी हुई है, वहां अपराधों की संख्या पूर्ववत बनी हुई है।

मृत्युदंड के समर्थक भी अपने पक्ष में वजनदार तर्क देते हैं। उनका कहना है

(1) मृत्युदंड से ही समाज विरोधी तत्त्वों को सदैव के लिए समाप्त किया जा सकता है। यदि मृत्युदंड के स्थान पर भयानक अपराधियों को केवल कुछ समय के लिए कारावास की सजा दी जाए तो जेल से छूटने पर उनमें बदले की भावना उभरती है। तब वे समाज के लिए और भी अधिक खतरनाक बन सकते हैं।

(2) मृत्युदंड का भय भी मनुष्यों को अपराध करने से रोकता है।

(3) कुछ संगीन अपराधों में और अभ्यस्त हो चले अपराधियों के लिए तो मृत्युदंड एकमात्र विकल्प है।

(4) मृत्युदंड समाप्त करने से आतंकवाद जैसे संगीन अपराधों में वृद्धि होगी।

मृत्युदंड के विरोध में काफी कुछ कहा जा सकता है, मगर हमारे देश के लिए विचारणीय स्थिति यह है कि हमारे यहां एक तरफ आतंकवाद का प्रसार निरन्तर बढ़ रहा है और वह प्रायः कहीं न कहीं, कोई न कोई आतंकवादी हरकत कर बैठता है। निश्चित ही आतंकवादियों में धर्म का जुनून इतना अधिक भर दिया जाता है कि वे सामान्यतः मौत से भयभीत नहीं होते, लेकिन जब कोई आतंकवादी पकड़ में आ जाता है और उस पर मुकदमा चलता है तथा उसे मौत की सजा सुनाई जाती है तो उसका प्रभाव अन्य व्यक्तियों पर कमोबेश रूप में पड़ता ही है। आदतन हत्यारों में भी इस प्रकार के समाचार भय पैदा करते हैं। मृत्युदंड का औचित्य बदले की भावना में है या हत्यारे को मारने में उतना नहीं है, जितना अन्य व्यक्तियों को खतरनाक अपराधों से हतोत्साहित करने में है। यह अवश्य है कि मृत्युदंड केवल कुछ निश्चित अपराधों में दिया जाना उचित है। उदाहरणार्थ राष्ट्रद्रोह, सामूहिक अथवा पूर्व नियोजित बर्बर हत्या, बलात्कार के बाद हत्या तथा आतंकवादी घटना में मुख्य भूमिका आदि।

हमारे यहां कानूनी प्रक्रिया इतनी लम्बी और सटीक है कि कम से कम गंभीर मामलों में न्यायिक चूक की संभावना सामान्यतः नहीं रहती। अपील दर अपील से लम्बे समय तक मुकदमें चलते रहते हैं। मृत्युदंड पर निर्णय देने से पूर्व न्यायालय सामान्यतः, पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम के इस सुझाव का भी ध्यान रखते हैं कि अपराध करते समय अपराधी की आयु क्या थी तथा उसकी शारीरिक और मानसिक परिस्थिति कैसी थी? सर्वोच्च न्यायालय के अंतिम निर्णय के उपरांत भी अपराधी को यह अधिकार रहता है कि वह राष्ट्रपति को क्षमायाचना के लिए आवेदन करे। इस आवेदन पर एक लम्बी प्रक्रिया के उपरांत और अपराध की गंभीरता तथा मानवीय संवेदना के आधार पर अंतिम निर्णय लिया जाता है और उस निर्णय की क्रियान्विति होती है। इस प्रक्रिया में राष्ट्रपति गृह मंत्रालय से सलाह मांगते हैं। गृह मंत्रालय अपराधी के सभी रिकॉर्ड देखता है, जेल में उसके व्यवहार की जांच करता है और आवश्यकतानुसार संबंधित राज्य-सरकार से परामर्श करता है। इसमें विधि मंत्रालय की भी राय ली जाती है और इसके उपरांत ही कोई अंतिम निर्णय हो पाता है। इतनी सारी सावधानियां रखने के कारण इस बात की आशंका शून्य के बराबर रह जाती है कि किसी निरपराधी को मृत्युदंड मिल जाए।

वर्तमान परिस्थितियों में मृत्युदंड की व्यवस्था को यथावत रखने की सिफारिश करने के बावजूद उसकी वर्तमान पद्धति का समर्थन करना कठिन है। हमारे यहां इस समय मृत्युदंड देने के लिए लम्बे अरसे से फांसी पर लटकाने की परंपरा प्रचलित है। **आधुनिक युग में इस व्यवस्था को सामान्यतः अमानवीय और पाशविक करार दिया जाता है। मृत्युदंड अपेक्षाकृत कम क्रूर तरीके से दिया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ जहर का इंजेक्शन देकर अथवा ऐसी कोई औषधि खिलाकर अपराधी को मृत्युदंड दिया जा सकता है।** जो उसे शांति से और धीरे-धीरे मृत्यु की गोद में सुला सके। इस संदर्भ में गंभीरता से विचार किया जाना अपेक्षित है।

10/611, मानसरोवर
जयपुर - 302020 (राजस्थान)

धर्मगुरुओं और बुद्धिजीवियों द्वारा

अणुव्रत का अनुमोदन

मुनि राकेशकुमार

अप्रैल 1987 में कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य का मुंबई आना हुआ। उनके आगमन के उपलक्ष्य में सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित किया गया। मुंबई में उनके दक्षिण भारतीय अनुयायियों की संख्या बहुत अधिक है। महाराष्ट्र के तत्कालीन सूचना राज्य मंत्री डॉ. श्रीकांत जिचकर इस सम्मेलन के संयोजक थे। नगर के प्रसिद्ध और विशाल षण्णमुखानंद हॉल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ. सुब्रह्मयम ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा मुनिजी इस कार्यक्रम के लिए पद्यात्रा करते हुए बहुत दूर से आये हैं, मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

सम्मेलन का प्रारंभ करते हुए राज्यपाल डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने कहा भारत की संस्कृति और सभ्यता के विकास में धर्म का बहुत योगदान रहा है। इसकी उपेक्षा करना भयानक भूल है। पर आज राष्ट्र में धर्म के नाम पर जो साम्प्रदायिकता का जहर फैल रहा है उसे मिटाने का सबको प्रयास करना चाहिए। इस धर्म सम्मेलन में उपस्थित सभी धर्मगुरुओं का स्वागत करता हूं तथा आशा करता हूं कि आप सभी राष्ट्र की एकता को मजबूत बनाने में सहयोग प्रदान करेंगे। राज्यपाल ने आगे कहा देश में धार्मिक सत्संग बहुत होते हैं उनमें जनता की विशाल भीड़ भी होती है पर दूसरी ओर समाज के हर क्षेत्र में चरित्र की गिरावट दिखाई दे रही है, यह खेद का विषय है। हमें इस विरोधाभास को दूर करना चाहिए। महापौर डॉ. रमेश प्रभु ने कहा मुंबई में धार्मिक सहिष्णुता का सुंदर वातावरण है। यहां के नागरिकों का दृष्टिकोण विशाल और उदार है। मुम्बई विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. महैरू डी. बैंगानी ने कहा आजकल शिक्षण केन्द्रों में नशे की प्रवृत्ति बहुत बढ़ रही है। हिंसा और नशा अपराध के प्रमुख कारण हैं। धर्मगुरुओं को विद्यार्थी वर्ग को नशामुक्त बनाने पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

डॉ. श्रीकांत जिचकर ने धर्म के सम्बन्ध में तीन प्रस्ताव पढ़े जिनका सभी लोगों ने हर्षध्वनि से अनुमोदन किया। कार्यक्रम में सरकारी अधिकारी शिक्षक व प्राध्यापक भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। तीसरा प्रस्ताव अणुव्रत के संबंध में था, जिसमें अणुव्रत के अभियान को मानवता के लिए कल्याणकारी बताते हुए उसका अनुमोदन किया तथा सभी धर्मगुरुओं को इसे आगे बढ़ाने हेतु अनुरोध किया। धर्मगुरुओं व अन्य वक्ताओं ने प्रस्तावों को उपयोगी एवं महत्वपूर्ण बताया।

जैनधर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए मैंने कहा जैनधर्म व्यक्ति पूजा का नहीं गुणपूजा का धर्म है। अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत इसके मुख्य सिद्धांत हैं। जैनधर्म ने विश्व को मैत्री और शांति का संदेश प्रदान किया है। इसके आदर्शों का अनुसरण करने से समाज में शांति और सद्भावना का विकास हो सकता है। मैंने आगे कहा जैनधर्म भक्ति का महत्त्व स्वीकार करता है पर इससे अधिक अहिंसा, सत्य व संयम आदि आदर्शों के विकास पर इसमें बल दिया है। चरित्र से हीन व्यक्ति सच्ची भक्ति नहीं कर सकता है। अणुव्रत की चर्चा करते हुए मैंने कहा अणुव्रत सर्वधर्म समन्वय का प्रतीक है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह अणुव्रत के मुख्य आदर्श हैं। हर व्यक्ति के दैनिक व्यवहार में इनकी प्रतिष्ठा करना अणुव्रत का मुख्य लक्ष्य है। सैकड़ों साधु-साध्वी तथा समर्पित कार्यकर्ता इसके संदेश को आगे बढ़ाने में संलग्न है।

सम्मेलन के संयोजक डॉ. श्रीकांत जिचकर ने धर्म के सम्बन्ध में तीन प्रस्ताव पढ़े जिनका सभी लोगों ने हर्षध्वनि से अनुमोदन किया। कार्यक्रम में सरकारी अधिकारी शिक्षक व प्राध्यापक भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। तीसरा प्रस्ताव अणुव्रत के संबंध में था, जिसमें अणुव्रत के अभियान को मानवता के लिए कल्याणकारी बताते हुए उसका अनुमोदन किया तथा सभी धर्मगुरुओं को इसे आगे बढ़ाने हेतु अनुरोध किया। धर्मगुरुओं व अन्य वक्ताओं ने प्रस्तावों को उपयोगी एवं महत्वपूर्ण बताया।

कांची कामकोटि पीठ के श्री शंकराचार्यजी ने उपसंहार में अपने वक्तव्य

में कहा मेरे निमंत्रण पर आज जो इतने धर्मगुरु पधारे हैं मैं इसके लिए हार्दिक प्रसन्नता प्रकट करता हूं। आज देश तथा विश्व को धार्मिक संस्कारों की बहुत बड़ी जरूरत है तभी वैज्ञानिक प्रगति का सही उपयोग हो सकता है। कभी-कभी धर्म के नाम पर लड़ाई-झगड़े व दंगे-फसाद होते हैं यह दुःख का विषय है। सभी धर्मगुरुओं को अपने अनुयायी वर्ग में प्रेम और एकता की भावना बढ़ानी चाहिए। हर व्यक्ति के मन में अशांति और तनाव दिखाई दे रहा है, उसे धर्म के द्वारा ही दूर किया जा सकता है। श्री शंकराचार्यजी ने अपने वक्तव्य में अणुव्रत और आचार्य तुलसी का स्मरण किया।

इस अवसर पर मुनि हर्षलाल द्वारा सूक्ष्म अक्षरों में लिखित भगवद्गीता की फोटो स्टेट प्रतियां समाज के प्रमुख लोगों द्वारा धर्मगुरुओं को भेंट की गई। शंकराचार्यजी ने उस प्रति को सिर पर लगाकर स्वीकार किया। समारोह के बाद शंकराचार्यजी के पास सभी धर्मगुरुओं की संगोष्ठी हुई, जिसमें पारस्परिक परिचय तथा विचारों का आदान-प्रदान हुआ।

इससे पूर्व सन् 1974 में शंकराचार्यजी का दिल्ली आना हुआ। कार्यकर्ताओं के निवेदन पर अपने अनुयायियों के साथ पद्यात्रा करते हुए प्रातःकाल अणुव्रत भवन आये। उस समय हम वहां ठहरे हुए थे। शंकराचार्य की कई औपचारिकताएं होती हैं पर उन्होंने सहज भाव से नीचे आंगन पर बराबर बैठकर वार्तालाप किया। शंकराचार्यजी ने कहा मैं अणुव्रत से पहले से परिचित हूं। आज अणुव्रत भवन में आकर तथा आपसे मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूं।

इस अवसर पर शंकराचार्यजी ने एक जिज्ञासा प्रस्तुत करते हुए कहा आप जैन लोग ईश्वर को नहीं मानते फिर सर्वधर्म समन्वय कैसे हो सकता है? मैंने जिज्ञासा का समाधान करते हुए जैन दर्शन में वर्णित ईश्वरवाद के स्वरूप पर प्रकाश डाला। इसके साथ यह भी बताया जैनधर्म वीतरागता का उपासक है। जो वीतराग है वे हमारे उपास्य हैं, पूज्य हैं। उनका नाम चाहे जो भी हो। आचार्य हैमचन्द्र ने निम्न श्लोक में इस विषय पर मार्मिक प्रकाश डाला है

भव बीजांकुर जननाः रागाद्याक्षय मुपागतायस्य,
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा हरो जिनोवा नमस्तस्मै।

यदि सभी संत उनके बताए मार्ग का अनुसरण करें तो समाज का सही निर्माण हो सकता है। शंकराचार्यजी ने इस श्लोक को दूसरी बार सुना। उन्होंने कहा जैनधर्म के विचार बहुत उदार हैं। इन विचारों में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती है।

इस वार्तालाप में अणुव्रत समिति के प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित थे। उन्होंने शंकराचार्यजी का स्वागत किया। श्री शंकराचार्यजी को अणुव्रत भवन में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी।

महावीर स्वामी

जीवन सफल हो जायेगा हर मुश्किल होगी हल
भोले-भले महावीर स्वामी के चरणों में चल

सेवा समर्पण साधना से जीवन जी भाई
सदभावना सद्कामना से जीवन जी भाई
सुख शान वैभव प्यार पूंजी आती है हर पल
भोले-भले महावीर स्वामी के चरणों में चल।

भूलकर भी भूल ना जाना भोली सूरत को
देव दर्शन करके रखना मन में मूरत को
पथरील पथ में बिछ जायेगी फूलों सी मखमल
भोले-भले महावीर स्वामी के चरणों में चल।

चमत्कार की पावन मूरत सुख सागर महावीर
सत्य अहिंसा संयम प्रेम का हर आखर महावीर
अमृत वचन से होती है जन जीवन में हलचल
भोले-भले महावीर स्वामी के चरणों में चल।

दया धरम के कर उजियारे धरती पे भरपूर
ताकि हिंसा के अंधियारे जग से जाएं दूर
कल्याणकारी काम का मिलता है मीठा फल
भोले-भले महावीर स्वामी के चरणों में चल।

नाम लो बिगड़ा हुआ हर काम बनता है
जिस घर लगे तस्वीर वो घर धाम बनता है
दर्शन से सूनी गोद का भर जाता है आंचल
भोले-भले महावीर स्वामी के चरणों में चल।

भक्ति भाव में संत जगे जब दुनिया सोती है
इसीलिए इनके चरणों में जन्नत होती है
इनका चमन इनका गगन इनका है सारा जल
भोले-भले महावीर स्वामी के चरणों में चल।

● **अब्दुल जब्बार**
48, नूर निकेतन, कुम्भानगर बाजार, चित्तौड़गढ़ (राज.)

अगर आप शाकाहारी रहेंगे।
पशु-पक्षी आपके आभारी रहेंगे।।

कहां गयी हमारी आत्मीयता

सुरेश 'आनन्द'

18 अप्रैल 1938 को मेरा जन्म हुआ। मैंने बहत्तर वर्ष पूर्ण कर तिहत्तरवें वर्ष में प्रवेश किया। सभी को मालूम है कि दुनिया तो बहुत बड़ी है। इसकी जनसंख्या भी बहुतायत से है।

पर सवाल यह है कि दुनिया की बहुतायत से दिखने वाली जनसंख्या में अपने कितने हैं? अपना कह सकें इनमें आत्मीय कितने हैं? क्या हमारी आत्मयीता हमें दिखती है?

हम तो बहुतायत से दिखने वाली जनसंख्या में भी सुनसान खड़े हैं। हमारा कोई भी तो नहीं है। मेरे बाबा रौबदार थे। दादी बताती थी वह ग्वालियर रियासत के न्यायाधीश थे। उनके सात बेटे थे। वह मेरे ताऊजी, पिताजी, चाचाजी थे। मैं उस समय अनुशासित सिपाही जैसा रहता था। अनुशासित भी जीवन का मुख्य उद्देश्य हुआ करता था। जब मैं जीवन के सात दशक व्यतीत कर चुका यही धारणा निश्चित परिपक्व हुई कि अपने घर में अनुशासन जीवन का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। अगर जीवन में अनुशासन नहीं है तो यह मान लेना चाहिए कि सचमुच में जीवन ही निर्रथक है।

इसीलिए अब जबकि मेरे जीवन में माता-पिता, ताऊ, चाचा, मामा, नाना कोई भी नहीं है तब एक मात्र विचारणीय प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि तब मैं अकेला ही एकांत में खड़ा हूं तब मुझे खड़ा किसने किया था? जिसने भी खड़ा किया था उन्होंने मेरे जीवन का उद्देश्य क्या रखा था? उस समय आत्मविश्वास कैसा होता था? व्यक्ति की आत्मीयता क्या थी? क्या यह तमाम सवाल बनाने वाले या सिखाने वाले नादान थे? मेरा तो विश्वास है ऐसे लोग नादान तो कदापि नहीं होंगे?

वर्तमान में मेरे जीवन में यह तो निर्विवाद सत्य है कि पूर्वजों की

आत्मीयता ही मेरा सत्य था। अगर मैं किसी का आत्मज हूं तो यह भी सत्य है कि दुनिया में आत्मीयता ही मैत्री स्नेह-संबंध बनाकर इतनी बड़ी दुनिया का निर्माण किया गया होगा। अब यह तो हमारे स्वभाव का कर्त्तव्य है कि हमें किसी आत्मीयता का पालन तो करना ही होगा? किसी का उपहास तो नहीं करते होंगे? जिसका उपहास करते होंगे इसीलिए हम सुनसान टीले पर खड़े निहारते रहे अब मेरे दूर-दूर तक कहीं भी पिता नहीं हैं। मेरी माता नहीं है। मेरे गुरु नहीं हैं। अर्थात आत्मीयता ही तो ढूंढ रहा हूं? इसीलिए स्वतंत्रता पश्चात हमारी मूल चिंता यही है कि वास्तव में हमारी आत्मीयता आखिर कहां गई है?

आजादी के बासठ वर्षों में इसीलिए वास्तविक प्रश्न है हमारी भावी पीढ़ी, अपने पूर्वजों की भांति राष्ट्रीय अस्मिता क्यों ढूंढ रहे हैं? आखिरकार भावी पीढ़ी इतनी निराश, इतनी अपरिपक्व अपनी अस्मिता के लिए क्यों तड़प रही है? क्या इसे अपनी आत्मीयता नहीं मिल पाएगी?

क्या राजनीतिज्ञों की आजादी का स्वरूप यही था? वर्तमान में हर कोई राजनीतिज्ञों को इसी कसौटी पर क्यों कसता रहा है? राजनीतिज्ञ सिर्फ कुर्सी क्यों ढूंढ-टटोल रहा है। उसके लिए अनुशासन हो या आत्मीयता शायद कोई अर्थ ही नहीं है? तब फिर प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि हमारी आजादी का सार क्या था?

क्या महात्मा गांधी ने अंग्रेजों से अंग्रेजों! भारत छोड़ो! इसीलिए कहा था?

इसीलिए हमें गंभीरता से विचार करना होगा जो लोग कुर्सी के दास हैं या सिर्फ पूंजीवादी हैं और अपनी भावी पीढ़ी को सत्ता की कुर्सी, पूंजी सौंपने के लिए ही उपदेश देते रहे हैं, भावी पीढ़ी उनके चंगुल से पीछा कैसे छुड़ा सकेगी?

जब तक हम इस पर विचार नहीं करेंगे तब तक मान लीजिए हमारी वास्तविक आजादी अभी नहीं मिली है। जब तक संकल्प नहीं लेते हैं तब तक हमारी आत्मीयता को भावी पीढ़ी नहीं समझ सकेगी? तब तक आत्मीयता नहीं समझ सकेंगे तब तक भावी पीढ़ी माता-पिता, गुरु की गुरुता भी नहीं समझ सकेगें? जो कि समझाना ही वास्तविक आजादी की और राष्ट्र की धुरी मानी जाती है।

अब हमारी भावी पीढ़ी को यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि पाश्चात्य संस्कृति से राष्ट्र में आजादी नहीं टिक पाएगी। आजादी को स्थायी रूप देने के लिए राष्ट्र की भावी पीढ़ी को अपने पूर्वजों की आत्मीयता को आत्मसात करना होगा? पूर्वजों का आत्मसम्मान करना होगा? पूर्वजों के ज्ञान संस्करण उपदेश भी अभिभूत करना ही राष्ट्रीय आत्मीयता को अंगीकार करना है।

आनन्द परिधि, एल-62,
पं. प्रेमनाथ डोगरा नगर
रतलाम - 457001 (म.प्र.)

सियाराम कबहूँ सुध लेहो?

द्वारकेश भारद्वाज

मर्यादा पुरुषोत्तम राम और जगत जननी मातुश्री सीता को युगयुग का नमस्कार। गोस्वामी तुलसीदास के सर्वस्व पतित पावन राम की बंधुत्व भावना से ओतप्रोत लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न व संकट मोचन हनुमान सहित राम का दरबार साधना, आराधना, भक्ति व शक्ति का समागम है और है पीड़ित मानवता का मनोहारी सम्बल। फिर राम ही राजाराम प्रजाराम का ही राज्य एक स्वप्न क्यों?

आज जब चहुंओर हाहाकार है बलवान निर्बल को भूखे भेड़ियों की भांति एक ही बार में अपने हलक से नीचे उतारने को तत्पर है। पतितों-दलितों, वनचारियों के उद्धार के नाम पर तपन पैदा कर लोग अपनी रोटियां इस तपन में सैंकने को तत्पर हैं। क्या उनका राम निकल चुका है?

राम नाम का दुपट्टा ओढ़ राम नाम जपते राम तेरे भक्त कहलाने वालों ने तेरी गंगा को मैला कर दिया है। मुख में राम नाम - सियाराम और बगल में छुरी। यह कैसी विडम्बना कुत्सित-लीला कैसा फरेब? कहां है निर्बल का बलराम? राम राम यह कैसा घोर अनाचार है पीड़ित मानवता के साथ?

घट-घट के वासी हे राम! यही तो तेरी भी जन्मभूमि व क्रीडा-स्थली एवं लीला-स्थली है। आज अंतःस्थली की कलिका तुम्हारा दो आखर का पुनीत नाम मन-मानस में आते ही प्रस्फुटित हो जाता है। सद्भाव जिह्वा द्वारा हृदय वातायन के गहन पर खोले तुम्हारी पावन स्मृति में श्रद्धा के अपरिमित शब्द-सुमन समर्पित करने को उमंगित है यह हृदय।

हे लोकनायक! तुमने तो मानवता की दृष्टि को विस्मृत करने वाले नर, वानरों, नभचरों व जलचरों तक का हाथ थामा था और उन्हें समझाया था सत्य पथ का पाठ - अपनी विराट समन्वयकारी भावना से। अनेकानेक रूप में नीरस जीवन को नवीन पीयूषमयी भक्ति-शक्ति धारा में अवगाहन करवा दिया था। मानवता के आदर्श को आज भी परिस्थिति की मांग आपका सम्बल पाने की है। किन्तु आज तो मानव भी अपने कर्त्तव्यों से विमुख जो हो गया है। उसने तो मानवीय मूल्यों व दृष्टिकोण को ही विस्मृत कर दिया है। वह भारतीयता को छोड़ विदेशी दानवता का मुखौटा लगाये कृत्रिम, भ्रमित केवल भौतिक संस्कृति से ही प्रेरित है। अस्तु आज पुनः हे सियाराम! तुम्हारी आवश्यकता है माँ भारती को।

हे भक्त वत्सल! ज्ञान, भक्ति व कर्म की त्रिवेणी से आपकी इस जन्मभूमि को पुनः पुनीत करो। लोकरंजक राम! आज आपके चरित्र के आचरण क्षण हैं। क्योंकि आज मानव उस 'मानस' से विरल-विलग होता जा रहा है और भुला बैठा है उस राम ओर उसके आदर्श रूप को जो जगती का प्राण रहा है।

हे युगावतार सियाराम! आज हमें पुनः आलम्बन दो। रामचरित मानस के मर्यादा के आलोक से कर्त्तव्य-पथ को आलोकित करो। जीवन के लिए आदर्श प्रतिष्ठित करो और विषम नीरसता-कटुता हटाओ। एक बार बस एक ही बार ताकि भाव कुसुमों की सौरभ तुम तक पहुंचती रहे, यही हमारी भावना व कामना है। अभिलाषा है इस भावार्चन में प्रमाद न हो।

तुम्हारी अवतरण लीला से कब हमारा सुप्त बंजर हृदय उर्वर होगा। आओ शीघ्र ही आओ ना पीड़ित मानवता को तुम्हारी प्रतीक्षा है।

बी-68 हवेली ज्ञान द्वार, सेठी कॉलोनी, जयपुर - 302004 (राज.)

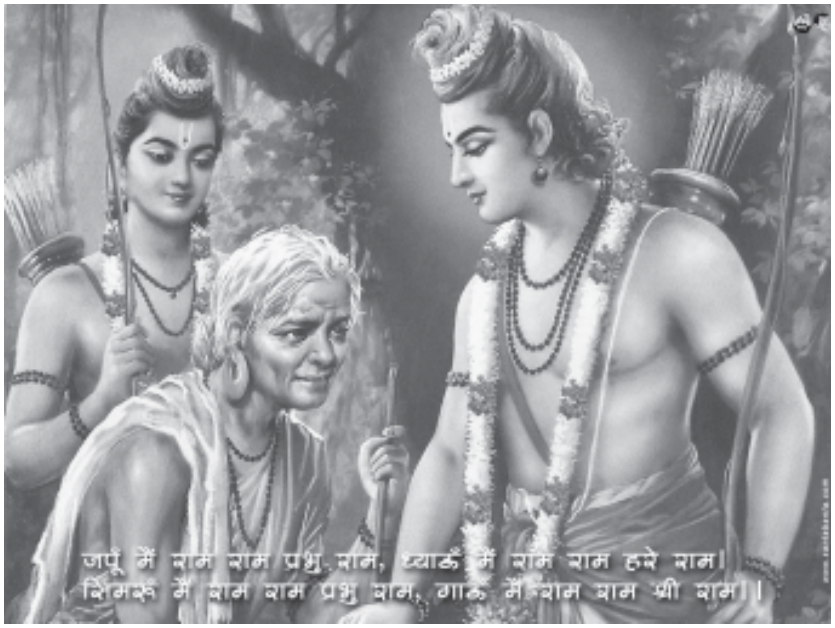

बेहतर मूल्यों की तलाश है साहित्य

जसविंदर शर्मा

अमेरिकी लेखक इरविन शिफ को अदालत ने 13 साल की कैद की अनोखी सजा सुनाई है। उसने न तो कोई चोरी की है, न कोई डाका ही डाला और न कोई अन्य अपराध किया है। इस लेखक ने बस एक पुस्तक लिखी है। इरविन शिफ ने अपनी पुस्तक द्वारा अमेरिकी नागरिकों को सलाह दी है कि वे सरकार के प्रति आयकर के भुगतान में देरी या कोताही हो जाने पर बिल्कुल न डरें क्योंकि कोई भी अमेरिकी कानून उन्हें आयकर देने को बाध्य नहीं कर सकता। उसने इतने मजबूत तर्क दिए हैं कि लोगों का सारा डर दूर कर दिया और हजारों लोगों ने आयकर देने से इनकार कर दिया।

सिर्फ किताब में आयकर न देने के पक्ष में अपने तर्क देने के आधार पर ही इस लेखक पर मुकद्दमा चलाया गया। जज महोदय ने लेखक को 13 साल की सजा सुनाते हुए कहा कि उसकी वजह से लाखों लोगों ने अपना आयकर नहीं चुकाया और इससे सरकार को भारी आर्थिक नुकसान हुआ है। लेखन अगर असामाजिक विचारधारा का प्रचार करना शुरू कर दे तो समाज को कितना नुकसान पहुंचा सकता है।

आम धारणा यह है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। अब यह माना जाने लगा है कि महान कला जिन्दगी का दर्पण ही नहीं होती बल्कि वह जिन्दगी में हिस्सा लेकर उसे बदल भी देती है। साहित्य जब-जब सामाजिक संदर्भों से जुड़ा रहता है और समाज के सरोकारों का सच्चा विश्लेषण करता रहता है, तब तब उसकी विश्वसनियता कायम रहती है। लोग उससे प्रेरणा पाते रहते हैं। जब जब साहित्य सनसनी, आतंक, हिंसा व सैक्स आदि के पक्ष में जा खड़ा होता है, लोग उससे मुंह मोड़ लिया करते हैं।

इन सब अर्न्तविरोधों के बावजूद साहित्य, कला, संगीत व धर्म आदि ऐसे क्षेत्र हैं जो व्यक्ति के भीतर मनुष्यता जगाने की कोशिश करते हुए देखे जा सकते हैं। लेखन में बढ़ते असामाजिक तत्वों से हिंसा, आतंकवाद और अपराध को पनपने के अवसर मिल रहे हैं। भौतिक चकाचौंध के पीछे अंधाधुंध दौड़ने से मानवीय सम्बंधों में दरारें आ रही हैं। प्रेम, दया, ममता व अहिंसा में मंदता आ रही है। बड़े-बड़े नेता, नायक और अधिनायक घोटाले व हिंसा करने के बाद पश्चाताप की अग्नि में जलने की बजाय दुराग्रह पर उतर आए हैं। झूठ को छिपाने के लिए अदालतों में जाकर पैसों के दम पर स्वयं को सत्यवादी सिद्ध करने की जुगाड़ में रहते हैं और सफल भी हो जाते हैं।

किताबों के प्रति आकर्षण घट रहा है। टेलिविजन ने उसकी जगह ले ली है। साहित्य के लिए वहां कोई स्थान नहीं है। उसका मानना है कि साहित्य टीवी पर दर्शकों की संख्या नहीं बढ़ाता। टीवी पर सैक्स बढ़ा है तो दर्शकों की अपार संख्या भी बढ़ी है। सैक्स सिर्फ टीवी पर ही नहीं है, वह अखबारों और अश्लील पत्रिकाओं के जरिए घर की पावन देहरी के भीतर आ गया है। कभी लेखों, कथाओं, इंटरनेट व तस्वीरों के माध्यम से तो कभी विज्ञापनों के बहाने। कहा जा रहा है कि जमाना बदल रहा है मगर यह बेहद ओछा तर्क है। जमाना तो सदा से ही बदलता रहा है मगर आज का व्यक्ति संवेदनहीन हो गया है। एक दूसरे से बहुत आगे निकलने की अंधी हवस में वह सचमुच अंधा हों गया है। ऐसे में धर्म, कला और साहित्य ही उसे सन्मार्ग पर ला सकते हैं।

अन्धे को आईना दिखाना और भैंस के आगे बीन बजाना, दोनों काम अहमक लागों के हो सकते हैं मगर आईने के बारे में एक बात बिल्कुल सच है कि आईना कभी झूठ नहीं बोलता। समाज का आईना उसका साहित्य, कला व संगीत होता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है जिसमें उसके संघर्षों की व्यथा-कथा, उसके हर्षोल्लास तथा उसकी विचारधारा प्रतिबिम्बित होती है। किसी देश की संस्कृति तथा सामाजिक उत्थान का अनुमान उस के साहित्य की तुर्शी तथा कला के तीखे तेवरों से लगाया जा सकता है।

साहित्य समाज की सही तस्वीर दिखाता है। प्रख्यात रूसी कहानीकार एन्टन चेखव का कहना है, 'आदमी को यह दिखा दो कि वह वास्तव में कैसा है तो वह बेहतर हो जाएगा।' आईना दिखाने का काम बहुत ही मिशनरी व जोखिमभरा है। आईना खुद ही साफ न हो, टेढ़ा-मेढ़ा हो या घटिया क्वालिटी का हो तो उसमें प्रतिबिम्बित होने वाले अक्स स्पष्ट नहीं होते। इससे गफलत और बढ़ जाती है। लेखक स्वयं रूग्ण हो, पूर्वाग्रहों से घिरा हो, गहरे अवसाद या विषैले अनुभवों से ग्रसित हो तो फिर वह स्वस्थ चिंतन नहीं कर पाएगा। ऐसे में वह समाज की विकृतियों व कमजोरियों का सही चित्रण नही कर पाएगा। एक हंसता हुआ चेहरा भी उसे उदास व कुंठित दिखेगा तथा उस हर साबुत चीज में खोट नजर आएगा।

लेखक समाज के सांस्कृतिक सफर का संगे-मील होता है। सच्चा लेखक दिल की जमीन में दर्द गूंथता है। कागज को अपने भीतर के भेद बताता है तो पढ़ने वालों के जेहन में रोशनी के फूल खिल उठते हैं और जीवन में जागृति की खुशबू फैल जाती है। लेखक समाज का अहम हिस्सा होता है। वह समाज में हो रही तब्दीलियों के मद्देनजर गुजरे हुए

कल गुजरते हुए आज और आनेवाली सुबह की कहानियां लिखता है ताकि पिछली पीढ़ियों का अनुभव नष्ट न हो और आने वाली नस्लें उस से कुछ नया सीख सकें।

किसी भी काल में समाज को उसके समर्थ लेखक की कृतियों ये जांचा-परखा जा सकता है। लेखक के मन रूपी दर्पण पर समाज की तस्वीर उभरती है। वह अपने किरदार गढ़ता है, समय के अनुसार बदलते परिवेश की जरूरतें बताता है, समाज रूपी पेड़ की सड़ी-गली पत्तियां निकालता है ताकि पौधा हरा-भरा रहे।

सच्चा लेखक अपने समय के सच को निर्भीक होकर निरूपित करता है। उसमें इतनी हिम्मत होती है कि विरोधाभासों, विद्रूपताओं व विडम्बडनाओं को दर्शा सके। दोगले व संदिग्ध चरित्रों पर उंगली उठाने का साहसपूर्ण काम करने की पहल वही करता है। एक शायर कहता है, 'हरचन्द आईना हूं मगर इतना हूं नाकबूल, मुंह फेर ले वह जिसके मुझे रू-ब-रू करें। कहानियां व उपन्यास एक आईने की तरह समाज की सच्ची तस्वीर पाठकों के सामने पेश करते हैं। आईने में यही ईमानदारी होती है कि वह रंगों व आकारों को हू-ब-हू दिखाता है। समाज में न तो देवता निवास करते हैं और न ही समाज पूरी तरह से बुरे लोगों से अटा पड़ा है। काले रंग में भी सफेद रंग के शेड्स होते हैं।

बर्नाड शॉ ने भी कहा था कि 'डेविल इज नॉट सो ब्लैक, ऐज हीइज पेंटिड', अर्थात शैतान उतना ज्यादा काला यानि घृणित नहीं है जितना साहित्य में उसे चित्रित किया जाता हैं। मानवीय चरित्र पूरी तरह काले या गोरे यानि बुरे या अच्छे नहीं होते। अच्छे आदमी में भी बुराई के लक्षण होते हैं और बुरे आदमी में बहुत-सी अच्छाइयां होती हैं। लेखक पूरे समाज को देखता है और हमें दिखाता है। उसके चरित्रों में मिट्टी की महक होती है। वह पाठकों व समाज के किरदारों के बीच एक आईने की तरह खड़ा हो जाता है।

लेखक बहुत बार सिर्फ वही नहीं लिखता, जो देखता या अनुभव करता है या जो उनके आसपास घटित होता है बल्कि बहुत बार वह भविष्य के खामोश कदमों की आहट भी सुनता है। उसके रचनात्मक प्रयासों से भविष्य में होने वाले परिवर्तनों की छवि प्रतिबिम्बित होती है जिससे आने वाले समय में समाज में सकारात्मक बदलाव होते हैं। आवेगात्मक भावनाओं, सामाजिक सम्बधों व समस्याओं, जीवन के अनजाने पहलुओं तथा अतिसाधारण या विलक्षण प्रतिभाओं पर रोशनी डालने की गर्ज से साहित्य को रचा जाने लगा। चाहे वे भोजपत्रों पर देवताओं की स्तुतियां हों या छापेखाने का आविष्कार और कागज पर मानव की व्यथा व जीत की कहानियां या प्रेम के गीत.... इन सब के पीछे आदमी की सोच यही रही.... यह नहीं, इससे कुछ बेहतर मूल्य भी हैं, कुछ और भी है जिससे मौजूदा निजाम में परिर्वतन किया जा सकता है।

5/2डी रेल विहार मंसादेवी पंचकुला-134109 हरियाणा

दोहे

पैसों में ही लगा है, इन सभी का ध्यान;
खत्म हो गई इसीलिए, रिश्तों की पहचान।

जितना भी करिये आप, करें हरकतें नीच;
गुम है ईमानदारी, भ्रष्टों के अब बीच।

चाहे जितने हो बड़े या हो छोटे आप;
मगर दे नहीं किसी को, कैसा भी संताप।

खुद के साथ दूजों को, दे आप यही सीख;
सलामत है हाथ-पैर, न लें रहम की भीख।

बातें ऐसी कीजिए, वाणी हो गंभीर;
निकले आप के मुख से, मीठे-मीठे तीर।

मत कीजिए काम ऐसा, बढ़े जिससे क्लेश;
कटुता को मिटाकर अब, दे प्रेम का संदेश।

कारनामें काले हैं, फिर भी ना बदनाम;
चलता है चारों तरफ, यारों उनका नाम।

बेच पुरखों की ज़मीन, किया न ज़रा विचार;
कॉलोनी में बस गया, आखिर मेरा यार।

इरादे हो अगर नेक तो, होवेंगे सब काम;
अर्जुन के लक्ष्य जैसे, लगे सुबह से शाम।

कोई सुनता है नहीं, करें किसे फरियाद;
गूंगे-बहरों से बनी, यारों यह बुनियाद।

भीतर जिनके विष भरा, बाहर है मुस्कान;
ऐसे लोगों से रहें, सदा आप सावधान।

करते हैं वे सदा ही, काम ईमानदार;
मगर हुए साबित यारों, फिर भी वे मक्कार।

प्रेमचन्द आकर देखो, होरी के अब हाल;
हुआ गांव में आज वो, सबसे ही खुशहाल।

● **रमेश मनोहरा,** ***शीतला गली, जावरा***
जिला-रतलाम (म.प्र.) 457221

अहिंसा यात्रा का लाडनूं में ऐतिहासिक स्वागत

लाडनूं, १९ फरवरी। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने सुजानगढ़ से लाडनूं के लिए विहार किया। इस अवसर पर जनता का सैलाब उमड़ पड़ा। सुजानगढ़ और लाडनूं एकमेक हो रहे थे। नगर में पहुंचते ही लोगों की भीड़ भव्य और व्यवस्थित जुलूस का रूप ले चुकी थी। विमल विद्या विहार और जैविभा विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं की अनुशासित पंक्ति उन्हें अलग पहचान दे रही थी। नगर के मुख्य मार्ग से होता हुआ जुलूस मुख्य द्वार से प्रवेश कर सुधर्मा सभा में पहुंचा और स्वागत सभा के रूप में परिणत हो गया।

जैन विश्व भारती में पधारने से पूर्व आचार्य महाश्रमण वृद्ध साध्वियों को दर्शन देने हेतु सेवाकेन्द्र में पधारे। सबकी कुशलपृच्छा की।

जैन विश्व भारती में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में नगरपालिका अध्यक्ष बच्छराज नाहटा, विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा, सेवाकेन्द्र की व्यवस्थापक साध्वी काव्यलता, ज्ञानशाला के बच्चों तथा स्थानीय सभा के अध्यक्ष कमल सिंह खटेड़ ने गीत और वक्तव्य के द्वारा आचार्य महाश्रमण की अभिवंदना की। सभा की ओर से प्रस्तुत अभिनंदन पत्र का वाचन जैविभा के उपमंत्री विजयसिंह चोरड़िया ने किया। जितेन्द्र नाहटा एवं प्रधान ट्रस्टी रणजीत कोठारी ने अभिनंदनपत्र पूज्यवर को उपहृत किया। आदर्श विद्या मंदिर की ओर से भी एक अभिनंदन पत्र आचार्य महाश्रमण को उपहृत किया गया। मंत्री मुनि सुमेरमल ने अपनी जन्मभूमि की ओर से आचार्यश्री का अभिनंदन किया।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने अपने वक्तव्य में कहा 'गुरु के चरण जहां टिकते हैं, वह धरा धन्य हो जाती है। वे आंखें भी तृप्त हो जाती हैं, जिन्हें गुरु के दर्शन प्राप्त होते हैं। आज जैनविश्वभारती का कण-कण पुलकित है, क्योंकि आचार्य महाश्रमण यहां पधारे हैं।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने अभिभाषण में कहा लाडनूं की धरा ऐतिहासिक है। इसे तीर्थ भूमि के रूप में भी जाना जाता है। यह आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की कर्मभूमि है। आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष की आहट भी सुनाई देने लगी है। इस दृष्टि से कुछ ठोस कार्य करने के लिए सबको कटिबद्ध होना है।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा जीवन तो हर आदमी जीता है, किन्तु अलग-अलग तरीके से। कुछ लोग साधनाप्रधान जीवन जीते हैं तो कुछ लोग भोगप्रधान। कुछ लोग अनासक्त जीवन जीते हैं तो कुछ लोग आसक्ति में इतना डूब जाते हैं कि जीवन के उद्देश्य को ही विस्मृत कर देते हैं। पदार्थों की आसक्ति से मिलने वाला सुख क्षणिक होता है। आसक्ति साधना का एक बड़ा अवरोध है। यह आसक्ति आगे चलकर कामना का रूप ले लेती है। कामना की पूर्ति न होने पर क्रोध आता है। होना तो यह चाहिए कि समूह में रहकर भी व्यक्ति एकोऽहं की साधना करे। अपने आपमें रहना एक विशेष साधना है। साधक कषाय मंदता और निर्धारित आचार के प्रति जागरूक रहे।'

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा 'लाडनूं के साथ धर्मसंघ का बहुत पुराना इतिहास जुड़ा हुआ है। गुरुदेव तुलसी लाडनूं के रत्न थे। उन्होंने यहां मुझे महाश्रमण और साध्वीप्रमुखा को महाश्रमणी एवं संघ महानिदेशिका पद पर नियुक्त किया। चातुर्मास के बाद मैंने तीर्थयात्रा की बात कही थी। हमारे सेवाकेन्द्र एक प्रकार के तीर्थ हैं। इस क्रम में प्रायः सेवाकेन्द्र के साधु-साध्वियों के दर्शन हो गए थे। लाडनूं सेवाकेन्द्र में भी वृद्ध साध्वियों के दर्शन हो गए। हमारी अहिंसा यात्रा के दो मुख्य निर्धारित क्षेत्र हैं मेवाड़ और मारवाड़। गुरुदेव के अवशेष कार्य को पूरा करने के लिए ही मैं इस यात्रा के लिए उद्यत हुआ हूं।

लाडनूं और जैन विश्वभारती के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा लाडनूं का महत्त्व एक-दो दृष्टि से नहीं, कई दृष्टियों से है। लाडनूं गुरुदेव तुलसी की जन्मभूमि तो है ही साथ ही शिक्षा, शोध, संस्कार का बड़ा केन्द्र जैन विश्वभारती जैसा संस्थान, विश्वविद्यालय, पारमार्थिक शिक्षण संस्था और समणियों का यहां मुख्यालय है। अनेक बार प्रश्न होता है कि तेरापंथ की राजधानी कहां है? तो लोगों को क्षण भर के लिए सोचना पड़ता है। सबसे प्राचीन सेवाकेन्द्र लाडनूं है, धर्मसंघ के धर्मोपकरणों का भंडार यहां है। तेरापंथ की अनेक गतिविधियों का यह केन्द्र बन रहा है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए आज मैं लाडनूं को तेरापंथ की राजधानी स्थापित करता हूं। राजधानी के अनुरूप इसकी गरिमा प्रवर्द्धमान रहे। यहां के विद्यालय और विश्वविद्यालय में कितने ही विद्यार्थी विद्यार्जन कर रहे हैं। सबमें ज्ञान के साथ-साथ सदाचार और अनुकंपा की चेतना का विकास हो, यही काम्य है। कार्यक्रम का संयोजन संजय खटेड़ ने किया।

उल्लेखनीय बिन्दु

● आचार्य महाश्रमण आचार्य पद पर अभिसिक्त होने के बाद प्रथम बार लाडनूं, जैनविश्वभारती पधारे। विशाल जुलूस एवं भव्य स्वागत समारोह का दृश्य नयनाभिराम था। जनता का उत्साह दर्शनीय था। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के तीन विशाल भवनों का उद्घाटन समारोह गरिमापूर्ण रहे।

● जापान के साकामोतो के नेतृत्व में अठारह सदस्यीय दल ने जैविभा में पूज्यवर के दर्शन किए। उन्हें प्रेक्षाध्यान के विविध प्रयोग कराए गए। प्रयोगों से सभी बहुत प्रभावित हुए।

● प्रेक्षा फाउण्डेशन के तत्त्वावधान में तुलसी अध्यात्म नीडम् में प्रेक्षा प्रशिक्षकों की परीक्षा का आयोजन हुआ।

● १९-२१ फरवरी को लाडनूं में आचार्यवर के सान्निध्य में एवं मुनि सुखलाल के निर्देशन में अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा एक त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। इसमें १४ प्रदेशों के १२७ शिक्षकों ने भाग लिया। सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि देशभर में नशामुक्ति अभियान चलाया जाए तथा एक करोड़ छात्र एवं शिक्षकों से नशामुक्ति की हस्ताक्षरित स्वीकृति प्राप्त की जाए। लाडनूं से पूज्यवर के विहार के साथ ही इस महाअभियान का शुभारंभ हो गया।

● जैविभा विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में आचार्यवर ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी (सन २०१३-२०१४) के संदर्भ में लाडनूं तहसील को नशामुक्त बनाने का महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्ट प्रस्तुत करते हुए कहा 'एक समिति का गठन करके इस दिशा में काम किया जाना चाहिए।'

● लाडनूं में आचार्यश्री का तीन दिवसीय संक्षिप्त प्रवास होने पर भी कोलकाता, दिल्ली, मुम्बई, बेंगलोर, चेन्नई, अहमदाबाद, सूरत आदि सुदूर क्षेत्रों में प्रवासी लोग बड़ी संख्या में लाडनूं पहुंचे।

अणुव्रत दिवस पर आचार्य महाश्रमण का उद्बोधन

मनानी (राजस्थान), १ मार्च। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण मनानी गांव में पधारे। प्रवास स्थानीय विद्यालय में रहा। आज के दिन अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में कन्यामंडल की कन्याओं ने गीत प्रस्तुत किया। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, नागौर जिला यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष चेतन डूडी, प्रेमसिंह चौधरी, भीखमचन्द नखत ने अणुव्रत के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। बोरावड़ से समागत मुनि पारसकुमार ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

आचार्य महाश्रमण ने कहा साधु का तात्पर्य है समता की साधना करने वाला। वह महाव्रती होता है। महाव्रत की साधना सबके लिए संभव नहीं। मध्यम मार्ग है अणुव्रत। बारह व्रतों की अनुपालना करने वाला व्रती श्रावक होता है। व्रतों का जीवन में बहुत महत्त्व है। व्रतों को जीवन में धारण किया जाए तो धर्म स्वयं जीवन में उतर जाता है।'

अणुव्रत की चर्चा करते हुए आचार्यश्री ने कहा 'छह दशक पूर्व गुरुदेव आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया। इसके लिए उन्होंने देश के विभिन्न भागों की पदयात्रा की। हर वर्ग के लोगों से व्यापक संपर्क किया और उन्हें नैतिक एवं प्रामाणिक बनने के लिए प्रेरित किया। आज अनेक संस्थाएं अणुव्रत अभियान को गतिशील बना रही हैं। जन कल्याण, समाज कल्याण और राष्ट्र कल्याण की भावना से चलाए जा रहे अणुव्रत अभियान को व्यापक समर्थन मिला है।

इच्छाओं का परिसीमन

२ मार्च। आचार्य महाश्रमण का कालवा में प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ। मध्यवर्ती 'मनानी' गांव के सुरेश मंत्री एवं अन्य ग्रामवासियों के अनुरोध पर आचार्यश्री ने कई घरों का स्पर्श किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय सरपंच रमेश बुगालिया एवं मकराना पंचायत समिति के सदस्य भूराराम डूडी ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा साधुत्व का पालन वही कर सकता है जो कामनाओं पर विजय प्राप्त कर लेता है। कामना से आक्रान्त व्यक्ति कदम-कदम पर विषाद को प्राप्त करता है। कामनाओं का अंत करने वाला व अपने आप में संतुष्ट रहने वाला स्थितप्रज्ञ होता है। कामनाओं के आधार पर व्यक्ति की तीन कोटियां होती हैं महेच्छ, अल्पेच्छ एवं अनिच्छ। गृहस्थ अनिच्छ तो नहीं बन सकता, किन्तु अल्पेच्छ तो बन ही सकता है।

आचार्यश्री ने आगे कहा भारत देश सद्भागी इसलिए है, क्योंकि यहां ज्ञानी, ध्यानी और तपस्वी ऋषि-मुनि हुए हैं। उन्होंने स्वयं का कल्याण करते हुए परकल्याण का भी सलक्ष्य प्रयास किया। हम भी जन-जन के आत्मोत्थान व अनुकंपा की चेतना के विकास के लिए अहिंसा यात्रा के साथ परिभ्रमण कर रहे हैं।

अपराह्न में मकराना के एस.डी.एम. प्रमोद जैन ने आचार्य महाश्रमण के दर्शन कर कई विषयों पर चर्चा की।

६ मार्च। किनसरिया से विहार कर आचार्य महाश्रमण परबतसर पधारे। यहां उनका प्रवास सीमा मेमोरियल कॉलेज में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में कॉलेज की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। बाबा रामदेव शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष देवाराम ने आचार्यश्री के स्वागत में अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा इस दुनिया में सभी प्राणी सुख चाहते हैं। एक सुख वह होता है, जो बाह्य निमित्तों से मिलता है। दूसरा सुख वह है जो आदमी के भीतर से जुड़ा हुआ होता है। इसे भावात्मक और आत्मिक सुख भी कहा जा सकता है। यह सुख ही वास्तविक सुख है। बाह्य सुविधाओं के प्राप्त होने पर भी कई बार व्यक्ति भीतर से दुःखी रहता है। यदि जीवनशैली स्वस्थ रहे तो व्यक्ति बाहर और भीतर दोनों ओर से सुखी रह सकता है।

विद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में आचार्यश्री ने कहा विद्यालयों में प्राथमिक स्तर से ही पाठ्यक्रम में अध्यात्म और अहिंसा के अध्याय का समावेश करना होगा। विद्यार्थी जीवन आस्था के निर्माण का महत्त्वपूर्ण समय है। शिक्षा के क्षेत्र में आज बहुत प्रगति हुई है। अनेक कॉलेज और विश्वविद्यालय खुले हैं, खुल रहे हैं। राज्य सरकारों का प्रयत्न है कि कोई भी नागरिक अशिक्षित न रहे। लेकिन शिक्षा प्राप्त करने का जो उद्देश्य है, उसे सर्वांगीण नहीं कहा जा सकता। अप्रिय लग सकता है, किन्तु इस कथन के पीछे यथार्थ है कि शिक्षा और शिक्षालय आज कमाई का जरिया बन रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है शिक्षा के साथ आजीविका और चरित्र-निर्माण का लक्ष्य भी जुड़ा रहे।

मध्याह्न में आचार्य महाश्रमण के निर्देश पर प्रेक्षा प्रध्यापक मुनि किशनलाल आदि संत स्थानीय कारागार में पधारे। वहां मुनिश्री ने कैदियों के मध्य प्रवचन किया और प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। मुनिश्री की प्रेरणा से अनेक कैदियों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। इस अवसर पर मुनि विजयकुमार ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

७ मार्च। आचार्य महाश्रमण रूपनगढ़ पधारे। मार्ग में ग्रामवासियों के अनुरोध पर आचार्यश्री ने गांव के जैन मन्दिर का अवलोकन किया।

आचार्य महाश्रमण ने कहा तृष्णा और महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति नहीं होने पर आदमी दुःखी बन जाता है। लोभ और आसक्ति की प्रबलता भी दुःख का कारण बनती है। सुखी बनने के लिए कामनाओं का अतिक्रमण आवश्यक है। कामना के पाश से मुक्त व्यक्ति सुखी बन सकता है। मनुष्य जीवन बहुत दुर्लभ है। इसे दुःख और संत्रास में बिता देना नादानी के सिवाय और कुछ नहीं। आचार्य महाश्रमण ने इस अवसर पर अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों की संक्षिप्त अवगति दी।

८ मार्च। रूपनगढ़ से विहार कर आचार्य महाश्रमण 'रलावता' पधारे। यहां आपका प्रवास स्थानीय विद्यालय में रहा।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के संदर्भ में आचार्य महाश्रमण ने कहा समाज के विकास में महिलाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। युग के साथ कदम बढ़ाते हुए महिलाएं सशक्त, शौर्यसंपन्न, विवेकसंपन्न और अर्हतासंपन्न बनें, किन्तु युगीन बुराइयों के संक्रमण से सर्वथा बचें। बच्चों को संस्कारवान बनाने का दायित्व मां पर ज्यादा होता है। महिलाएं इस दायित्व की अनदेखी न करें।

अहिंसा यात्रा का किशनगढ़ में भव्य स्वागत

किशनगढ़, ९ मार्च। आचार्य महाश्रमण ने रलावता से किशनगढ़ के लिए विहार किया। मार्गवर्तीय यात्रा में नागोर, जयपुर, अजमेर और मेवाड़ संभाग के लोगों ने भाग लिया। किशनगढ़ के लोग तो प्रफुल्लित थे ही, मेवाड़ संभाग के लगभग पांच सौ लोग यात्रा व्यवस्था दायित्व ग्रहण के अवसर पर आचार्यश्री के चरणों में पहुंचकर प्रसन्नता की अनुभूति कर रहे थे। क्षेत्रीय विधायक नाथूराम सिनोदिया ने आचार्य महाश्रमण एवं अहिंसा यात्रा की अगवानी करते हुए अपने क्षेत्र की जनता की ओर से स्वागत किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यश्री के उद्बोधन से पूर्व मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने मेवाड़ के लोगों को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा देते हुए अहिंसा यात्रा की सफलता के प्रति मंगल भावना व्यक्त की।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने वक्तव्य में कहा 'मेवाड़ के लोग दायित्व की प्रेरणा से अभिप्रेरित होकर बड़ी संख्या में यहां आए हैं। इस यात्रा में आचार्यवर के मिशन की अनुगूंज पूरे मेवाड़ में होनी चाहिए। 'नया मोड़' कार्यक्रम आज के संदर्भ में पूर्ण रूप से प्रासंगिक है। यह यात्रा एक क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में सफल हो, ऐसा प्रयत्न होना चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा 'संत वह है जो शान्त रहता है। साधु महाव्रतों की साधना करता है। गृहस्थ कम से कम अणुव्रत को तो स्वीकार करे। बारह व्रतों की साधना गृहस्थ जीवन को निखार देती है। इस वर्ष बारह व्रत के साथ नशामुक्ति के अभियान को भी जोड़ा गया है। यह अभियान न केवल इतर समाज में, अपितु तेरापंथ समाज में भी व्यापक रूप से चलाया जाए।

मेवाड़ के श्रावक समाज को संबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा किशनगढ़ आने के साथ मेवाड़ सम्मुख आ गया है। आचार्य महाप्रज्ञ की अवशिष्ट यात्रा को पूर्णता की ओर ले जाने का निर्णय कर हम मेवाड़ की ओर बढ़ रहे हैं। मेवाड़ आचार्य भिक्षु की नव्य दीक्षाभूमि और संकल्पभूमि है। वह तेरापंथ की जन्मभूमि है। मैंने पहले भी कहा है कि भैक्षव शासन मेरे लिए प्रथम है। मैं दिन-रात उसके लिए समर्पित रहना चाहता हूं। मुझे सात्विक प्रसन्नता है कि हम अपनी मातृभूमि की ओर बढ़ रहे हैं। हमारी मेवाड़ यात्रा निष्पत्तिमूलक बने। मेवाड़ की जनता में धार्मिक और आध्यात्मिक उत्साह वृद्धिगत होता रहे। इस अवसर पर मुनि विश्रुतकुमार ने 'आचार्य महाश्रमण' कृति श्रीचरणों में उपहृत की। इस पुस्तक में आचार्य महाश्रमण के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है।

किशनगढ़ नगर परिषद की अध्यक्षा गुणमाला पाटनी ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए अभिनंदनपत्र का वाचन किया। नगर के गणमान्य लोगों ने अभिनंदन पत्र आचार्यवर को समर्पित किया। नीलम सिंघवी ने श्रद्धासिक्त गीत का संगान किया। अजमेर दरगाह के चिश्ती गुलाबनबी किबरिया ने पूज्यवर से अजमेर प्रवास के दौरान ख्वाजा साहब की दरगाह पर पधारने का भावपूर्ण अनुरोध किया। आचार्य महाश्रमण ने जिसे प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया।

अहिंसा यात्रा व्यवस्था दायित्व का हस्तान्तरण

राजलदेसर से किशनगढ़ तक यात्रा व्यवस्था का दायित्व आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति राजलदेसर ने जागरूकता के साथ निर्वहन किया। मार्ग सेवा व्यवस्थापक नवरतनमल बैद ने निष्ठापूर्वक व्यवस्थाओं का संचालन किया। नरेन्द्र बोथरा, हंसराज चोरड़िया एवं गजराज दूगड़ इस कार्य में उनके सहयोगी रहे। मार्ग सेवा का दायित्व लाडनूं, छोटी खाटू, बोरावड़, किशनगढ़ के श्रावक समाज ने भी निभाया।

आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति राजलदेसर के अध्यक्ष पन्नालाल बैद ने दायित्व संपन्नता एवं अक्षय तृतीया महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष बाबूलाल कच्छारा ने दायित्व ग्रहण के अवसर पर अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। पूज्य आचार्यवर से मंगलपाठ सुनकर पन्नालाल बैद एवं नवरतनमल बैद ने दायित्व के प्रतीक के रूप में जैन ध्वज बाबूलाल कच्छारा एवं सिसोदा प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक रमेश धाकड़ को सौंपा।

आचार्य महाश्रमण ने नवरतनमल बैद के संदर्भ में कहा नवरतनमल वृद्धावस्था में भी इतने दिनों तक यात्रा में साथ रहे हैं, बहुत सेवा की है। इस अवसर पर सैकड़ों व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

अणुव्रत संगोष्ठी

अपराह्न में आर. के. कम्युनिटी सेंटर में आयोजित अणुव्रत समिति के सदस्यों की संगोष्ठी में अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने स्वस्थ व्यक्ति और स्वस्थ समाज की संरचना के लिए नशामुक्ति एवं पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने का आह्वान किया।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने कहा महाव्रत और अणुव्रत दोनों व्यक्ति की क्षमता को बढ़ाते हैं। भगवान महावीर ने साधुओं के लिए महाव्रत और गृहस्थों के लिए अणुव्रत का विधान किया है। अणुव्रत अभियान को आगे बढ़ाने के लिए मीडिया का योगदान भी बहुत जरूरी है। अणुव्रत महासमिति और स्थानीय अणुव्रत समितियां अणुव्रत अभियान को गतिशील करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहें।

इस अवसर पर राजस्थान प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा, कृष्णचन्द टवाणी, प्रो. रामप्रसाद शर्मा, सुरेश जाखड़ एवं सपना भंडारी ने भी अपने विचार रखे।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

दक्षिण हावड़ा, 8 मार्च। साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में महिला मंडल दक्षिण हावड़ा द्वारा गंगेज गार्डन कम्यूनिटी हॉल में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। महिला मंडल ने नारी जागरण गीत का संगान किया।

साध्वी कनकश्री ने कहा नारी विश्व की महान शक्ति है। नारी शक्ति का संगठित और सुनियोजित उपयोग होता है तो वह परिवार, समाज और विश्व का नक्शा बदल सकती है। 'स्वाभितानी महिलाओं ने बढ़ाया देश का गौरव' विषय की विवेचना करते हुए साध्वीश्री ने उपस्थित बहनों को अपनी अस्मिता की सुरक्षा तथा देशहित में अपनी क्षमता और प्रतिभा के उपयोग की प्रेरणा दी। विश्व महिला दिवस पर टिप्पणी करते हुए साध्वीश्री ने कहा इस दिन की सार्थकता मात्र आयोजनों, रेलियों, शिविरों, सेमिनारों तक ही सीमित न रहें। इस पर महिलाएं आत्ममंथन करें। अपनी आंतरिक क्षमताओं को प्रस्फुटित करे। नया सोचें और नया करें। अपनी क्षमता, स्थिति और गति-प्रगति का सही-सही आकलन कर साहस के साथ आगे बढ़ें। आज महिलाओं के सोच में काफी परिवर्तन आया है। शिक्षित और समर्थ नारियां हर क्षेत्र में कामयाबी के परचम फहरा रही हैं। पर विकास की रोशनी आम महिलाओं तक पहुंचे तभी महिला दिवस की सार्थकता है।

अध्यात्म द्वारा सर्वांगीण विकास

नई दिल्ली, 16 मार्च। पूर्व केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री एवं सांसद डॉ. शशि थरूर ने कहा भारत की प्राचीन संस्कृति, ज्ञान एवं साहित्य इतना समृद्ध है कि उसे दुनिया में फैलाने की जरूरत है। हमारे यहाँ प्राचीन काल से अध्यात्म को ही शक्ति का केंद्र माना गया है। उसी शक्ति के बल को आचार्य महाश्रमण आगे बढ़ा रहे हैं। अध्यात्म ही जीवन के सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम है। ये विचार डॉ. शशि थरूर ने अपने निवास पर मुनि जयकुमार, मुनि सुधाकर एवं मुनि रोहितकुमार से विचार चर्चा करते हुए व्यक्त किए।

डॉ. शशि थरूर ने आचार्य महाप्रज्ञ एवं डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की संयुक्त कृति 'दी नेशन एवं दी फेमिली' तथा आचार्य महाश्रमण की कृति 'लाइफ लैट अस लर्न टू लिव' का लोकार्पण करते हुए कहा पाश्चात्य संस्कृति के अनुसार शारीरिक और भौतिक विकास ही मनुष्य का विकास है। वहाँ आत्मा के विकास का कोई स्थान नहीं है। भौतिक विकास के साथ-साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास होगा, तभी संतुलित विकास की अवधारणा मूर्त्त बनेगी। इस दृष्टि से आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण का चिंतन बहुत उपयोगी है।

डॉ. शशि थरूर ने आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा एवं आचार्य तुलसी जन्म शताब्दि वर्ष के कार्यक्रमों की जानकारी मिलने पर कहा कि भारत ही ऐसा राष्ट्र है जो दुनिया को शांति एवं अहिंसा का संदेश दे सकता है। इसका मूल कारण भारत की आध्यात्मिक परंपरा है। आचार्य महाश्रमण जैसे आध्यात्मिक संत पुरुष अहिंसा यात्रा के माध्यम से हमारा मार्ग दर्शन कर रहे हैं, हमें ऐसे ऋषि-मुनियों के उपदेशों को जीवन में उतारना होगा। डॉ. शशि थरूर ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष समारोह में सहभागी बनने की सहमति व्यक्त की। विदित हो यह शताब्दी वर्ष सन् 2014 में दिल्ली में आयोजित होगा। डॉ. थरूर को आचार्य महाश्रमण के जीवन परिचय से संबंधित पुस्तिका भी भेंट की गयी।

इस अवसर पर मुनि जयकुमार जो हाल ही में राजस्थान से पदयात्रा करते हुए दिल्ली पहुंचे है, ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण के अवदानों में सबसे बड़ा अवदान है धर्म को विज्ञान के साथ जोड़ना। उन्होंने धर्म को संकीर्णताओं से बाहर निकालकर प्रयोग और परीक्षण के माध्यम से तेजस्वी स्वरूप प्रदान किया है। दोनों लोकार्पित पुस्तकों में केवल समस्याओं की चर्चा ही नहीं है, बल्कि अध्यात्म के धरातल पर उनके समाधान भी प्रस्तुत किए गए हैं।

मुनि सुधाकर ने अहिंसा यात्रा की चर्चा करते हुए अहिंसा को संस्कृति की सुरक्षा एवं युगप्रवाह को निरंतर विकास की ओर अग्रसर करने का सशक्त माध्यम बताया। अणुव्रत महासमिति के प्रतिनिधि मुरली कांठेड एवं प्रचार मंत्री ललित गर्ग ने डॉ. थरूर को दिल्ली में मनाये जाने वाले आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह एवं अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं अहिंसा प्रशिक्षण के कार्यक्रमों की जानकारी दी। हीरालाल गेलडा भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

अणुव्रत समिति की बैठक

जयपुर, 12 फरवरी। अणुव्रत समिति जयपुर की बैठक अणुविभा जयपुर में आयोजित हुई। इसमें समिति द्वारा किए जा रहे क्षेत्रीय कार्यों की समीक्षा की गई। अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने हेतु चिन्तन किया गया। अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु योजनाबद्ध तरीके से कार्य किए जाने पर विचार विमर्श हुआ। इस हेतु अधिक से अधिक विद्यालयों में सम्पर्क करने का निर्णय लिया गया। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि महासमिति द्वारा भेजे गए पोस्टर तथा साहित्य का अधिक से अधिक उपयोग किया जाएगा।

सभी उपस्थित पदाधिकारियों ने समिति के संरक्षक पन्नालाल बांठिया के संलेखना-संथारा के पश्चात् देहावसान पर दो मिनट के मौन के पश्चात श्रद्धांजलि दी। समिति के परामर्शक जी.के. सिद्धा ने कहा पन्नालाल बांठिया बहुत सशक्त कार्यकर्ता थे। वे हमारे लिए एक प्रेरणा स्वरूप हैं। उनके स्वप्न को हम सभी मिल कर पूरा करने का प्रयास करेंगे। विद्यालयों आदि में अणुव्रत के प्रचार तथा जीवन-विज्ञान के शिविरों के माध्यम से कार्य करेंगे, ऐसा मैं विश्वास दिलाता हूँ। संगठन मंत्री कर्नल एन.के. शर्मा ने कहा मेरा उनसे सम्पर्क एक सैनिक के रूप में हुआ। वे स्पष्टवादी थे। आदेश की अनुपालना करने में कहीं कमी नहीं रखते थे। मैं स्वयं फौज में रहा हूँ और उन्हें भी अनुशासन में देख कर मुझे प्रसन्नता होती थी। हम सभी उनके कार्यों को पूरा करेंगे, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। संगठन मंत्री सरोज कोचर ने कहा बांठियाजी यथा नाम तथा गुण के धनी थे। कथनी व करनी में कहीं विषमता नहीं थी। महात्मा लोग मन, वचन, कर्म से एक होते हैं। उसी एकरूपता के कारण वे जीवन भर सक्रिय व संघर्षशील रहे। आज जरूरत है कि जिस रूप में वे कार्य कर रहे थे, उसे हम आगे बढ़ाएँगे। प्रचार-प्रसार मंत्री कल्पना जैन ने कहा अपनी मृत्यु का अहसास होते हुए भी उनके चेहरे पर जो सहजता थी, जो शांति व अन्तर्चेतना थी, वह गजब की थी, ऐसे महामना को नमन।

समिति की अध्यक्षा आशा नीलू टॉक ने कहा बांठियाजी ने डेढ़ साल पहले जो लिखा, मुझे बहुत ही अच्छा लगा। मैं भी प्रण करती हूँ कि ऐसा ही करूँगी। उन्होंने कुरीतियों को प्रश्रय नहीं दिया और अपनी मृत्यु के बाद भी सब कुछ जैन पद्धति से करने हेतु लिखा है। परिवार में प्रेम रखने के बारे में लिखा है। यह बहुत बड़ी बात है और आज इसकी बड़ी आवश्यकता है। कार्यक्रम का संचालन पुष्पा बांठिया ने किया।

अणुव्रत समिति द्वारा जनोपयोगी कार्य

सायरा, 1 मार्च। अणुव्रत स्थापना दिवस के अवसर पर मुनि प्रशांतकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत कार्यक्रम रखा गया। इसके अलावा अणुव्रत समिति सायरा के तत्वावधान में 'अणुव्रत सेवी' जसराज जैन के निर्देशन में सायरा क्षेत्र में जनोपयोगी कार्य किये जा रहे हैं। पूर्व में ग्रामीण विकास खेल मंत्री मांगीलाल गरासिया को सायरा ग्राम के विकास के अधूरे कार्य करने हेतु ज्ञापन दिया। समिति द्वारा क्षेत्र में नशामुक्ति अभियान का भी संचालन किया जा रहा है एवं अणुव्रत पाक्षिक के अधिक से अधिक सदस्य बनाये जा रहे हैं। समिति ने सायरा से सूरत गुजरात तक चलने वाली रोडवेज बस की साफ-सफाई एवं सुचारू सेवा एवं पुरानी खराब हो गयी बसों को हटाकर नई बसें चलवाने हेतु भी प्रशासन को ज्ञापन दिया। ताकि क्षेत्रवासियों को सुविधाजनक सेवाएं मिल सकें।

महिलाएं विकास के साथ संतुलन बनाएं रखें : डॉ. सिंघवी

नई दिल्ली, 8 मार्च। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर मुनि सुधाकर के सान्निध्य में महिला मंडल दिल्ली द्वारा महिला सशक्तिकरण पर आधारित नृत्य-नाटिका 'ऐलान एक आवाज - नया आगाज' का उद्घाटन फिक्की ऑडिटोरियम में दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

'स्ट्राँग वूमेन, स्ट्राँग वर्ल्ड' लक्ष्य के साथ निर्मित इस नृत्य नाटिका में कन्या भ्रूण हत्या को महापाप बताते हुए यह दिखाया गया कि किस प्रकार एक महिला अपनी कोख में पल रहे कन्या भ्रूण की सुरक्षा हेतु अपने पति और परिवार से विद्रोह कर देती है और महिलाओं के हक के लिए आवाज उठाते हुए ऐलान करती है।

मुनि सुधाकर ने कहा महिलाएं अगर समता, सह-अस्तित्व व समन्वय की साधना करे तो विकास की गति द्विगुणित हो जायेगी। सामंजस्य के अभाव में परिवार व रिश्ते टूट रहे हैं। परिवार व रिश्तों को बचाना है तो हमें संवेदनशील बनना होगा। संयम के सूत्र को अपनाना होगा।

मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने उद्घाटन वक्तव्य में कहा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को आज सौ वर्ष पूरे हो गये हैं। मगर एक आम महिला आज भी शोषण, उत्पीड़न और अत्याचार की शिकार है, इसे रोकना होगा। एक महिला को आत्मसम्मान के साथ जीने का अधिकार मिले इसके लिए एक क्रांति घटित करनी होगी।

उन्होंने महिला मंडल की सराहना करते हुए कहा मुझे गर्व है कि यहां महिला को पूरा सम्मान और स्वतंत्रता मिल रही है और यहीं से कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध पहली आवाज उठी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद एवं कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ॰ अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा जैन धर्म का इतिहास गौरवशाली रहा है। सर्वप्रथम भगवान आदिनाथ ने मानव जाति को असि, मसि, और कृषि का ज्ञान दिया। आज भी जैन समाज में साक्षर महिलाओं का प्रतिशत सर्वाधिक है। महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ी हैं और उन्होंने युगीन परिप्रेक्ष्य में अपने आपको ढाला है। महिला समाज को विकास के साथ-साथ संतुलन बनाये रखना होगा।

आज भी जैन समाज में साक्षर महिलाओं का प्रतिशत सर्वाधिक है। महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ी हैं और उन्होंने युगीन परिप्रेक्ष्य में अपने आप को ढाला है। महिला समाज को विकास के साथ-साथ संतुलन बनाये रखना होगा।

प्रमुख वक्ता भाजपा महिला मोर्चा की चेयरपर्सन और टीवी स्टार स्मृति ईरानी ने कहा आज बेटी न कोख में सुरक्षित है न सड़क पर। कन्याओं के प्रति समाज के रवैये को बदलना होगा। खुशी की बात है कि महिला मंडल इस दिशा में जागरूक है और विभिन्न माध्यमों से समाज में जागरूकता लायी जा रही है।

ग्रामीण विकास राज्यमंत्री प्रदीप जैन 'आदित्य' ने कहा आज अपेक्षा है कि हमारे देश की प्राचीन संस्कृति में महिलाओं को जो गौरव और सम्मान दिया गया है वही गौरव और सम्मान उन्हें पुनः मिले। महिला सृष्टि की निर्मात्री है व संस्कृति की संवाहक है। समारोह को मुनि सुधाकर ने भी सम्बोधित किया।

कार्यक्रम में सांसद एवं भाजपा प्रवक्ता डॉ॰ प्रकाश जावेडकर, अर्जुन मेघवाल सांसद, जी॰ एन॰ भट्ट संयुक्त निदेशक राजस्थान इन्फॉरमेशन सेंटर इत्यादि की प्रमुख उपस्थिति रही।

शिक्षक-शिक्षका संगोष्ठी

रामपुराफूल। साध्वी अमितप्रभा के जय तुलयी अणुव्रत विद्यालय रामपुराफूल (भटिण्डा-पंजाब) में पदार्पण पर शिक्षक-शिक्षिका संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कहा जय तुलसी अणुव्रत विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं नशामुक्त व तनावमुक्त जीवन जीएं, ताकि विद्यार्थियों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत कर सकें। ममता, समता और क्षमता की त्रिपुटी का नाम है नारी। उन्हें परिवार और विद्यालय में दोहरी जिम्मेवारी निभानी होती है। विद्यालय के चेयरमेन कमलेश, प्रबंधक सुमेरनाथ की उपस्थिति में साध्वीश्री ने विद्यार्थियों को महाप्राण ध्वनि एवं जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाते हुए तनावमुक्त जीवन जीने हेतु ज्योति केन्द्र पर सफेद रंग का ध्यान करवाया। संगोष्ठी में उपस्थित शिक्षिकाओं ने अपना परिचय देते हुए प्रतिदिन 10 निमट प्रेक्षाध्यान करने की बात कही। साध्वीश्री ने मुल्लापुर, सुधार, रायकोट, बरनाला इत्यादि क्षेत्रों का स्पर्श कर व्यसनमुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी।

महाराणा प्रताप रा.उ.मा.वि. में अणुव्रत सभागार एवं कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन

दिवेर। महाराणा प्रताप राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दिवेर में मुनि संजयकुमार व मुनि प्रसन्नकुमार के सान्निध्य में भामाशाह जुगराज नाहर एवं शान्तादेवी नाहर ने अणुव्रत प्रार्थना सभागार एवं कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. राकेश तेलंग ने की।

मुख्य अतिथि अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा आज से 430 वर्ष पूर्व इस धरती पर आजादी एवं मूल्यों को लेकर महाराणा प्रताप ने मुगलों के विरुद्ध युद्ध लड़ा था। उसी कुल के जुगराज नाहर द्वारा इस विद्यालय में जिस प्रयोगशाला का उद्घाटन किया गया, उससे युवा पीढ़ी नई तकनीक सीखेगी। डॉ. कर्णावट ने इस अवसर पर अणुव्रत आंदोलन की पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला।

विद्यालय के प्रधानाचार्य ओमप्रकाश यादव ने बताया कि इसमें एक साथ 25 कम्प्यूटर एल्यूमीनियम की पार्टीशन में लगेंगे। विशिष्ट अतिथि महाराणा प्रताप विजय स्मारक संस्थान के महामंत्री नारायणलाल उपाध्याय थे। जुगराज नाहर के अभिनंदन में उ.प्र.वि. पीपरलू के प्रधानाध्यापक रूपाराम ने अपने विचार रखे। किशन मेवाड़ा ने नवयुवक मंडल की ओर से 'माटी यह महाराणा की इठलाती है गौरव से आज...' गीत का संगान किया।

कार्यक्रम में हस्तीमल चंडालिया, भंवरलाल तातेड़, शोभालाल बाफना, महेन्द्र नाहर, डालचंद सोलंकी, भीम ब्लॉक के शिक्षा धिकारी मोहनलाल वर्मा, कालू सिंह, हरीश कुमार साल्वी, लाखूसिंह, पृथ्वी सिंह, प्रकाशचंद्र उपाध्याय, पंचायत सरपंच मीना चौहान, उप सरपंच नारायण सिंह, मोतीलाल सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक दुर्गाराम ने किया।

आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा के मेवाड़ पदार्पण पर इस विद्यालय को पूर्णतया अणुव्रतमय बनाया गया। अणुव्रत आचार संहिता के 11 नियम एवं अणुव्रत के उद्घोष अंकित किये गये। पंचसूत्रीय संकल्प पत्र भी अध्यापक हरीश ने भरवाये। अणुव्रत प्रार्थना सभागार एवं कम्प्यूटर लैब के उद्घाटन अवसर पर लगभग 1500 की उपस्थिति रही। डॉ. कर्णावट का शाल्यार्पण द्वारा सम्मान किया गया। विद्यालय की ओर से जुगराज नाहर एवं शान्ता नाहर का अभिनंदन किया गया।

www.terapanthinfo.com

क्षेत्रीय समन्वयक अपने दायित्व के प्रति सजग रहें

लाडनूं, 8 मार्च। किसी भी विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत क्षेत्रीय समन्वयकों का महत्वपूर्ण स्थान है। आप लोग अपने-अपने क्षेत्र में विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि होते हैं। आपके कार्य और विद्यार्थियों को आप द्वारा दिये जाने वाले सहयोग से ही विश्वविद्यालय की छवि बनती है अतः आपके कार्यों में पारदर्शिता आये, आपकी कार्यों के प्रति प्रतिबद्धता बढ़े, और आप लोग अपने दायित्व के प्रति सदैव सजग रहें तो विश्वविद्यालय की सौरभ फैलेगी। ये विचार जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित द्विदिवसीय कार्यशाला के समापन पर 8 मार्च को बोलते हुए कार्यक्रम की अध्यक्ष एवं विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा ने व्यक्त किये। उन्होंने सभी क्षेत्रीय समन्वयकों की मानद् सेवाओं की प्रशंसा करते हुए उन्हें और अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आप लोग अपने दायित्व को निभाते हुए मानवीय मूल्यों के प्रति सजग रहें।

निदेशक डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यशाला का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि इस दो दिवसीय कार्यशाला में कुल छः सत्र आयोजित हुए। जिसके अन्तर्गत प्रवेश से लेकर परीक्षा तक सभी गतिविधियों एवं व्यवस्थाओं का प्रशिक्षण समन्वयकों को दिया गया। कार्यशाला में इन्दौर, उज्जैन, रतलाम, अहमदाबाद, दिल्ली, जयपुर, नागौर जोधपुर, सरदारशहर, ऋषिकेश, श्रीनगर, डीडवाना, सांचौर, जालोर, अलवर, आदि स्थानों से 41 क्षेत्रीय समन्वयकों ने भाग लिया और दो दिनों तक मनोयोगपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त किये।

अहमदाबाद से आये शिक्षा अधिकारी टी.पी.पाण्डया ने अपने अनुभवों को विस्तार से बताते हुए विश्वविद्यालय के वातावरण को एक तपोभूमि बताया एवं इस प्रकार के कार्यक्रमों को निरन्तर आयोजित करने पर बल दिया। संयोजन डॉ. संजीव गुप्ता ने किया और आभार ज्ञापन डॉ. अशोक भास्कर ने किया।

7 मार्च को कार्यशाला का उद्धाटन करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय के जयपुर केन्द्र के निदेशक डॉ. एस.एन. अम्बेडकर ने कहा दूरस्थ शिक्षा में क्षेत्रीय समन्वयकों का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्हें समय-समय पर विश्वविद्यालय की गतिविधियों, प्रवृत्तियों, एवं आधुनिक तकनीकी को समझने के लिए इस प्रकार की कार्यशालाएं आवश्यक है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलसचिव प्रो. जे.पी.एन. मिश्रा ने कहा यह विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अपने उद्देश्यों को प्रसारित कर रहा है। ज्ञान का सार आचार है सूत्र वाक्य आचार के प्रति सदैव जागरूक रहने का संदेश देता है। हमारे समन्वयक इस सूत्र वाक्य को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों का हित करते रहें।

प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने कहा यहां का प्रत्येक समन्वयक मानद् सेवाएं दे रहा है। यह इस विश्वविद्यालय के लिए जहां शुभ संकेत हैं, वहीं क्षेत्रीय समन्वयकों के लिए यह चुनौती भी है कि वे अपने कर्त्तव्य को सही दिशा दें। क्षेत्रीय समन्वयकों का स्वयं का चरित्र विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में सहायक होगा। दूरस्थ शिक्षा निदेशक डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यशाला के स्वरूप एवं उद्देश्य पर प्रकाश डाला। संयोजन डॉ.संजीव गुप्ता ने किया।

पूर्व सत्रों में प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें एक साथ मिलकर शिक्षा का प्रसार करना है। प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने कहा कि हमें स्वयं अपने व्यक्तित्व को सशक्त बनाकर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण पर बल देना है। समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा ने कहा कि विश्व-विद्यालय की प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाने का कार्य समन्वयकों का है। कार्यशाला के विविध सत्रों में डॉ. समणी शुभप्रज्ञा, डॉ. संजीव गुप्ता, डॉ. अशोक भास्कर, जे.पी.सिंह, डॉ. हेमलता जोशी, प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार, राकेश कंकाणी, डॉ. बी.पी. गौड़, डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, रश्मिता राय, डॉ. अमित शर्मा, राकेश जैन, डॉ. समणी ऋजुप्रज्ञा, डॉ. समणी मल्लीप्रज्ञा, डॉ. बी. एल. जैन, आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

अणुव्रत संगोष्ठी

आमेट। अणुव्रत समिति आमेट एवं राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के तत्वावधान में मुनि संजयकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन हुआ। समिति के मंत्री चांदमल छाजेड़ ने कार्यक्रम की जानकारी दी। अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष सम्पत सामसुखा ने की। मनोहरलाल बापणा ने कार्यकर्ताओं को जागरूक रहने की प्रेरणा दी। धर्मचंद मुणोत, प्राचार्य ने कहा कि किसान वर्ग एवं अजैन वर्ग अणुव्रत से जुड़े ऐसा प्रयास हो। सम्पत सामसुखा ने कहा कि प्रत्येक सदस्य को अणुव्रत आचार संहिता के 11 नियम याद रखने हैं। क्योंकि नैतिक व्यक्ति ही हमेशा फलता-फूलता है। अणुव्रतों के कार्यक्रमों को केवल सभा भवनों से ही नहीं अपितु अन्य स्थानों से भी सुचारु रूप से संचालित करवायें।

मुनि प्रसन्नकुमार ने कहा 'बदले युग की धारा - अणुव्रतों के द्वारा'। कार्यकर्ताओं की अच्छी टीम बने तथा जन कल्याण के कार्य करें। अणुव्रत समिति आमेट के अध्यक्ष जगदीशचन्द्र जोशी ने अतिथियों का स्वागत किया। मुनि संजयकुमार ने कहा मानवीय मूल्यों के प्रति अपनी आस्था को जगाएं। मधु श्रीमाल ने मधुर गीत का संगान किया। महिला मंडल की मंत्री रेणु छाजेड़, चांदमल छाजेड़, महेन्द्र बोहरा, जवाहरमल डांगी, तनसुखलाल बोहरा एवं धर्मचंद खाब्या ने अपने विचार रखे।

कार्यक्रम में नगर पालिका उपचेयरमेन रतन सिंह राठौड़, राजा बाबू, मुनि प्रकाश एवं मुनि रविकुमार उपस्थित थे। संयोजन चांदमल छाजेड़ ने किया। इस अवसर पर साहित्य द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया।

www.terapanthinfo.com

राष्ट्र के प्रबुद्ध नेताओं द्वारा अहिंसा यात्रा का अनुमोदन

नई दिल्ली। अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार के निर्देशानुसार मुनि सुधाकर की राष्ट्रीय राजनेताओं से आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा पर परिचर्चा हुई। परिचर्चा में दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित, राज्यसभा में विपक्ष के नेता अरूण जेटली, राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष गिरिजा व्यास, कांग्रेस के प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी, भाजपा प्रवक्ता प्रकाश जावड़ेकर एवं ग्रामीण राज्य मंत्री प्रदीप जैन ने भाग लिया।

मुनि सुधाकर ने आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा की जानकारी देते हुए कहा अहिंसा यात्रा मात्र यात्रा नहीं बल्कि अहिंसक चेतना जागरण का महान उपक्रम है। गांव-गांव, कस्बे-कस्बे में अहिंसा, नशामुक्ति, आपसी सद्भाव आधारित संदर्भों के कार्यक्रमों से हजारों लोग प्रभावित होकर हिंसा, नशा व गुस्सा न करने के संकल्प ग्रहण करते हैं। आज चारों ओर से भ्रष्टाचार का शब्द सुनाई दे रहा है। आतंकवाद व नक्सलवाद से भी अधिक खतरनाक है भ्रष्टाचार। यह राष्ट्र के माथे पर कलंक ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिए भी खतरा है। इसका समाधान संयम एवं अणुव्रत जागरण से ही संभव है।

कानूनविद् व राज्यसभा में विपक्ष के नेता अरुण जेटली ने कहा हिंसा, आतंकवाद, नक्सलवाद का प्रतिरोध अहिंसा से ही हो सकता है। नैतिक चारित्रिक एवं मानवीय मूल्यों के अभ्युदय के लिए अणुव्रत जैसे आंदोलन की देश को ही नहीं अपितु विश्व को भी महत्ती जरूरत है। उन्होंने आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा के प्रति मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा कि इस यात्रा के माध्यम से मानवीय मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठापना होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने कहा अहिंसा का विकास करुणा, मैत्री व पारस्परिक प्रेम द्वारा ही संभव है। अहिंसा व प्रेम मानवता की कसौटी है। अपराध व हिंसा का मुख्य कारण असंयम है। अणुव्रत का दर्शन मुझे सदैव प्रभावित करता रहा है। आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा से जन-जन में अहिंसा का संदेश फैले व भारत को पुनः विश्व गुरु बनने का गौरव मिले।

गिरिजा व्यास ने कहा राष्ट्र के विकास के लिए नैतिक बल व चारित्रिक बल सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। आज देश को नैतिक दृष्टि से ताकतवर बनाना जरूरी है। यह कार्य साधु-संतों के द्वारा ही संभव है। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से नैतिक उन्नयन का महान कार्य हो रहा है। उन्होंने अहिंसा यात्रा को राष्ट्र हित में बताते हुए आचार्य महाश्रमण के शीघ्र ही दर्शन करने की बात कही।

कानूनविद् व कांग्रेस प्रवक्ता सांसद अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा नैतिक व चारित्रिक विकास के अभाव में आर्थिक विकास खतरनाक है। आर्थिक उन्नति तभी लाभकारी है जब नैतिक मूल्यों का विकास हो। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात कर नैतिकता व संयम के जो सूत्र दिये उन्हें जीवन में आत्मसात करने की जरूरत है। अहिंसा यात्रा के द्वारा जन-जन में अहिंसा मैत्री के दीप जलें यही भावना है।

भाजपा प्रवक्ता प्रकाश जावडेकर ने कहा अहिंसा ऐसा मार्ग है जिस पर चलकर संस्कृति, समाज व राष्ट्र की धरोहर को अक्षुण्ण रखा जा सकता है। आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा के माध्यम से अहिंसक शक्तियां और अधिक तेजस्वी बनकर उभरेंगी यही मंगलभावना व्यक्त करता हूं।

केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री प्रदीप जैन ने कहा अहिंसा परमो धर्मः भगवान महावीर का यह मुख्य उद्घोष है। अहिंसा ही शांति व खुशहाली का आधार है। आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा मानवता के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगी ऐसा मेरा विश्वास है।

उपस्थित राजनेताओं को आचार्यश्री व अणुव्रत का साहित्य भेंट किया गया। परिचर्चा में पदमचंद जैन, अनिल जैन, बाबूलाल गोलछा, शीतल बरड़िया उपस्थित थे।

कन्या भ्रूणहत्या अमानवीय कृत्य

हिसार, 27 फरवरी। अणुव्रत समिति हिसार के तत्वावधान में साध्वी भाग्यवती के सान्निध्य में सभा भवन कटला रामलीला हिसार में ''कन्या भ्रूणहत्या अमानवीय कृत्य'' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रो. देवेन्द्र कुमार जैन ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि हरियाणा प्रांतीय सभा के महामंत्री नंदकुमार जैन थे। मुख्य वक्ता ऊषा जैन, सतपाल शर्मा, नवीता जैन, विनोद जैन ने अपने विचार रखे।

साध्वी भाग्यवती ने कहा लोग भ्रूणहत्या अज्ञान के कारण करते/करवाते हैं। यह क्रूर कृत्य लोग लड़का पाने की चाह में करते हैं, जो कि मिथ्या धारणा है। यह जघन्य अपराध है, इसे रोका जाना चाहिए।

प्रो. देवेन्द्र कुमार जैन ने अध्यक्षीय भाषण में कहा हमारी यह गोष्ठी तभी सफल होगी यदि यहां उपस्थित सभी लोग अवसर आने पर स्वयं एवं अपने परिवार के सदस्यों द्वारा भ्रूणहत्या न करने/करवाने का संकल्प ग्रहण करें। अणुव्रत समिति हिसार के अध्यक्ष कुन्दनलाल गोयल ने सभी उपस्थित संभागियों का स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में लक्ष्मी सागर जैन, जे.के. जैन, राजेन्द्र अग्रवाल, राम प्रसाद सोनी, श्याम सुंदर जैन, नवीन जैन, अनिल जैन, रमेश वर्मा, जयश्री जैन एवं शशि जैन विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राजकुमार जैन ने किया।

जीवन विज्ञान परीक्षा

राजसमंद, 3 मार्च। अणुव्रत विश्व भारती राजसमंद व जिला शिक्षा अधिकारी राजसमंद के संयुक्त तत्वावधान में राजसमंद के चयनित विद्यालयों एवं अणुव्रत समिति सायरा के विशेष विद्यालयों में संचालित जीवन विज्ञान कार्यक्रम की परीक्षा का आयोजन किया गया। बालोदय निदेशक बालमुकुन्द सनाढ्य ने जानकारी देते हुए बताया कि जीवन विज्ञान परीक्षा का आयोजन 50 विद्यालयों के लिए किया गया। जिसमें कक्षा 3 से कक्षा 8 तक के 7000 बालक-बालिकाएं सम्मिलित हुए। परीक्षा में सम्मिलित सभी बालक-बालिकाओं को अणुविभा राजसमंद से प्रमाण-पत्र वितरित किये जायेंगे। राजसमंद क्षेत्र में जीवन विज्ञान परीक्षा का कार्यक्रम विगत 13 वर्षों से चलाया जा रहा है।

www.terapanthinfo.com

डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' का सम्मान

जयपुर, 27 फरवरी। अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' को शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्रों में दिये जा रहे उल्लेखनीय योगदान के लिए विवेकानंद सेवा संस्थान ने लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया है। जवाहर नगर के स्वामी विवेकानन्द केन्द्र में आयोजित एक समारोह में यह सम्मान उन्हें संस्थान के अध्यक्ष पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी आर.एन. अरविन्द ने प्रदान किया। समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान के मुख्य न्यायाधीश एवं पूर्व राज्यपाल न्यायमूर्ति नवरंग टिबरेवाल ने डॉ. 'कुसुम' का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। आर.एन. अरविन्द ने डॉ. 'कुसुम' के सम्मान में प्रशस्ति-पत्र का वाचन करते हुए उनके असाधारण शिक्षकीय गुणों एवं साहित्यिक अवदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अवार्ड के तहत राशि 11 हजार रु. उन्हें भेंट की गयी। इस अवसर पर डॉ. 'कुसुम' की अंग्रेजी एवं हिन्दी में लिखी सद्यः प्रकाशित 8 पुस्तकों का भी लोकार्पण हुआ। समारोह की अध्यक्षता डॉ. मनोहर प्रभाकर ने की। डॉ. हरिराम आचार्य, वेद व्यास, देवर्षि कलानाथ शास्त्री एवं चंपालाल रांका विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सभी विशिष्ट अतिथियों ने अपने विचार रखे। आयोजन समन्वयक कृष्णवीर द्रोण ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। अपने सम्मान के संदर्भ में डॉ. 'कुसुम' ने समागत अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया एवं अपनी एक कविता का वाचन किया। समारोह के संयोजक स्वामी विवेकानंद केन्द्र के महामंत्री तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य किशन मित्तल ने सभी अतिथियों के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन शोभा चन्दर ने किया।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

शेरपुर, 8 मार्च। अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा संचालित अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर के तत्वावधान में रोजगार प्रशिक्षण केन्द्र धनौरीकलां में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। शुरुआत अणुव्रत गीत के संगान से हुई। नेहरू युवा केन्द्र संगरूर के जिला युवा समन्वयक बी.के. बहल के नेतृत्व में जम्मू एवं कश्मीर राज्य से 20 युवक-युवतियां शांति का पैगाम लेकर आये हुए प्रतिनिधियों को अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर के निदेशक संजय भाई ने अणुव्रत आंदोलन की विस्तार से जानकारी दी।

देशभक्त यूथ क्लब के निदेशक स. परमजीत सिंह टिबाना ने महिलाओं को प्रेरित करते हुए कहा नारी शक्ति को मजबूत बनाये बिना कन्या भ्रूणहत्या, अशिक्षा, दहेज प्रथा एवं नशा जैसी जटिल समस्याओं को खत्म करना संभव नहीं है। इस अवसर पर पंचायत सदस्य मालन बेगम, रोजगार ट्रेनर सुखविन्द्र कौर, पवनदीप कौर, संदीप कौर, गुरप्रीत कौर एवं राजरानी ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के संदर्भ में अपने विचार रखे। जम्मू एवं कश्मीर से आये हुए प्रतिनिधियों को अहिंसा प्रशिक्षण संबंधित साहित्य भेंट कर अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में महिला मंडल, स्थानीय सभा एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लेकर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। संजय भाई ने कार्यक्रम की सफलता हेतु ग्राम पंचायत एवं नेहरू युवा केन्द्र संगरूर के प्रति आभार व्यक्त किया।

नशा सर्वनाश का द्वार है

फतेहपुर शेखावटी, 23 फरवरी। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र फतेहपुर शेखावटी द्वारा सेठ जयदेव चण्डी प्रसाद जालान आदर्श विद्या मंदिर में ''नशामुक्ति संकल्प अभियान समारोह'' का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि उपखण्ड अधिकारी फतेह मोहम्मद खां ने कहा जीवन में प्रगति के लिए नशा सबसे बड़ा बाधक है। नशा सर्वनाश का द्वार है। नशे से सभी को बचना चाहिए। नशीले पदार्थों के सेवन के साथ मौत को करीब लाने वाले भला आधुनिक कैसे हो सकते हैं? समाज में नशामुक्ति अभियान एक लोकव्यापी कार्यक्रम है। उन्होंने विद्यार्थियों को नशा नहीं करने का संकल्प करवाया। इस अवसर पर उपस्थित लगभग 400 भाइयों ने नशा न करने का संकल्प लिया।

अहिंसा बाल वाहिनी के संयोजक अतुल बुबना ने कहा युवाओं को नशे से बचना चाहिए। अध्यक्षता करते हुए युवा साहित्यकार एस.डी. जोइया ने कहा हमारे सभी धर्मों में नशे के त्याग की बात कही गयी है। विद्यार्थी अच्छे कार्यों की तरफ अपना ध्यान लगायें। नशीले पदार्थों का सेवन करने वाला व्यक्ति कभी अपने जीवन में प्रगति नहीं कर सकता। विद्यालय के प्रधानाचार्य रामकृष्ण पारीक ने आभार व्यक्त करते हुए कहा जिस राष्ट्र के बालक व्यसन व फैशन में लिप्त हो वह राष्ट्र कभी आगे नहीं बढ़ सकता। संचालन करते हुए अहिंसा प्रशिक्षक सतीश शांडिल्य ने कहा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण द्वारा इंगित व्यसनमुक्ति अभियान संकल्प शक्ति व एक-दूसरे के प्रति अनुकम्पा का विकास करने वाला मानव कल्याणकारी उपक्रम है। अतिथियों को ''यात्रा एक अकिंचन की'' पुस्तक भेंट कर सम्मान किया गया। अणुव्रत के प्रमुख घोष 'संयम ही जीवन है' तथा नशे का जो हुआ शिकार - उसका उजड़ा घर परिवार' के उदघोष से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर

अहमदाबाद, 5 मार्च। समणी विनीतप्रज्ञा के सान्निध्य में युवक परिषद अहमदाबाद द्वारा प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा में जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इसमें गुजरात के 10 सरकारी स्कूलों के लगभग 2000 विद्यार्थियों एवं 50 शिक्षकों ने भाग लिया।

समणी विनीतप्रज्ञा ने कहा जीवन विज्ञान जीने की कला है। शिक्षा जगत में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु सैद्धांतिक और प्रायोगिक प्रशिक्षण का अनूठा अवदान है जीवन विज्ञान। यह वर्तमान की मांग तथा चारित्रिक उत्थान का महान उपक्रम है। बच्चों के सुंदर भविष्य के निर्माण का दायित्व शिक्षकों के कंधों पर है। अध्यापक विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ चारित्रिक विकास पर भी ध्यान दें। समणी मंजुलप्रज्ञा, समणी जगतप्रज्ञा एवं समणी समताप्रज्ञा ने विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण दिया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्राथमिक जिला शिक्षा अधिकारी के.के. राठोड़, लेखक राजीव भालानी, मुकेश गुगलिया, कोबा केन्द्र की प्राचार्या रमिला बहन पटेल, प्रेक्षा विश्व भारती के अध्यक्ष बाबूलाल सेखाणी, पुखराज मदानी, नानालाल कोठारी, गजेन्द्र भंडारी तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार रखे। संचालन अनिल कोठारी ने एवं आभार ज्ञापन दिनेश बूरड़ ने किया।

भिवानी में सर्वधर्म सम्मेलन

भिवानी, 4 मार्च। समाज व राष्ट्र की उन्नति के लिए साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाने के लिए नगर के अनेक सम्प्रदाय प्रमुखों ने सभा भवन में एक मंच से प्रेम और भाईचारे का पैगाम दिया। मुनि विनयकुमार आलोक की प्रेरणा और प्रयास से सम्मेलन में अनेक संतों ने धर्म के नाम पर फैल रहे भ्रम को मिटाने के उपायों पर चर्चा की। मुनि धर्मचंद पीयूष के सान्निध्य में आयोजित सम्मेलन में बड़ी संख्या में भाई-बहन उपस्थित थे।

मुनि धर्मचंद पीयूष ने कहा जो व्यवहार हम अपने से नहीं चाहते वह दूसरे से न करें यही धर्म है। स्थानकवासी समाज के संत सुभद्र मुनि ने कहा जिस प्रकार रोटी-कपड़ा और मकान जैसी समस्याओं का समाधान करना राजनेताओं का कर्त्तव्य है, उसी प्रकार व्यक्ति की मानसिक समस्याओं का समाधान संत महात्मा करते हैं। इसी सम्प्रदाय के ओजस्वी संत कमल मुनि कमलेश ने सामाजिक ताने-बाने पर कड़ी टिप्पणियां की। मुनि विनयकुमार 'आलोक' ने सर्वधर्म सम्मेलन की आवश्यकता पर व्याख्यान दिया। हम सबकी पूजा-पद्धतियां बेशक अलग हैं लेकिन धर्म हमारा एक है और वह है मानव धर्म।

इस अवसर पर राधास्वामी संप्रदाय के गुरु कंवरसेन महाराज, मुस्लिम समाज के हामिद अख्तर, जैन मुनि आश्रम की प्रभारी डॉ. ऊषा जैन, मुनि जयकुमार, संत निरंकारी मंडल के प्रमुख बलदेव राज नागपाल, जोगीवाला मंदिर के महंत वेदनाथ, ब्रह्मकुमारी बहन वीणा, अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा, सुरेन्द्र जैन 'एडवोकेट' ने अपने उपयोगी विचार रखे।

कार्यक्रम में मुनि संभव कुमार, मुनि अभयकुमार, मुनि रश्मिकुमार, मुनि रोहितकुमार, मुनि मुदितकुमार, मुनि नरेशकुमार, मुनि लब्धिकुमार, दिल्ली से समागत बाबूलाल गोलछा, शीतल बरड़िया एवं एल.आर. भारती के अलावा निरंजन लाल वैद, प्रेमलता जैन, माणिकचंद नाहटा, रमेश बंसल, विकास जैन, सुभाष जैन, भरत सोलंकी, सारिका जैन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन मधु जैन ने किया। सभी धर्म सम्प्रदाय के प्रतिनिधियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

जीवन विज्ञान सेमिनार

इरोड़, 27 फरवरी। जीवन विज्ञान अकादमी इरोड़ के तत्वावधान में जीवन विज्ञान सेमिनार का आयोजन हुआ। इसमें क्षेत्र की 60 शिक्षण संस्थाओं के ट्रस्टीगण, व्यवस्थापक, शिक्षकगण एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर उपस्थित संभागियों को अकादमी द्वारा जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम की सम्पूर्ण जानकारी दी गयी। इससे पूर्व इरोड़ की प्रमुख शिक्षण संस्था द इंडियन पब्लिक स्कूल में जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें लगभग 700 विद्यार्थियों एवं 30 शिक्षकों की सहभागिता रही। प्रारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। अध्यक्ष रमेश पटावरी ने आगंतुकों का स्वागत किया। प्रशिक्षक के रूप में चेन्नई से पधारे राकेश खटेड़ ने जीवन विज्ञान की विस्तार से जानकारी दी। जीवन विज्ञान के 12 बिन्दुओं को पॉवर पाइन्ट द्वारा दिखाकर समझाया गया। सभी उपस्थित प्राचार्यों ने जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम को अपने स्कूलों में लागू करवाने की बात कही। हीरालाल चोपड़ा ने अतिथियों का सम्मान किया। संचालन अविता बाबेल ने किया।

अणुव्रत स्थापना दिवस

सूरत, 1 मार्च। राष्ट्र संत आचार्य तुलसी ने मानवीय मूल्यों के संवर्धन के लिए 1 मार्च 1949 को अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत स्थापना दिवस का कार्यक्रम मुनि प्रशांतकुमार एवं मुनि कुमुदकुमार के सान्निध्य में मनाया गया। मुख्य अतिथि सूरत जिला कलेक्टर ए.जे. शाह थे।

अणुव्रत समिति सूरत के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में मुनि प्रशांतकुमार ने कहा भारत देश विविध धर्मों की उद्भव भूमि है। परन्तु मात्र धार्मिक स्थानों की भक्ति से, पूजा करना मात्र पर्याप्त नहीं है। अणुव्रत धर्म को जीवन व्यवहार में उतारने वाला आंदोलन है। यहां सम्प्रदायवाद और जातिवाद का कोई स्थान नहीं है। अणुव्रत इंसानियत और चारित्रिक विकास का उपक्रम है।

मुनि कुमुदकुमार ने कहा अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से आचार्य तुलसी ने अनेक जनव्यापी कार्य किये। अगर व्यक्ति में नैतिकता और प्रामाणिकता का विकास हो जाए तो समाज और देश का स्वतः विकास होगा।

जिला कलेक्टर ए.जे. शाह ने कहा अणुव्रत कहता है कि मानव मानवीय भाव को धारण करे। मनुष्य, मनुष्य से प्रेम करे और सभी से भाईचारे की भावना का विकास हो। इस अवसर पर कांतिभाई मेहता, अणुव्रत प्रचेता अलका बेन, गणेश नान्द्रेचा ने अपने विचार रखे। संचालन अणुव्रत समिति सूरत के मंत्री अर्जुनलाल मेड़तवाल ने किया। कार्यक्रम में सुवालाल बोल्या, 'अणुव्रत सेवी' जसराज जैन, मीठालाल भोगर उपस्थित थे।

पशु चिकित्सा शिविर

उदयपुर, 6 मार्च। अणुव्रत समिति उदयपुर, एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज उमरड़ा एवं पशु पालन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 176 पशुओं की चिकित्सा की गयी। समिति के प्रचार मंत्री राजेन्द्र सेन ने शिविर की जानकारी दी। पशुओं के लिए निःशुल्क दवाइयां पशुपालन विभाग एवं एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज के संस्थापक मनमोहन राज सिंघवी के सौजन्य से उपलब्ध करवायी।

मुख्य अतिथि उदयपुर के सांसद रघुवीर सिंह मीणा ने कहा पशु पालकों को पशुओं के प्रति सचेत रहते हुए समय पर ईलाज करवाना चाहिए। साथ ही उनके रख-रखाव एवं पोष्टिक आहार पर भी ध्यान देना चाहिए।

अणुव्रत समिति उदयपुर के अध्यक्ष गणेश डागलिया ने सभी का स्वागत करते हुए कहा समिति द्वारा पशुओं के स्वास्थ्य के प्रति पशुपालकों को सचेत करने के उद्देश्य से स्थान-स्थान पर इस तरह के शिविर लगाकर ग्रामीणों को लाभ पहुंचाया जा रहा है।

पशुपालन विभाग के उपनिदेशक डॉ. योगेश जोशी ने कहा शिविर में पशुओं को लाने ले जाने के लिए बांझपन के विरुद्ध बड़े पैमाने पर पशुपालकों को धन उपलब्ध करवाया गया।

शिविर में पशुपालन विभाग के विशेषज्ञ डॉ. भूपेन्द्र भारद्वाज, डॉ. सुरेन्द्र छंगाणी, डॉ. शरद अरोड़ा, डॉ. हंस कुमार जैन की टीम ने अपनी सेवाएं दी। शिविर में अणुव्रत समिति के मंत्री डॉ. निर्मल कुणावत, मनमोहन राज सिंघवी, सुबोध कोठारी, अरविन्द चित्तौड़ा, राजेन्द्र सेन, राकेश चित्तौड़ा, अशोक राठोड़, भंवरलाल गोड़, कमल कुणावत ने सेवाएं दी।

www.terapanthinfo.com